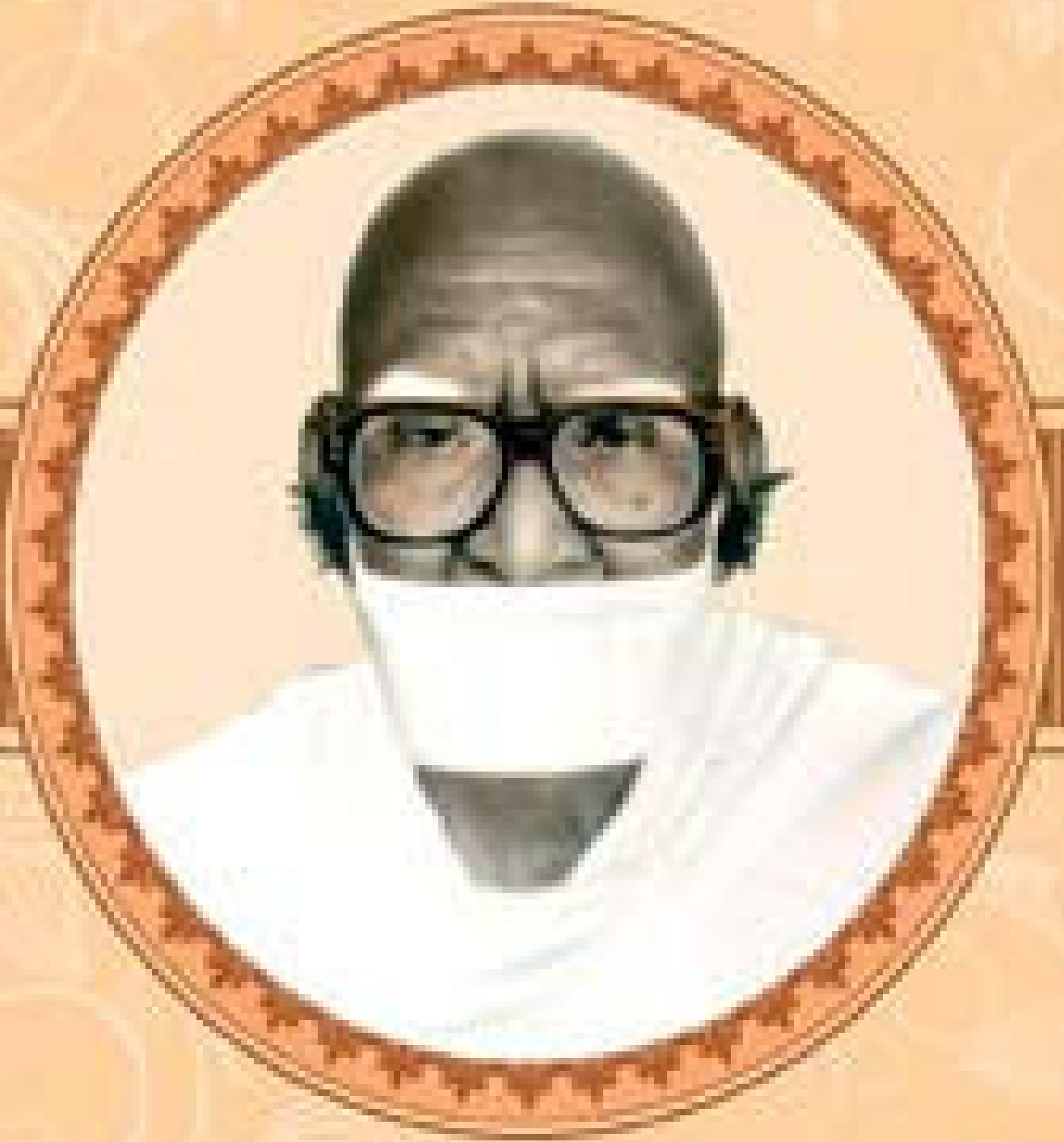


“मान से मानव मित्र”

(मुनिश्री मानव मित्र जी का जीवनवृत्त)



‘‘मान से मानव मित्र’’

(मुनिश्री मानव मित्र जी का जीवनवृत्त)

साध्वी मधुस्मिता

प्रकाशक :

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं-341306

जिला : नागौर (राज.)

फोन नं. : (01581) 226080, 224671

ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

**Books are available online at
<http://books.jvbharati.org>**

© जैन विश्व भारती, लाडनूं

प्रथम संस्करण : जनवरी 2017

मूल्य : सत्तर रुपये मात्र

मुद्रक : पायोराईट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर

MAN SE MANAV MITRA By Sadhavi Madhusmita

₹ 70/-

अहंम्

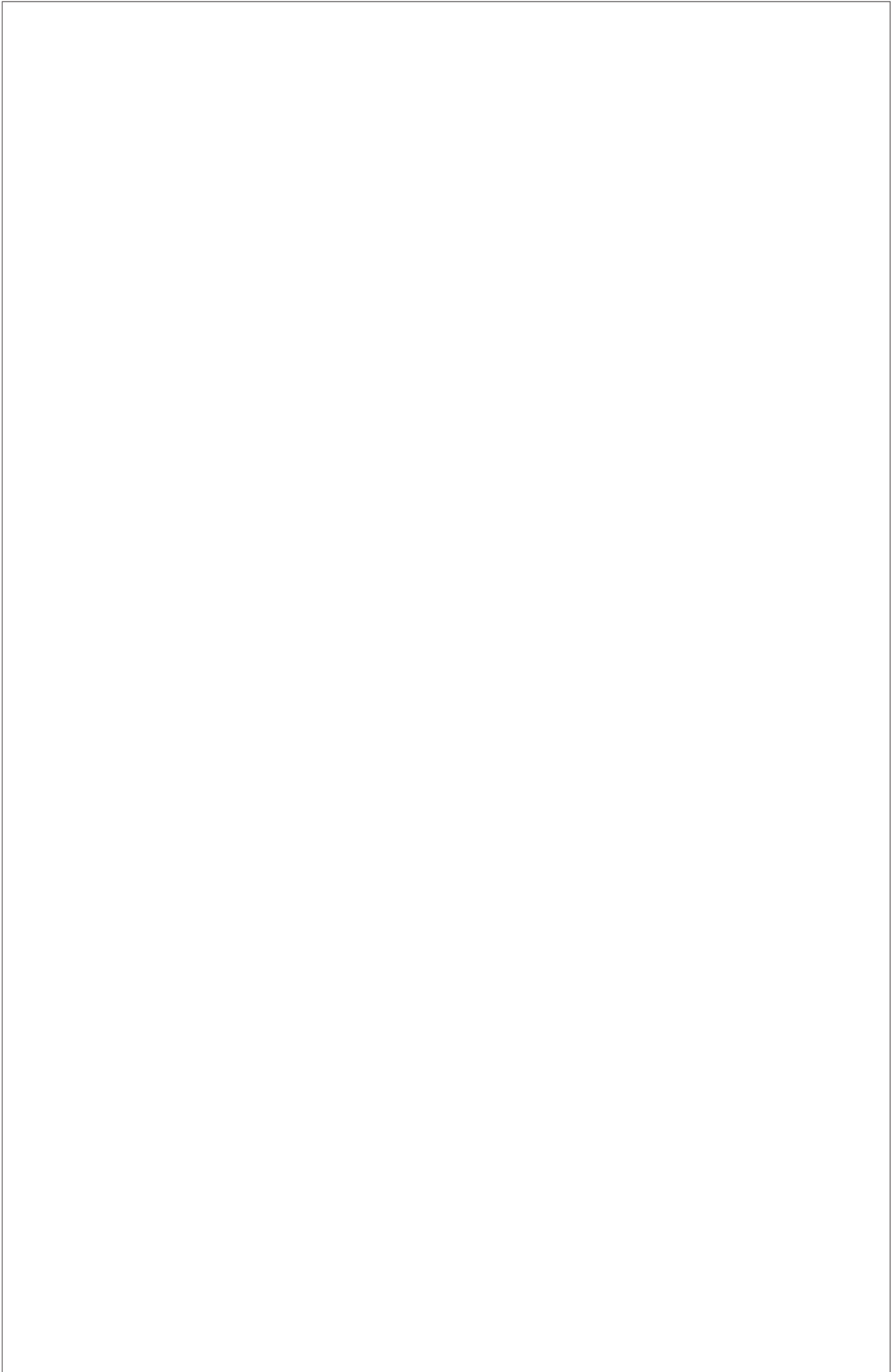
जन्म लेना एक सामान्य बात है। कलापूर्ण जीवन जीना विशेष बात होती है। जो आदमी संयम और परोपकार से युक्त जीवन जीता है, वह स्वयं धन्य बन जाता है।

मुनि मानवमित्रजी ने जीवन के संध्याकाल से साधुजीवन स्वीकार किया। वे उससे पहले अनुभवी श्रावक के रूप में भी रहे। मैं जब बालक था, तब उनके संपर्क में रहा था। बाद में वे समण बन गए थे और समणों के मुखिया भी बना दिए गए थे। ऐसा मुझे स्मरण है। उनकी वैराग्य भावना भी प्रशस्त प्रतीत हुई। वे विभिन्न राग-रागिनियों के जानकर भी थे। पद्य-गद्य से युक्त उनके जीवनवृत्त से पाठकों को सत्प्रेरणा प्राप्त हो, साध्वी मधुस्मिताजी द्वारा इस संदर्भ में किया गया श्रम और अधिक सार्थक हो, शुभाशंसा।

उमलिंग (मेघालय)

02 दिसम्बर 2016

आचार्य महाश्रमण



अहम्

स्वकथ्य

एक संस्कृत कवि ने लिखा 'स जातो येन जातेन याति वंश समुन्नतिम्।' उसी का जन्म लेना सार्थक होता है जिसके द्वारा कुल, जाति, समाज और देश किसी प्रकार की उन्नत दशा को प्राप्त हो। जो अपनी शक्ति, बुद्धि सम्पत्ति, तपस्या, रचना तथा साधना के द्वारा परिवार, समाज, और देश को समृद्ध बनाता है, उसका जीवन सफल होता है। मुनिश्री मानवमित्र जी का सम्पूर्ण जीवन इसी कोटि का सफल जीवन था। उनके प्रेरक जीवन को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। 1— गृहस्थ, 2— मुनि।

जीवन की पूर्व अवस्था में एक आदर्श श्रावक के रूप में उनकी पहचान बनी। उनका वर्ण श्याम था किन्तु आचार उज्ज्वल था। पारिवारिक प्रेम, व्रतों का वैभव, तत्त्वज्ञान की रोशनी, सेवाभावना का अमृत, प्रचार—प्रसार की कला, तपस्या का तेज तथा साथ—साथ में पूर्व जन्म की पुण्याई ने उनको इस गौरवास्पद पद पर प्रतिष्ठित किया।

'सुश्रावक श्री मानमल जी आंचलिया के जीवन को उस परोपकारी पेड़ से उपमित किया जा सकता है जिसकी शीतल छाया का सुख न केवल सगे सम्बन्धी परिजनों को मिला अपितु समाज व संघ के अनेक सदस्य उससे लाभान्वित हुए। श्रमणोपासक श्री मानमल जी का जीवन ऐसा महकता गुलदस्ता था जिसके त्याग वैराग्य की सौरभ, प्रामाणिकता की पराग, सेवा की सुन्दरता और सजगता की प्रफुल्लता ने जन—जन के मन को आकृष्ट किया। वे एक विशिष्ट कलाकार थे। अपनी कला प्रवणता से अनेक व्यक्तियों के कलात्मक जीवन जीने और बहुत से साधकों के कलात्मक समाधिमरण में योगभूत बने। गम्भीरता धृति और सबके प्रति समदृष्टि ये ऐसे गुण हैं जो व्यक्ति को कामयाब बनाते हैं। अपनी इन विरल विशेषताओं के कारण उपासक, मानमल जी आचार्य श्री तुलसी के विश्वासपात्र बने। गुरुदृष्टि की आराधना कर उन्होंने असंभव को भी संभव कर दिखाया। उनकी श्रद्धाशीलता, आत्मार्थिता, सहिष्णुता एवं प्रशस्त विवेकशीलता को देखकर परमपूज्य गुरुदेव श्री तुलसी ने कहा— "इनमें श्रावकोचित गुण हैं। ऐसे व्यक्ति को

जब मैं देखता हूँ तो आगम की यह गाथा याद आ जाती है— “संति एगेहिं भिक्खूहिं गारत्था संजमोत्तरा” कुछ गृहस्थ ऐसे होते हैं जो संयम में साधुओं से भी उत्कृष्ट होते हैं मानवमित्र जी इसके उदाहरण हैं। गुणी के गुणों का वर्णन करना भी निर्जरा का हेतु है। साधुओं को भी इनके जीवन से प्रेरणा लेने की अनेक बातें मिल सकती हैं।

मैं मानती हूँ सर्वातिशायी तेजस्वी आचार्यश्री तुलसी की अमित वात्सल्यमयी नजरें उन पर टिकी। वे धन्य-धन्य हो गये। अनन्त उपकारी गुरुदेव ने स्वेच्छा से उनको समण श्रेणी में दीक्षित किया और दीक्षा स्थल पर ही उनको समण नियोजक बनाकर एक नये इतिहास का सृजन किया। जीवन की प्रौढ़ अवस्था में संघनिष्ठ, सेवाभावी, तपस्वी, निर्जरार्थी संत के रूप में वे सर्वप्रिय बने। हालांकि बचपन में प्रव्रजित न हो पाने का अफसोस उनको अवश्य रहा किन्तु सत्तर वर्ष की उम्र में भी न केवल वे स्वावलम्बी रहे, तपस्या सेवा सुश्रूषा आदि कार्यों में निरंतर समुद्यत रहे। उनका पुरुषार्थ प्रदीप कदम-कदम पर आलोक बिखेरता रहा।

आगम का एक वाक्य— ‘जे छेए से सागारियं न सेवए’ जो कुशल है वह मैथुन सेवन नहीं करता। इसका रहस्य समझकर वे बाल ब्रह्मचारी रहे। इतना ही नहीं उनका मन इतना निर्मल बन गया कि जिन्दगी में कभी शादी करने का स्वप्न भी नहीं आया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने अपने एक संदेश में लिखा— “मुनि मानवमित्र जी! तुम्हारी शुद्ध नीति और वैराग्य भाव मन को आकृष्ट करने वाला है।” धन्य होते हैं वे संत जो गुरु के पावन मन मन्दिर में अपना उत्तम स्थान बनाते हैं।

डॉ. राधाकृष्णन ने कहा— ‘जब कभी अपने हृदय को प्रफुल्लित करना चाहो तो अपने निकटवर्ती या परिचित के शुभ गुणों को चित्त में लाओ।’ मैंने मुनि श्री की डायरी में देखा— अपनी संसार पक्षीय माता मोहर देवी जिनको पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी ने दृढ़धर्मिणी अलंकरण प्रदान किया था, उनकी संयमनिष्ठा, श्रमनिष्ठा, जागरुकता, विवेकशीलता, मृदुभाषिता, गुणग्राहकता, उदारता को स्मृति में लाकर पुनः पुनः गुणोत्कीर्तन किया है।

गुणग्राहकता महान बनने की सर्वोच्च प्रक्रिया है। मुनि श्री में प्रमोद भावना का प्रकर्ष था, इसलिए वे मुनिप्रवर बने। जो साधक सिंहवृत्ति से अभिनिष्क्रमण कर उसी वृत्ति से साधना करता है—

स्वाध्याय, ध्यान, तपस्या पूर्वक जीवन बिताता है और अन्त में समाधिमरण का वरण करता है वह उत्थित जीवन का निदर्शन बन जाता है। मुनिश्री मानवमित्र जी ने इसी पथ के पथिक बनकर आराधक पद पाया।

देवलोक गमन के बाद आचार्यश्री महाश्रमण जी ने कहा—
“मुनि मानवमित्र जी की संघीय दृष्टि सामान्य नहीं, विशिष्ट थी।”

मुनिश्री के मूल्यवान जीवन प्रसंगों और अनुभवों का खजाना मैंने बीदासर मर्यादा महोत्सव के अवसर पर मुनिश्री के मुख से खुलवाना चाहा किन्तु सफलता नहीं मिली। जगराओं चतुर्मास के पश्चात् परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने महती अनुकम्पा कर लाडनूं में मुनिश्री की उपासना का दुर्लभ अवसर प्रदान करवाया। हम गुरुदेव की इस अनुग्रह वृष्टि को प्राप्त कर निहाल हो गई। मेरी भावना का सम्मान करते हुए एक दिन मेरी सहोदरी अनुजा साध्वी स्वस्थ प्रभाजी ने मुझे एक उपाय बताया। उन्होंने कहा आप प्रश्न पूछ-पूछ कर मामाजी महाराज से कुछ सामग्री प्राप्त कर लो। मैंने मुनिश्री के सामने जिज्ञासाएं की। मेरी यह अभिलाषा थी—

उजाला अपनी यादों का हमारे साथ रहने दो।

न जाने किस कदम पर जिन्दगी की शाम हो जाए।।

निस्पृहता के साथ मुनिश्री ने कहा— ‘क्या करना है? मेरे बारे में कुछ नहीं लिखना है, न प्रकाशन करवाना है। मैंने निवेदन किया ‘यह बात आगे की है। मुझे तो आपके बारे में जानकारी होनी चाहिए।’ प्रश्नों के उत्तर पाकर मुझे कुछ संतुष्टि मिली। इस संदर्भ में मैं साध्वी स्वस्थप्रभाजी को उपायज्ञ मानती हूं। वे इसी प्रकार सही समय पर सही सुझाव देकर मेरा सहयोग करती रहें। भाईश्री गणेशमल जी, उमेशचंदजी आंचलिया के द्वारा कुछ सामग्री उपलब्ध करवाई गई। उनकी बलवती भावना रही कि इस कृति के प्रकाशन का सौभाग्य हमें प्राप्त हो। लाडनूं पावस प्रवास में परमपूज्य आचार्यवर ने स्वर्गीय मुनिश्री की सभी डायरियां कृपा कर मुझे प्रदान की। इन स्रोतों से उपलब्ध जानकारी को ग्रहण कर मुनिश्री के जीवनवृत्त को मैंने पद्यों के धागे में पिरोने का लघु प्रयास किया।

परमपूज्य गुरुदेव श्री महाश्रमण जी की निर्मलता, तेजस्विता और पराक्रमशीलता का प्रकाश प्राप्त कर मैं आध्यात्मिक उपलब्धियां हासिल करती रहूं, यह मेरी भावना है।

श्रद्धेया महाश्रमणी जी का आशीर्वाद बरसाता वरदहस्त सदा मेरे सिर पर टिका रहा है। उनका महनीय मार्गदर्शन मेरी भीतरी शक्तियों को जागृत करता है। उनके द्वारा समय-समय पर प्रदत्त संदेश मेरे अंतःकरण में नई ऊर्जा का संचार करते हैं। मेरे नम्र निवेदन पर मातृ हृदया ने नायक के अनुरूप कृति का नामकरण प्रदान कर मुझे निश्चिन्त कर दिया। यह मेरा सौभाग्य है।

बैजामिन फ्रैंकलिन ने लिखा— यदि मरकर भी अमर रहना है तो या तो पठन योग्य लेखन किया जाए अथवा अन्यो द्वारा लिखने योग्य कर्म किया जाए। मुनिश्री मानवमित्र जी दूसरी कसौटी पर खरे उतर कर अमर बन गये। श्रद्धेया शासन गौरव साध्वी श्री राजीमतीजी ने मेरे छोटे से निवेदन पर इस कृति की महत्त्वपूर्ण भूमिका लिखकर मुझे बहुमूल्य उपहार प्रदान किया और साथ ही उस सच्चे संत की संतता को उजागर कर पाठकों के लिए प्रेरणा पीयूष प्रवाहित किया है। साध्वीश्री की वत्सलता से मैं अभिभूत हूँ।

‘साहित्य समिति’ ने स्वल्प समय में जीवनवृत्त का निरीक्षण कर इसे सफल और सुन्दर प्रस्तुति बताते हुए धन्यवाद देकर मेरा उत्साह बढ़ाया है। एतदर्थ मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

साध्वी सहजयशाजी ने सम्पूर्ण निष्ठा के साथ इस कृति की सुन्दर प्रतिलिपि कर मेरा अनन्य सहयोग किया और अपने सुन्दर अक्षरों को सार्थक बनाया। मेरी सहवर्तिनी छाओं साध्वियों का आत्मीय सहकार मुझे सदा उपलब्ध है यह मैं पूज्य गुरुदेव की महर नजर का सुपरिणाम मानती हूँ।

आदरास्पद मुनिश्री सुमतिकुमारजी ने पुस्तक के प्रूफ निरीक्षण आदि कार्य में अत्यन्त तत्परता के साथ समय नियोजन कर निष्ठापूर्ण श्रम किया है, एतदर्थ मुनिप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

इचलकरंजी तेयुप के उपाध्यक्ष श्री दिनेशजी छाजेड़ का पुस्तक प्रकाशन से पूर्व किए जाने वाले कार्य में सराहनीय श्रम एवं समय प्रबन्धन रहा।

सबके प्रति प्रमोद भावना प्रकट करते हुए प्रसन्नता.....

धारवाड़

3 फरवरी 2016

साध्वी मधुस्मिता

भूमिका

संतों की दुनिया साधारण लोगों से अलग होती है। क्योंकि वे अपनी पसंद का जीवन जीते हैं। किसी दूसरे की पसंद का नहीं अर्थात् वे भगवान की पसंद का जीवन जीते हैं।

संतों की श्रेष्ठता सरलता पर आधारित होती है।

संतों का श्रृंगार होता है सादगी, संयम।

संतों के चित्त में कभी बुढ़ापा नहीं जागता।

संत अमीर होते हैं क्योंकि वे सब मौसम में एक समान खुशी का अनुभव करते हैं।

संतों के पास जो चीज है, वह किसी के पास नहीं होती।

एक फरिश्ता स्वर्ग से धरती पर आया। उसे आदेश मिला कि वापिस आते समय धरती की बहुमूल्य वस्तु लेते आना। वह जाते समय संतों की चरण धूलि ले गया। उसे देख सभी देव मुदित हुए, क्योंकि वह स्वर्ग में कभी उपलब्ध नहीं होती।

संत और सोना इन दोनों को सजाने की जरूरत नहीं होती। क्यों कि वे दोनों औरों को सजाते हैं। सोना बाहर से सजाता है और संत भीतर से। ऐसे ही संत थे मानवमित्र जी। मान से मानवमित्र बने। जब तक अहंकार रहता है तब तक कोई भी व्यक्ति मानवमित्र नहीं बन सकता।

कहावत है, मीठी रोटी को किधर से भी खाओ वह मीठी ही होती है। यही बात एक सच्चे अच्छे संत के लिए है। मुनिश्री मानवमित्र जी इन सभी तुलाओं पर खरे उतरते हैं।

गुरुदेव श्री तुलसी के शब्दों में—

जो कष्टों का स्वागत करता है, वह संत होता है।

एक प्रश्न आया कि इस दुनिया में स्वतंत्र कौन है? उत्तर दिया गया कि संत स्वतंत्र है। क्योंकि संयम सबसे बड़ी स्वतंत्रता है। अनासक्ति के साथ ही व्यक्ति स्वतंत्र होता है।

मानवमित्र जी ने किसी को संभव है रूप तो नहीं दिया होगा परन्तु स्वरूप पहचान की कला अनेक लोगों को दी।

मैंन लाडनूं विश्वभारती में एक बार आपके दर्शन किये। बातचीत के दौरान मैंने आपसे आग्रह किया कि आप अपनी तपस्या के आंकड़े मुझे दिरायें ताकि “भारतीय समाज में” एक लेख बनाकर उसका उपयोग किया जा सके। आपने कहा— “क्या ऐसा करने से तपस्या का प्रभाव कम नहीं हो जायेगा?” इस वाक्य को सुनकर मुझे लगा कि संत इसीलिए शांत होता है, वह अनासक्त होता है। आसक्त को कुछ न कुछ चाहिए, अनासक्त को कुछ नहीं। मानवमित्र जी के पास कई बल थे— मनोबल, तपोबल, सेवाबल, कृपाबल, धृतिबल, कृतिबल, ज्ञानबल, रागिनीबल आदि।

मुनिश्री जीवन के ‘पहले पड़ाव पर कैसे थे?’, यह जिज्ञासा समाधान मांगती है। पहले पड़ाव पर वे एक असली श्रावक थे। असली से मेरा मतलब है—

1. वे त्यागी—व्रती श्रावक थे।
2. वे तपस्वी श्रावक थे।
3. वे तत्त्वज्ञ श्रावक थे।
4. वे प्रामाणिक श्रावक थे।
5. वे प्रचारक श्रावक थे।
6. वे संघसेवी श्रावक थे।
7. वे सेवाभावी श्रावक थे।
8. वे समाजसेवी श्रावक थे।

सुश्रावक श्रीमानमलजी ने संभव है पूर्व जन्म में बहुत पुण्यों का अर्जन किया था, फलतः उन्हें—

- . परिवार में पर्याप्त सम्मान मिला।
- . बालब्रह्मचारी रहे।
- . आचार्यों की शुभ दृष्टि पाई।
- . समाज की प्रियता मिली।
- . साधु—संतों की रास्ते की सेवा का शुभ सुयोग मिलता रहा।
- . बुढ़ापे में (70) संयम रत्न मिला।

आंचलिया जाति का अपना उजला इतिहास है। वह समृद्धि और प्रसिद्धि दोनों दृष्टियों से प्रभावी रहा है। संयम साधना और संघ

सेवा इन दोनों दृष्टियों से इस जाति के वंश के लोगों ने अपना गौरवपूर्ण स्थान बनाया है। मैं श्रावक वर्ग का उल्लेख नहीं करके वर्तमान के विशिष्ट मुनिप्रवरों का नामोल्लेख कर रही हूँ। ये तीनों मुनि घोर तपस्वी तो नहीं कहलाये परन्तु “बड़े तपस्वी” अवश्य कहलाये हैं।

1. मुनिश्री सुमतिचंद जी
2. मुनिश्री मोहविजय जी तथा
3. मुनिश्री मानवमित्र जी।

साध्वी श्री मधुस्मिता जी और स्वस्थप्रभाजी ये दोनों आपकी भाणेज साधवियां हैं। जो मामा मानवमित्रजी के शिक्षा वाक्यों का अनुसरण करती हुई तप संयम की साधना में उत्तरोत्तर विकास कर रही है।

मुनिश्री के विषय में बहुत कुछ लिखा जा सकता है और मधुस्मिता जी के द्वारा बहुत लिखा जा चुका है। इस जीवनी को पढ़ते समय हर एक सोचेगा कि कैसा अच्छा तपस्वी एवं परिश्रमी संत था। बिना परिश्रम न कोई व्यक्ति परिवार, समाज, संघप्रिय बनता है और न कोई निर्जरार्थी। मुनिश्री दोनों विशेषताओं के धनी थे। शीघ्रातिशीघ्र उनकी आत्मा परमात्मा की ओर बढ़े, इसी मंगलकामना के साथ।

6 जनवरी, 2016 बुधवार

साध्वी राजीमती
नोखा

तर्जः नैतिकता की

जन्म—

मानवमित्र मुनि की जीवन गाथा सरस सुहाई, प्रवर प्रेरणादायी ।
मातुलमुनि की जीवन पोथी पढ़ कलियां विकसाई,
नहि जावै विसरायी ।।

1

रत्न प्रसूता पावन भू सरदारशहर मन भावन
तप अरु सेवा री सौरभ स्यूं सुरभित इण रो कण—कण
बरसां तक आ तेरापंथ री रजधानी कहलायी ।।

2

उन्नीसौ इक्यासी माहवदि चवदश जनम लियो है
पूरणचन्द जी आंचलिया घर जगमग जग्यो दियो है
पूज्यपिता धनराज सेठ माता मोहर मुसकाई ।।

3

वैराग्य—

शुभ संस्कार दिया बडियाजी लगन धर्म री लागी
विरघां जी सतियां रै पावस मानूं बण्यो विरागी
सहवर्ती साध्वी मानांजी सोई शक्ति जगायी ।।

4

जावद रा कुन्दन मुनिवर वैराग्य भाव विकसायो
पांच बरस तक विविध विषय में दृढ़ संयम अपणायो
रात्रि शयन संतां रै स्थल, जीवन में नव अरुणाई ।।

5

आज्ञा मिली न पूज्य पिता स्यूं दीक्षा लेवण खातिर
शादी करणी चाही पण 'मानूं' दे दीन्यो उत्तर
दीक्षा में अवरोध बणी फिर शारीरिक कठिनाई ।।

6

आजीवन शादी नहीं करणी सचित उदक परिहार्यो
गुरु तुलसी रै श्रीमुख रात्रि चौविहार व्रत धार्यो
कर्या पांच की साल त्याग संकल्प शक्ति अजमायी ।।

7

परिवार—

सोहनजी शुभकरण और नगराज तीन बड़ भ्राता
झमकू निजरी केसर ज्येष्ठा भगिनी त्रय मन भाता
बहिनां भायां में सप्तम श्री मानमल्ल सुखदायी ।।

8

लघु भ्राता बछराज केवली बैन एक लाडेसर
च्यारूं बैनां रो सहयोग करणहित रहता तत्पर
छोटी बैन केवली री राखी संभाल सदाई ।।

9

च्यारूं भाई मान घणेरों मानमल्ल नै देता
बात मानता सब विषयां में परामर्श भी लेता
बारै ताण हुई बेटा बेट्यां री ब्याव सगाई ।।

10

भाणेजा—भाणेज्यां—दोहित्या सब रा काम संवार्या
सामाजिक सेवा में रस, तन मन अर्पण कर डार्या
गांव दूलरासर जा प्रतिदिन धर्मशाल चिणवाई ।।

11

संघीय सेवा—

अणुव्रती बण मास्टर रामचन्द्रजी साथै जाकर
हिसार स्यूं दिल्ली तक क्षेत्र संभाल्या दृष्टि पाकर
कठै किती कांई तैयारी ब्योरेवार बताई ।।

12

दो हजार सात रो पावस हांसी में करवायो
साध्वी राजमतीजी रो दीक्षोत्सव बठै मनायो
अपरिमेय विश्वास सुगुरु रो इण में फर्क न राई ।।

13

घर—घर जाकर तपस्या लिखता श्रम रो दीप जलाता
जैन तत्त्व विद्या शिक्षण हित छात्रां नै समझाता
निःस्वार्थी बण—गण समाज री कीन्ही सदा भलाई ।।

14

साधू सतियां री अनुपस्थिति में व्याख्यान सुणाता
लोग सैंकड़ां सुणणै खातिर बड़ै चाव स्यूं आता
'बांटी विद्या बड़ै' उक्ति चरितार्थ हुई सहज्यांई ।।

15

पथ उपासना—

साधु सत्यां सरदारशहर में जद कद भी पधराता
मानमल्ल जी अगवाणी में जाता अरु पहुंचाता
इक—इक मंजिल सब री सेवा श्रावक ड्यूटी निभाई ।।

16

पुण्यधरा सरदारशहर में विराजता मंत्रीश्वर
जंवरीमल जी स्वामी ब्यार कर्यो चुरु रै खातिर
मानमल्लजी चल्या साथ दो दिन उपासना तांई ।।

17

जेठ मास रो तपै तावड़ो लूआं चलै भयंकर
चुरु या सरदारशहर स्यूं हुया न कोई हाजर
स्वयं बण्या सहराही संतां नै साता पहुंचाई ।।

18

चालत—चालत गांव खारिया तक पहुंच्या मुनिवर जी
पीवण मीठो जल न मिल्यो अब घूम रह्या धृतिधर जी
कुंडां में किलबिलै लटां पाणी री अति संकड़ाई ।।

19

आखिर एक घड़ो जल आंचलिया जी नै मिल पायो
प्रासुक बणा भावनापूर्वक संतां नै बहरायो
च्यार संत खुद पूरै दिन जल सार्यो आ अधिकाई ।।

20

दूजै दिन ही चवदश इण दिन करता बास सदाई
एक रुपय्यै में घी ल्याया बाटी दाल बणाई
प्रमुदित मन स्यूं खाद्य वस्तु बा संतां नै बहराई ।।

21

चवदश रै दिन संतां नै चुरु सानन्द पुगाया
सुणकर मंगलपाठ बटै स्यूं चढ़ गाड़ी घर आया
आ पथ सेवा बां संता स्यूं कदे न जाय भुलाई ।।

22

सहवर्ती मुनि बच्छराजजी बहुत बार फरमाता
उण दिन तो थे हा जद ही म्हैं जीवित रहग्या भ्राता
हुयो बचाव भयंकर लू स्यूं नींद भले कम आई ।।

23

असंभव भी संभव बना गुरु दृष्टि आराधन से—
गुरु दृष्टि में सुख सृष्टि है ओ विश्वास शुभंकर
दृढ़ आस्था गुरु वचनां में रख करता काम कठिनतर
बण्यो असंभव भी संभव जद गुरुवर नजर टिकाई ।।

24

संवत् दो हजार बारै रो मोच्छव कर गुरुवर जी
चल्या भीलवाडै स्युं पधरावण सरदारशहर जी
इक भाई दर्शन कर अरजकारी है चिन्तादायी ।।

25

सुण्यो निवेदन उण भाई रो श्री तुलसी गणिवर जी
याद किया झट मानमल्ल नै हुया तुरत हाजर जी
'सती सोहनां जी' रै पागलपन री स्थिति समझाई ।।

26

चिन्ता जनक सुणी गुरुवाणी झट जावण मन कीन्हो
बद्धांजलि दृष्टि अरु आशय समझण में चित्त दीन्हो
'थानै सत्यां भुला देसी' आ वचन पंक्ति फरमाई ।।

27

तन मन धन स्युं सेवा करणी लक्ष्य पवित्र बणायो
रेल बठै ना जावै बस में चढ़णो अति दुखदायो
सतरह मील चल्या पैदल जद टे सण दी दीखाई ।।

28

अण जाण्यै मारग पर नौ घंटा तक चल्या निरंतर
लम्बी सफर करी तय एक बजे पहुंचा अति थककर
पछै 'लांबिया' गाड़ी पर चढ़ मंजिल निकट बुलाई ।।

29

गया ठिकाणै सतियां रै चरणा में कीन्हो वन्दन
गुरुवर रो फरमान सुणण हित सबरै मन आकर्षण
पूछ्यो सत्यां मानमल जी ने उत्सुकता दरसाई ।।

30

तपसण साध्वी श्री पन्ना जी, कुनणाजी, केसरजी
लगभग तीस सत्यां सेवा में सेवाभाव प्रखर जी
निज्जरटिठए बण ब्यावच री कल्पलता पसराई ।।

31

कर्यो निवेदन मानमल्लजी सतिवर! महर कराओ
सती सोहनांजी री स्थिति अब मनै आप समझाओ
ना खावै ना सोवै म्हां सगलां री नीन्द उड़ाई ॥

32

अंट-संट बोलै है दिनभर कपड़ा फाड़, गिराया
हुयो विचित्र उपद्रव सगलां नै अँ भ्रान्त बनाया
कियां संभालां आनै बोलो म्हारी मति चकराई ॥

33

सुणी बात आ मानमल्लजी सादर सविनय बोल्या
आंरी संयम निष्ठा तोलो वचन रतन स्युं तोल्या
साधपणै में गहरो रस पिस्तांजी तान मिलाई ॥

34

ऊंडी आप विचारो सतिवर! संयम सिरी उबारो
गुरुवाणी रो अर्थ समझकर आंरी नैया तारो
तप स्युं मिटै उपद्रव झट भीतर री हुवै सफाई ॥

35

तीन दिनां स्युं कुछ ना खायो तो अब धीरज धारो
में चरणा रो दास आपरो म्हारी ओर निहारो
गुरु वचनां पर अटल आस्था नई रोशनी ल्याई ॥

36

गुरुवर कांई फरमायो श्रावकजी! शब्द उचारो
म्हां सगलां रै दिल में नूतन प्राणशक्ति संचारो
'थानै सत्यां भुला देसी' गुरुवाणी नै दोहराई ॥

37

जीवित साधवी संतां नै कद म्हानै आप भुलावो
गुरु वचनां री रेंस समझकर नूई भोर उगावो
सोत्साही सब सतियां तब सहयोग दियो हुलसाई ॥

38

देख देख पागलपन बांरो सतियां हिम्मत हारी
मानमल्लजी रह्या अडिग गुरु आणा इंगितधारी
खान पान तज सती सोहनां दस दिन रात धुलाई ॥

39

गुरुवर रो निर्देश स्पष्ट जब क्यूं थे ढील करो हो
के औ साधपणो पालैला क्यूं ना फील करो हो
श्रावक हो नाराज, मानमलजी नै डांट पिलाई ॥

40

छट्ठे गुणठाणै री लम्बी चौड़ी सीमा भायां
संयम रा पर्याय असंख्याता सबनै समझाया
मानमल्लजी कुटिल कर्म री फल-परिणति बतलाई ॥

41

शान्त हुया सब लोग सुणी जद सूक्ष्म करम री बातां
ई हालत में बीत गया है कई दिवस अरू रातां
हुयो शमन जद पागलपन रो करी घणी नरमाई ॥

42

संथारो पचखायो सतियां पुलकित होगी काया
तीजै दिन टूटी मूर्च्छा नहीं खावण हित उमगाया
तन की ममता तोड़ी साहस री झण्डी फहराई ॥

43

वर्धमान परिणामां में दिन तीन चल्यो संथारो
तार जुड्यो चेतन स्यूं बारो देखण जिसो नजारो
अंतिम यात्रा ठाटबाट स्यूं बाजी यश शहनाई ॥

44

कार्यसिद्ध कर 'वडु' ग्राम जा चरणां शीश टिकायो
हंसती आंख्यां तुलसी गणिवर आशीर्वाद दिरायो
दूरदर्शिता स्यूं गुरुवर विजय श्री वरण कराई ॥

45

अन्तरंग कार्या हित गुरुवर जठै कठै भिजवाता
इंगितज्ञ बण बठै पहुंच नरमाई स्यूं समझाता
स्वीकृत करता संत सत्यां विस्मयकारी पटुताई ॥

46

अनशन में सहयोग—

पांच जणा नै अपणै मुख स्यूं संथारा पचखाया
दियो पचासां नै सहयोग—संभाल्या और सुणाया
कइयां री करड़ी सेवा कर नावडली तैराई ॥

47

पनालाल जी चौरडिया रै कैसर री बीमारी
घोर तपस्वी जी अनशन पचखायो हिम्मतधारी
कर अग्लान भाव स्यूं सेवा रातां खूब बिताई ।।

48

जैचनलालजी भंसाली रो प्रण जद स्हामै आयो
बागोरी नथमल जी स्वामी संथारो पचखायो
दिन पचहत्तर बांरी ब्यावच कर, की खरी कमाई ।।

49

पदयात्रा—

शहर कानपुर स्यूं कलकत्तै सहयात्री बण राजी
एक इंच ना करी सवारी पैदल सेवा साझी
धुन का पक्का कर्मठ मानव दिखलाई दृढ़ताई

50

सौ. सौ बायां ने दक्षिण तक संघ बणा ले ज्याता
तुलसी गुरुवर री उपासना रो शुभ लाभ दिराता
पर उपकार परायण बणकर श्रम री ज्योत जलाई ।।

51

नान्हा—नान्हा बालकियां नै बोध दियो हितकारी
सश्रम साधपणो लेवण री करवाता तैयारी
पुण्यपुंज मोहन री दीक्षा बणी संघ वरदायी ।।

52

मगन भाण जी री दीक्षा में सब दायित्व संभाल्यो
घणै हरख स्यूं नानेरै में बरनोलो नीकाल्यो
हुई गोचरी, पा.शि.संस्था नै घर नूत जिमाई

53

लोचकला—

त्याग हजामत रा कीन्हा सूराणा हरखचन्द जी
मस्तक मुख रो लोच कराता विकसित दिल अरविन्द जी
आजीवन बांरो लूंचन कर दिखलाई चतुराई ।।

54

गुलाबचंद जी स्वामी दीक्षा लेतां लोच करायो
मिश्रीमलजी सूराणा नै बांरो हाथ सुहायो
घरगिस्थी में इचरज कारी लोचकला सुघड़ाई ।।

55

अभय साधना रो सुझाव सति राजमतीजी दीन्हों
एकाकी मरघट में जाकर पौषध में रस लीन्हों
संवत् दो हजार इकतालिस में आ विधि अपणाई ।।

56

मां की सेवा—

सुदृढ़ धर्मिणी स्वाभिमानीनी मोहरा देवी माजी
वृद्धावस्था में बांरी सेवा तन मन स्यूं साझी
इकतालीसै दूज जेठ बिद माजी स्वर्ग सिधायी

57

ओच्छव मोच्छव कर माजी रा पहुंच्या सुगुरुचरण में
कर्यो निवेदन अब के करणो? आयो सुखद शरण में
इंगित पाकर बण्या उपासक महरवानगी पाई

58

उपासक अवस्था में उल्लेखनीय कार्य—

पांच वर्ष तक पा.शि. संस्था में निज सेवा दीन्ही
गुरु तुलसी री दृष्टि प्राप्त संरक्षक पदवी लीन्ही
स्वर्ण कसौटी पर निखर्यो आभा शतगुणी बढ़ाई ।।

59

बीस मुमुक्षु बालकियां नै आप दियो संरक्षण
समण वर्ग री रंगी पातर्यां करी सिलाई खुशमन
नीडम रा साधक भायां री सेवा की मनचायी ।

60

घणो मधुर व्यवहार आपरो राजी हुयो विदेशी
मीठी यादां जीवनभर उणरै दिमाग में रेसी
जापानी जनुमुरा दोस्त री चिट्ठी साख भराई ।।

61

चन्द और रामायण री जो देस्यां अती पुराणी
चन्दन की चुटकी री राग रागिन्या सरस सुहाणी
संस्था री बायां, समण्यां, सतियां नै आप धराई ।।

62

लिख्या ग्रन्थ शासन समुद्र रा नोरतनमलजी स्वामी
करता जांच मानमल जी कोइ निकल जावंती खामी
हंसकर मुनिवर कहता निकलै कंकर गेंहुआ मांयी ।।

63

गुरु दृष्टि पा पजूषणा में अमुक क्षेत्र में जाता
श्रमणोपासक जी सुन्दर शैली में तत्त्व बताता
प्रमुदित मन स्युं खूब प्रशंसा करता लोग लुगाई ।।

64

गुरु तुलसी री आज्ञा ले पथ उपासना में आता
प्रायः हर बरसै पावस खेतर में चल पहुंचाता
चौविहार एकान्तर तप इचरज कारी सेंटाई ।।

65

मैं पूछ्यो इक दिन विहार में थेलो ले क्युं चालो?
नहीं खाणो पीणो मारग में फेर वजन क्युं घालो?
'भार उठावण रो अभ्यास रखूं' आ रेंस जणाई ।।

66

प्रबल भाव स्युं दान सुपातर देकर हर्षित होता
अति उनोदरी पर पाछो तप, उजला मोती बोता
कल्पाकल्प विधी रा ज्ञाता ओरां नै सिखलाई ।।

67

महासती चन्दनबाला री रचो पद्यमय कहाणी
जम्बू स्वामी री चरचा में ल्यो रागां पूराणी
मनै चाहिजै अै रचनावां प्रेरित कर सरजाई

68

पैसे का त्याग और कसौटी—

हाथ लगाऊं नहीं नोट रै एक बरस प्रण कीन्हों
हुई कसौटी पण मनडै नै मेरुसमकर लीन्हों
घणो मिल्यो आनन्द, साधना री सौरभ महकाई

69

संस्था स्युं गंगापुर जाणै रो जद अवसर आयो
इक भाई नजदीक क्षेत्र तक गाड़ी स्युं पहुंचायो
टिकट व्यवस्था हुई न दुविधा खड़ी अरे मुंह बायी

70

स्थानकवासी हो इस घर जा बठै बात बतलाई
हुयो नहीं विश्वास उणां नै करदी साफ मनाई
कठिन परिस्थिति री घड़िया में चलित न हुया जराई

71

चल्या बटोही बण निज बींटो थेलो ले खांधै पर
दस कि.मी. चलणै पर मिलियो तेरापंथी परिकर
अवगति पा खुशमन बै गंगापुर री टिकट कटाई

72

पछै बण्या 'अणुव्रत यात्रा' में संभागी प्रमुदित मन
'मेवाड़ी सब क्षेत्रां में' समणी जी देता भाषण
मानमल्ल जी गीत सुणाकर गण गरिमा गुंजाई

73

क्षमा की सरिता में अवगाहन—

समभावां में रमण कर्या स्यूं मिलै मोक्ष री मंजिल
पण प्रतिकूल परिस्थिति आयां सहणो है अति मुश्किल
घटी एक घटना विचित्र जद् शान्त सुधा बरसाई

74

उज्जैनी रा श्रावक जी रै साथै यात्रा कीन्ही
चढ्या रेल में भीड़, अत्यधिक संकड़ाई सह लीन्ही
बीं डिब्बे में ओड जाति रा लोगां री मुकलाई ।।

75

अपणी सीट प्राप्तकर बैठ्या मानमल्ल जी उण पर
छोटी आयु री इक महिला करण दुष्टता तत्पर
करै देह रो स्पर्श कभी खींचै सिर केश कणाई ।।

76

पछै मानमल जी रै सिर पर अपणो पूत बिठायो
उठो उठो कह एक आदमी हल्लो खूब मचायो
चलती गाड़ी स्यूं पटकुंला यूं कह धाक जमाई

77

कर्यो स्थान संकोच शान्तचित्त आगमवचन विचार्यो
बाल सरीखो बणूं न मैं तो मन समता रस धार्यो
मैं म्हारी जाग्यां पर बैठयो क्यूं बोलै रीसाई ।।

78

चलती गाड़ी में बो ही नर नीचै गिरयो अचानक
साथै सारा ओड उतरग्या मिलकर करता रकझक
मानमल्ल जी रो समान भी लैग्या कर जबराई ।।

79

तो भी क्रोध कर्यो नहीं बिल्कुल बैट्या आंख मूंदकर
ऊं अ भी रा शि को तपसी संतां रो जप श्रेयस्कर
तन्मयता स्युं कीन्हो, सारी उलझन नै सुलझाई ।।

80

जद पहुंच्या गुरुकुल में संतां नै वृतान्त सुणायो
संता रै मुख सुणकर गुरुवर—मन इचरज नहीं मायो
'मानव—मित्र' दियो संबोधन सार्थक ख्यात रचाई ।।

81

स्वास्थ्य समस्या जटिल जटिलतम संतां रै जद आई
पूज्यप्रवर व्यावर स्युं भेज्या समाधान रै ताई
थानै उचित लगै ज्युं करज्यो नहीं शंका उभराई ।।

82

गया आतमा गांव सलाह डॉक्टर नै सरवरी दीन्ही
समाधान कर्ता बण संतां री परिचर्या कीन्ही
राजनगर री मंजिल साधन चालक बण कटवाई ।।

83

समण—दीक्षा—

भाईजी म्हाराज—चौकियै एक दिवस पधराता
दर्शन करज्यो! श्री गुरुवर फरमायो पाछा आतां
कर्यो पारणो पहुंच्या चरणां गर्दन जार झुकाई ।।

84

समण श्रेणी में दीक्षा लेल्यो काई अटकै बोलो
श्री तुलसी फरमायो मानव मित्र! भावना तोलो
'त्याग विलीन करुं नहीं म्हांरा' दूजी अड़चन नाई ।।

85

इच्छा रै अनुरूप करीज्यो श्री मुख स्युं फरमायो
दसमी नै ले लेस्युं दीक्षा चरणां शीश टिकायो
गया शहर सरदार, ज्येष्ठ भ्राता री अनुमति चाही ।।

86

सुणी बात बड़भ्राता पण उण समय नहीं स्वीकारी
चैत्र माह में पूज्य पधारै बो मोको मनहारी
पछै अरज कर अग्रज प्रमुदित, गुरु किरपा अतिशायी ।।

87

जन्मभूमि सरदारशहर में मघवशताब्दी अवसर
समणश्रेणि में दीक्षा रो आदेश दिरायो विभुवर
बरसां रो संजोयो सपनो अब बणसी फलदायी ।।

88

मोच्छव रै दिन मधुस्मिता रो चौमासो फरमायो
कर्यो अनुग्रह साथ रखा कर दीक्षोत्सव दिखलायो
पछै 'गुलाबी नगरी' पावस री आज्ञा बगसाई ।।

89

वैरागी बण मानमल्लजी पहुंच्या है अपणै घर
अपणै संविभाग रै धन रा आठ भाग लीन्हा कर
आढूं सुत बधुआं नै दे ममता जड़मूल मिटाई ।।

90

अग्रज श्री नगराज अनुज श्री बच्छराज कहलावै
पांचशतक चान्दी रा सिक्का बणवाकर बंटवावै
घर परिकर रै हृदय गगन में हर्ष घटा उमड़ाई ।।

91

दो हजार पचास चैतसुद नवमी रो दिन पावन
अभिनिष्क्रमण दिवस भिक्षु रो मंगलक्षण मन भावन
समण श्रेणी में दीक्षित कर गुरु तुलसी चाह पुराई ।।

92

दीक्षा देतां ही श्री गुरुवर दूधां मेह बरसायो
'समण नियोजक' बणा पुरखदा में नव रंग लगायो
हो अगाध विश्वास सगुरु रो कण—कण सौरभ छाई ।।

93

मानवप्रज्ञ एक यात्रा में क्षेत्र सत्ताइस परस्या
पर्व पजूषण कर्यो 'सेथिया' प्रवचन सुण जन हरस्या
कार्तिक सुद ग्यारस राजाणै (गुरु तुलसी) मुनि दीक्षा पचखाई ।।

94

मुनि दीक्षा री बात सुणी जद डूंगरमल जी स्वामी
बीकाणै स्यूं पत्र भिजायो बणकर मंगलकामी
मुनि सुमेर री हर्ष ध्वनि शुभ, कानां में टकरायी ।।

95

दीक्षा पचखण स्यूं पेलां गुरु चरणां कर्यो निवेदन
त्याग करावो एकान्तर का मनै अबै आजीवन
'सुखे समाधे करो तपस्या' शुभ आशीष दिराई ।।

96

चाहूं मैं वरदान दूसरो गुरुवर! महर कराओ
सेवा में नियुक्त करवाकर इमरत मेह बरसाओ
थे सेवा कद नहीं करी? गुरुवाणी सुयश प्रदायी ।।

97

सेवा और सहयोग—

जंवरी मुनि रै साथै दो बरसां रह सेवा साझी
प्रवचन सेती काम संभाल्या चाड़वास सो राजी
जोधमुनी रै स्वर्ग गमन पर गुरुवर करी बड़ाई ।।

98

मुनिवर धर्मरुचि जी साथै करी चाकरी 'छापर'
सब सन्तां नै खिला पिलाकर खुद रखता रसना पर
बीस ठांवड़ा पाणी ल्याता दिखलाई तरुणाई ।।

99

लगभग सारा काम ठिकाणै रा करता हर्षित मन
बिना व्यवस्था स्थविरां रै वस्त्रां रो भी प्रक्षालन
घणी सकाम निर्जरा कर मोत्यां री फसल उगाई ।।

100

मगनलालजी स्वामी सागै दो बरसां उदासर
तन मन स्यूं ब्यावच कर ल्हावो लीन्हों पर शुभ अवसर
चित्त समाधी रही, संत सम्मान दियो सगलाई ।।

101

सात दिवस योगेन्द्र मुनि री सेवा रो क्रम जाणो
दिन में दस—दस बार परठणो उठावणो बैठाणो
घृणा और आलस री बिलकुल पड़ी नहीं परछाई ।।

102

चम्पालाल मुनि श्री गुरु चरणां पहुंचायो लिखकर
पुरस्कार मिलणो चाहीजै ई सेवा रो गुरुवर!
सेवाभावी मानवमित्र मुनि में अति लुलताई ।।

103

संतां रो सहयोग करण हित हरदम रहता तत्पर
सिल्या सैंकड़ां चोलपट्ट अरू मौजा सौ स्यूं ऊपर
छोटी पछेवड्यां अणगिणती सादर करी सिलाई ।।

104

तपस्या और खाद्य संयम—

अट्ठाईस बरस शुक्ला छट्ठ करता बास निरंतर
चालिस बरसां चतुर्दशी उपवास न छोड़्यो धृतिधर
दो हजार इकतालिस में एकांतर तपस्या ठाई ।।

105

चौविहार बेलै बेलै तप कर्यो अनेकां बारां
प्रायः हुया सवा सौ बेला चोला चउ चौव्यारां
दो पंचोला चौविहार इक वीरवृत्ति दिखलाई ।।

106

चौविहार तेलै तेलै तप कर्यो एक चौमासै
एकान्तर बिन चालिस तेला आणी हर्षोल्लासै
सार निकाल्यो तप सेवा कर स्वर्ण सुरभि बिलसाई ।।

107

बाल्यावस्था स्यूं जीवन में त्याग घणा स्वीकार्या
दो हजार बासठ में आजीवन सब फल परिहार्या
पूर्ण सजगता पालन में नहीं रंच मात्र निबलाई ।।

108

राग रागिनियों के विशिष्ट ज्ञाता—

दीक्षा रै पहले दिन साध्वी प्रमुखा श्री पधराया
'भविक उपाध्याय जी ने' आ लय पूछी गणराया
मानवमित्र मुनि श्री ततखिण गाकर सही सुणाई ।।

109

गुरु सन्निधि में चिन्तन वार्ता करता दस्साणी जी
सुणकर चकित चकित सा रहग्या सही राग गाणी जी
प्रचुर पुरातन राग रागिन्यां रा ज्ञाता स्वरदायी ।।

110

सम्मान युक्त संबोधन—

महाश्रमण जी रै कमरे में पहुंच्या दीक्षा लेकर
के संबोधन देवां आंनै? संतां दीन्यो उत्तर
बड़ी उम्रवालां नै 'बासा' केहवै मेवाड़ी भाई ।।

111

मुनिप्रवर महाश्रमण कह्यो 'हां' ओ आछो संबोधन
युवाचार्य श्री बण्या जठै तक 'बासा' कहता खुशमन
ऋषभ संत आदी अंतिम तक दिखलाई गुरुताई ।।

112

रचनाएं—

महावीर भिक्षू तुलसी श्री महाप्रज्ञ जगत्राता
आर्यप्रवर श्री महाश्रमण रा भक्ती गीत बणाता
पर्व दिनां में अै रचनावां सुण जनता हरसाई ।।

113

काठमांडु कलकत्तै गुरुवर जद म्हानै भिजवाया
सात्विक गौरव अनुभवता मातुल मुनिवर हरसाया
(अगर खबर होती पहलां में भी बणतो सहराही)
गुरु गण—महिमा गीत एक लिख प्रसन्नता प्रकटाई ।।

114

क्षान्ति मुक्ति आर्जव मार्दव पर करी सरस रचनावां
लेखन विषय बणी सादर एकादश गुरु मातावां
आगम घटनावां पर लिखकर व्यक्त करी सच्चाई ।।

115

धर्म संघ रा गौरवशाली संत सत्यां रो जीवन
पैंतिस गाथावां री एक ढाल में कीन्हों वर्णन
सार्थक समय बणाता हरदम क्षण ना व्यर्थ गमाई ।।

116

धर्म संघ रा सब संतां पर दोहा, पद्य बणाया
अगवाणी सारी सतियां रा छन्दां में गुण गाया
तप अनशन करणै वालां री श्रेणी शिखर चढ़ाई ।।

117

अप्रमत्त बण लिख्या सैकडां दोहा विविध विषय पर
महावीर वाणी या विद्वानां री सूक्त्यां लेकर
सुर वासी साधु सतियां पर प्रायः कलम चलाई ।।

118

मंत्री मुनिवर श्री सुमेर रा अगवाणी गणनामी
तेरापंथ रेंस रा ज्ञाता घासीराम जी स्वामी
जीवन वृत्त रच्यो बांरो प्रेरक घटना मन—भायी ।।

119

अल्पभाषिणी मधुर भाषिणी मोरादेवी माता
प्रेम पुरस्सर पोख्यो परिकर देता सबनै साता
संस्कारां रो सिंचन दे कुल कल्पलता लहराई ।।

120

सुघड़ सयाणी सजग सहिष्णु सेवाभावी माता
श्रमशीला श्रद्धाशीला संयम तप में रंगराता
बांरी पुण्यतिथी पर प्रायः नई ढाल निरमाई ।।

121

शासन गौरव संत धनंजय ताराचन्द जी स्वामी
प्रोफेसर मुनिश्री महेन्द्रजी किशनलालजी नामी
इत्यादि संतां री सेवा सुमनावली सजाई ।।

122

यथा समय अपनी रचनावां आदर सहित दिखाता
पद्यो लिख्यो मैं नहिं हूं यूं कह परिस्कार करवाता
(आखिर) सरस जीवनी घासीमुनि री दे कर खुशी मनाई ।।

123

लघु भाणेजी स्वस्थप्रभा नै कह्यो ठीक कर लीज्यो
पछै एक कोपी मंत्री मुनि रै कर कमलां दीज्यो
गण प्रभावना कारक घटना म्हारै हृदय बिटाई ।।

124

आत्मालोचन रै दर्पण में निरखूं गीत बणाद्यो
सीमन्धर स्वामी रा दर्शन चावूं स्तवन रचाद्यो
बीदाणै मोच्छव पर (यूं कह) स्पेशल ढालां दो रचवाई ।।

125

मधुस्मिता भाणेजी बोली कृपा आप करवाओ
निज पसंद री सरस रागिनी मुनिवर! मनै धराओ
'मैं तो थारा डेरा' राग पुरातन गा र सिखाई ।।

126

अन्तिम सेवा हुई लाडनूं जद मुनिवर फरमायो
ब्यार करण स्यूं पहली म्हारै खातिर गीत बणाओ
(आत्मानन्द मनाऊं गाऊं गीत बणाकर जाओ)
'प्यारी लागै कुलबहु' आ लय बार-बार उचराई ।।

127

सात पद्य लघुकाय गीतिका रच मै करी निवेदन
सुणकर खूब बधाई दीन्ही मातुलमुनि हर्षित मन
गातो रहस्यूं यूं कह, निजी डायरी मैं लिखवाई ।।

128

आचार्य प्रवर का अनुग्रह—

आचार्या रो इसो अनुग्रह विरला ही कोई पावै
स्थिरवासी संतां नै पावस में निज निकट बुलावै
नया पूज्य श्री महाश्रमण आ दिखलाई प्रभुताई ।।

129

अन्तेवासी विश्रुतमुनि आदी नै ल्याण भिजाया
तत्परता स्यूं मानवमित्र मुनी नै ले बै आया
जन्मभूमि रै पावस री अद्भुत रचना निरखाई ।।

130

महाप्रज्ञ गुरु द्वारा घोषित मोच्छव और चौमासा
मारवाड़ मेवाड़ क्षेत्र रै ढलग्या सुलटा पाशा
महाश्रमण श्री कर्यो अनुग्रह बांरी आश फलाई ।।

131

नगर केलवा अरु आमेट पर अमृतधारा बरसी
जसवल और टापरा री जनता वर पाकर हरसी
प्रवर घोषणा सुण मुनिवर री रोमावलि पुलकाई ।।

132

नव आचारज रा दर्शन हित संत सत्यां उमगाया
सबरी अरजी पर मरजी कर मन रा कोड पुराया
मानवमित्र मुनि रै दिल में खुशियां नहीं समाई ।।

133

राजाणै मैं पहलो मोच्छव दीप्या ज्युं तीर्थकर
नव इतिहास रच्यो—वी.सी. समणी नै दीक्षा देकर
पांच दिवस पश्चात् अग्रणी बणा बहिर्विचराई ।।

134

दीक्षा दाता मुनि सुमेर नै मंत्रीमुनी बणाया
श्रद्धाभाव प्रदर्शित कीन्हों नूतन रंग लगाया
संघभवन री नींवा नै दी सागर सी गहराई ।।

135

महिमामय पट्टोत्सव रो कार्यक्रम पुनः मनायो
शुभ्र साधना संकल्पां रो मंगल हार बणायो
शासन गौरव साध्वी श्री आ सुन्दर युक्ति सुझाई ।।

136

दूर देश री यात्रा हित गुरु सलाह संघ री लीन्ही
संत सत्यां तब हर्षित मन स्युं लिखकर स्वीकृति दीन्ही
जमीकंद रा त्याग संघ में नव शुरूआत सुहाई ।।

137

च्यार तीरथ में हर्ष घणरो बाजी यश सहनाई
मानवमित्र मुनि री छाती फूली नहीं समाई
विश्वभारती पाछा भेज्या वर समाधि उपजाई ।।

138

कृतज्ञता रै रंग स्युं राच्या रोम रोम मुनिवर रा
बोल्या कल्पतरु गुरु म्हारा (मैं) फल पाया तरुवर रा
जन्मभूमि रा लाल लाडला प्रगटी है पुण्याई ।।

139

भानेजी साध्वियों से मिलन—

जगराओ पावस कर भाणेज्यां चन्देरी आई
कर्यो परस्पर लेनदेन संतुष्टी मिली सवाई
तृप्त हुयो मैं अबकै, गुरुवर कमी न राखी कांई ।।

140

वैरागी वैरागण त्यार करीज्यो दीन्हीं शिक्षा
'भाईजी म्हाराज' बणै म्है तो आ करां प्रतीक्षा
जन्मभूमि रै पावस में करज्यो प्रयास संभलाई ।।

141

लम्बी यात्रा करसी गुरुवर पण में स्थविर कहाऊं
लालायित मन सेवा खातिर पैदल नहीं चल पाऊं
सहयात्र्यां नै त्यार करीज्यो पाटी प्रवर पढ़ाई ।।

142

सेवाभावी मुनि आकाश रा खुश होकर गुण गाता
योग्य भाणजो कर्यो त्यार मामामुनि नै दै साता
शासन ऋण स्युं आप उऋण कह नुई शक्ति संचराई ।।

143

काम किंपाक समा जिन भाख्या ढाल एक लिखवाई
जयाचार्य री सुन्दर रचना बड़ी प्रेरणादायी
मातुल मुनि री आ सहनाणी संबल बणसी स्थाई ।।

144

म्हारी छोटी बेन केवली छोड़ गई दो निधियां
मधुस्मिताजी स्वस्थ प्रभाजी संघ समर्पित सतियां
मनडै रा उद्गार व्यक्त कर खुशियां घणी जताई ।।

145

अंतिम अवस्था—

स्वावलम्बिता रही अबै तक चलणो फिरणो जारी
चार माह स्युं देहशक्ति में हुई गिरावट भारी
बाथरूम तक जाणै में भी बणै न कदम सहाई ।।

146

प्रायः वमन पारणै रै दिन बाहर जाकर करता
शौचपात्र में उल्टी करणै री अब हुई विवशता
मुनि आकाश अणगार सुधांशु सेवा लौ प्रजलाई ।।

147

दर्द असह्य हुयो कई बारां पड़ती रात जगाणी
पढ़्या लिख्या अक्षय प्रकाश मुनि निज ड्यूटी पहचाणी
सेवाभावी बण नीन्दडली कोशां दूर भगाई ।।

148

जीवन रै अन्तिम हफ्तै में हार्ट समस्या भारी
हुई वेदना काफी छूट्यो एकान्तर तप जारी
सात अक्टुबर निशि में सीवियर हार्ट अटैक दुःखदायी ।।

149

आधी रात्रि में डॉक्टर घोड़ावत जी खुद आया
भिन्न समाचारी में इंजेक्शन बै सात लगाया
सांस चैन री आई शायद मिटी तनिक अबखाई ।।

150

दो हजार बारह सन् आठ अक्टुबर रो दिन आयो
हुयो सुधार स्वास्थ्य में आत्मालोचन—क्रम अपणायो
खमत खामणा कर संतां स्यूं मैत्री धार बहाई ।।

151

होकर भाव विभोर संघपति रा गुणग्राम कर्या है
निशि दोषा री आलोयण कर हल्का हो संवर्या है
कृतज्ञता री डोर पकड़ पाई पर्वत—ऊंचाई ।।

152

अपणै मन स्यूं पांच विगय रा त्याग कर्या आजीवन
डॉक्टर घोड़ावत दर्शन कर कीन्हों स्वास्थ्य परीक्षण
प्रेशर सूगर पल्स ठीक सब स्थिति सामान्य जतलाई ।।

153

अर्जुन छाल चूर्ण रै साथै चार चमच पय लीन्हों
डॉक्टर साहब री सलाह स्यूं (ओ) अन्तिम भोजन कीन्हो
इंजेक्शन आदी अब नहिं ल्यूं खुद निज नाड़ हिलाई ।।

154

लगभग बारह बजे च्यार चम्मच जल ग्रहण कर्यो है
संथारै हित कह्यो संत पण नहीं हुंकार भर्यो है
फेर दो बज्यां जल मांग्यो, बैचेनी घणी लखाई ।।

155

आसपास में बैट्या संत उदक ल्या शीघ्र पिलायो
हुयो असह्य पीड़ा रो अनुभव चेतो पूर्ण लखायो
तत्क्षण पहुंच्या संत धनंजय सावधानि बरताई ।।

156

छाती और कमर पर मालिस करके शीघ्र सुलाया
हुयो चेतना रो आरोहण आराधक पद पाया
आश्विन कृष्णा आठम रो दिन घटिका दोय बजाई ।।

157

शासन सेवी श्री छाजेड़ जी पहुंच्या घटना स्थल पर
अन्य अनेक कार्यकर्ता आ गया वैद्य औ डॉक्टर
करी जांच दो बीस बजे मृत्यु घोषित करवाई ।।

158

शासन गौरव संत धनंजय गुरु दृष्टि आराधी
तपसी मुनि नै अंतिम क्षण तक दीन्ही खूब समाधि
कर महसूस धन्यता गुरु चरणा अवगति भिजवाई ।।

159

स्वर्गगमन री खबर तुरत सरदारशहर में आयी
सभाध्यक्ष सम्पतमल जी सतियां नै आ र सुणायी
हुया दिवंगत मानवमित्र मुनि तपसी स्वाध्याई ।।

160

शीघ्र व्यवस्था कर गाड़ी री हुयो रवाना परिकर
अग्रज श्री नगराज जी री च्यार पीढ़ियां हाजर
अंत्येष्टि में मुख्य भूमिका श्री उमेश निर्वाही ।।

161

दूजै दिन श्री समवसरण में स्मृति—सभा आयोजित
कविता गीत विचार सभी हा गुण सुमनां स्युं गुंफित
गुरु दर्शन हित देण प्रेरणा मधुस्मिता उभगाई ।।

162

न्यातीला सह कुछ विशिष्ट जन शीघ्र पहुंचग्या जसवल
'शासन गौरव' री सेवा रो कर्यो निवेदन खुशदिल
संत धनंजय री विशेषतावां श्रीमुख वरणाई ।।

163

पूज्य प्रवर री सन्निधि में स्मृति सभा हुयी आयोजित
बचपन स्युं गण सेवारत प्रौढ़ावस्था में दीक्षित
मानव मित्रमुनि री गाथा मंत्री मुनिवर गाई ।।

164

शासन गौरव संत धनंजय अष्टक एक बनायो
संस्कृत भाषा में मुनिवर रो समुचित गौरव गायो
गुण गुलदस्तै री खुशबू पावण जनता ललचायी ।।

165

शासन श्री राजेन्द्र मुनि वो अष्टक गा र सुणायो
श्री उमेशजी आंचलिया बोलण रो अवसर पायो
एक गीत गा न्यातीला गुरु गण सुषमा फैलाई ।।

166

जोड़ भगवती री रागां रा गुरु तुलसी हा ज्ञाता
किसी राग में संशय होणै पर गुरुवर पुछवाता
(मानवमित्र मुनि जी सविनय सम्यक् गा र सुणाता)
महाश्रमणी जी 'लयज्ञाता' री स्मृतियां नै सरसाई ।।

167

संयमनिष्ठ तपस्वी साधू संयम में रस लेता
राग रागिन्या रा ज्ञाता शासन हित चिन्तन देता
'ही विशिष्ट संघीय दृष्टि' गुरुवर श्री मुख सरघाई ।।

168

विरल विशेषताएं—

स्वामीजी रै सिद्धान्तां नै समझ्या गहराई स्यूं
और आचरण री सरणी पर चाल्या दृढ़ताई स्यूं
दान दया री रेंस बतावण दिखलाता नेठाई ।।

169

बाल ब्रह्मचारी स्वाध्यायी तप स्यूं आत्मा साधी
तुलसी महाप्रज्ञ श्री महाश्रमण दृष्टि आराधी
तीनूं गुरुवां री किरपा आजीवन रही सवायी ।।

170

गुरु इंगित आराधक बणकर काम घणा ही सार्या
खुद धृतिबल स्यूं कष्ट सहन कर संकट विघन निवार्या
बांरी सूझबूझ पर गुरुवर तुलसी छाप लगाई ।।

171

मानमल्लजी आंचलिया साधु रो काम करै है
दृष्टि अटै री आराधै शब्दां पर ध्यान धरै है
गया जटै ही पूर्ण सफलता वरमाला पहराई ।।

172

श्रद्धाशील प्रशस्त विवेकी सहनशील आत्मार्थी
करै सतत तप, लम्बी यात्रा में पैदल सेवार्थी
संतोषी वृत्ती खाणै में सचमुच विस्मयदायी ।।

173

इसा श्रावकां ने जद देखूं आगम स्मृति में आयो
संतां री परिषद में गुरुवर तुलसी यूं फरमायो
संति एगेहिं भिक्खूहिं गाथा अटै घटाई ।।

174

मानवमित्र बहुत ही सेवाभावी कार्यकुशल है
आर्य प्रवर महाप्रज्ञ लिखायो मुनि व्यवहार कुशल है
घर में रहकर साधु सत्यां नै साता घणी पुगाई ।।

175

शुद्ध नीति वैराग्य भाव मन नै आकृष्ट करै है
स्वावलम्बिता निर्जरार्थिता देख्यां नयन ठरै है
परमशान्ति रा सूत्र बताकर चित्त समाधि निपजाई ।।

176

युवाचार्य श्री महाश्रमण संदेश लिखाया सुन्दर
महाश्रमणजी भी संदेश दिरायो महर नजर कर
मुनि सुमेर, सुखलाल, रविन्द्र गुण लालां नै चमकाई ।।

177

शासन गौरव मधुकर, तारा, बुद्ध, धनंजय मुनिवर
ऋषि जौहरी, राकेश, हीरा, नग राज, दुल्लह, राजेन्दर
मुनि महेन्द्र, ऋषभ, सुमति प्रकटाई मजबूताई ।।

178

बच्छराज जी स्वामी रै संग मुनि जम्बू गुण गाया
मुनि स्वस्तिक देवेन्द्र सम्मिलित मंगल भाव सजाया
यति नग, विजय, श्रमण सागर वर शब्दावलि लिखाई ।।

179

साध्वी मधुस्मिता और स्वस्थप्रभा भाणेज्यां थारी
गावां गाथा मातुल मुनि रै अनगिन उपकारां री
कर उद्गार व्यक्त कुछ म्है भी रसना सफल बणायी ।।

180

सेवाभावी संतां रा गुण मुक्त कंठ स्यूं गाता
ऋषभ, अजित मुनि युग नै मां स्यूं उपमित कर हरषाता
औ दो मुनिवर ब्यावच कर रतनां री करी बुवाई ।।

181

उपासना करणै वालां ने समुचित शिक्षा देता
हर्षित मन दर्शन देवण जाता, चक्कर ले लेता
दूर घरां री उदक गोचरी कर अंतराय तुड़ाई ।।

182

एक माह स्यूं वस्त्र धोंवता जल बापरता थोड़ो
प्राप्त वस्तु यदि संत मांगली नहीं देणै में मोड़ो
मोहरां मां री पयधारा नै आजीवन उजलाई ।।

183

वृद्धावस्था में भी स्वावलम्बिता ही मन हारी
सदा पारणै रै दिन उलट्यां धृतिबल विस्मयकारी
धीरज स्यूं श्रामण्य सफल, मुक्ति स्यूं कड़ी जुड़ाई ।।

184

रत्नाधिक संतां सतियां नै झुक—झुक वन्दन करता
अहंभाव ने विगलित कर गुण सुमनां स्यूं घट भरता
शान्तकषायी बण जीवन—फुलवारी सरस खिलाई ।।

185

धर्म संघ री मां महाश्रमणी यूं कह गौरव गाता
सबनै पोखै ध्यान रखावै उपजावै सुखसाता
गुरु तुलसी री अनुपम—कृति नै दिल स्यूं खूब सराई ।।

186

वसुगढ़ आंचलिया जाती साध्वी श्री राजीमती जी
बैन म्हराज मान अपणायत रखता शुद्धमती जी
दीन्हों मान सदा साध्वी श्री दिखलाता लघुताई ।।

187

रह्यो घणो पछतावो, जो नहीं ली बचपन में दीक्षा
सूत्रां रो पारायण करतो पातो ऊंची शिक्षा
संघतरु री मैं भी यत् किंचित करतो सिंचाई ।।

188

संत प्रवर महाश्रमण शीश पर टिक्यो आपरो है कर
धन्य हुवैला बै प्राणी जो निरखैला बो अवसर
शुभ भविष्य हित मुनि सुमेर नै दीन्ही खूब बधाई ।।

189

पारिवारिक सेवा—

स्थिरवासी छापर चंगाणै चातुरगढ़ चंदेरी
स्वास्थ्य जानकारी उमेशजी रखता करी न देरी
अंतिम समय सजौड़े सेवा कर पाई वाहवाही

190

न्यातीला दर्शन उपासना करता समय—समय पर
स्वर्ग गमन स्युं पहलै दिन पहुंच्यो अग्रज रो परिकर
मिल्यो घणो संतोष सभी नै राजी हुया भुजाई

191

हा गृहस्थपन रा साथी माणकचन्द जी भंसाली
समय—समय पर कर उपासना प्रीत पुराणी पाली
पहलै दिन बै भी सेवाकर मन री प्यास बुझाई ।।

192

रचना समय और स्थान—

संवत् दो हजार सत्तर आश्विन कृष्णा आठम दिन
मातुल मानवमित्र मुनि रो चरित्र लिख्यो हर्षित मन
परम प्रशान्त पूज्यवर—सन्निधि संयम पुष्टि—प्रदायी ।।

193

शहर लाडनूं विश्व भारती अमृतायन रो प्रांगण
साध्वी प्रमुखा महाश्रमणीजी रै कर कमलां अर्पण
पावन पथ—दर्शन दे, परिष्कार री आंख खुलाई ।।

सांकेतिक प्रसंग

अर्हम्

1. आंचलिया घर.....1

तेरापंथ धर्मसंघ के प्रारम्भ से ही आंचलिया गोत्र का संबंध जुड़ा हुआ है। संवत् 1837 में पादु के उपाश्रय में महामना आचार्य श्री भिक्षु ने चातुर्मास किया और अपने प्रवचन पीयूष की पावन धारा से जन जन मन को सरसब्ज बनाया। शासन कल्पतरु गीत में आचार्य श्री तुलसी ने सुगनचन्द जी आंचलिया की आस्था का श्री मुख से संगान कर उन्हें अमर बना दिया। रतनगढ़ के आंचलिया गोत्र की सुपुत्री साध्वी श्री राजीमती जी शासन गौरव अलंकरण से अलंकृत है। साधना के नये-नये प्रयोगों से जिन्होंने अपने व्यक्तित्व को संवारा है तथा अनेक लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत बन रही है।

सरदार शहर के आंचलिया गोत्र में मेघजी आंचलिया ने शरीर में अच्छी शक्ति रहते संथारा कर धर्मसंघ की नींव को गहराया। इसी गोत्र में रामलालजी सेठ हुए जिनकी साधर्मिक उदारता उल्लेखनीय थी। आंचलिया परिवार के श्रीमान् बालचन्दजी ने छोटी उम्र में अनशन स्वीकार किया और दिवंगत होने के बाद स्वर्ग से आकर पूज्य गुरुदेव कालूगणी के दर्शन किए। ये बालचन्दजी श्रीमान् पूरणचन्द्र जी आंचलिया के आत्मज थे। पूरणचन्द जी, मघराजजी और कालूराम जी तीन भाई थे। पूरणचन्दजी आंचलिया के पांच पुत्र हुए। बालचन्दजी, धनराजी, मंगतमलजी, पूसराजजी, माणकचन्दजी। मघराजजी के एक पुत्र हुआ। जिनका नाम था करणीदान जी। कालूरामजी के एक पुत्र हुआ। जिनका नाम था गणपतराय जी। धनराजजी के पांच पुत्र व चार पुत्रियां हुईं। बालक मानमल उनके सातवें नम्बर की संतान थी। जिसके जन्म लेने पर दादाजी पूरणचन्दजी को बहुत खुशी हुई। उनका घर आंगन नये प्रकाश से भर गया।

2 माता मोहर मुस्कायी.....1

माता दृढधर्मिणी मोहर देवी ममता, हिम्मत व लज्जा गुण से सुसम्पन्न एक सुघड़ सयानी महिला थी। निर्लोभता, कृतज्ञता, दक्षता,

स्वाभिमान एवं मृदुसंभाषिता जैसे सुमनों से उनकी जीवन फुलवारी बड़ी मनहारी लगती थी। उनकी उदार वृत्ति बेजोड़ थी। लेनदेन के प्रसंग में उनको केवल देना ही सुहाता था। अपनी श्रमनिष्ठा से पूरे परिवार में अपनी एक अलग ही पहचान बना रखी थी। उनकी सास और जेठानी भी उनको बहुत आदर देती थी। उनका सेवाभाव विलक्षण था। बहुत बड़े परिवार की मालकिन होने पर भी उनमें दूसरों को टोकने की वृत्ति नहीं थी। कभी किसी व्यक्ति को कटु वचन कहते हमने उनको नहीं सुना। घर में चाहे कितना भी काम हो पुत्रवधुओं या पौत्र वधुओंको पीहर से बुलावा आ जाने पर वे कभी भी मना नहीं करती थी। आतिथ्य कला में निपुण थी। कुरुद्वियों का परिष्कार करने में अग्रणी थी।

घर के कार्यों को सुसम्पादित करते हुए भी वे बड़ी बड़ी तपस्याएं कर लेती थी। बेले-तेले आदि की तो गिनती ही नहीं, पखवाड़े तक की तपस्या, धर्मचक्र, कर्मचूर आदि तप इस बात के परिचायक हैं कि उन्हें तपस्या में रस आता था। खाद्य संयम के अनेक प्रयोग वे करती ही रहती थी। द्रव्यों की सीमा चार स्कन्ध का वर्जन आदि उनकी रसना विजय की साधना को प्रमाणित करते थे। श्लाघनीय था उनका पानी संयम। अपने पति धनराजजी के दिवंगत होने के पश्चात् उन्होंने जीवनभर स्नान नहीं किया। चमड़े की चप्पल का भी प्रयोग नहीं किया। वे पढ़ी-लिखी नहीं थी फिर भी सैकड़ों गाथाएं कंठस्थ की जिनका स्वाध्याय वे सामायिक पौषध में करती रहती थी। उनके प्रत्येक कार्य में विवेकशीलता परिलक्षित होती थी। प्रेम पुरस्सर पूरे परिवार का पालन पोषण करने के साथ-साथ धर्म के संस्कारों का सिंचन देकर अपने कुल की कल्पलता को विकसित किया। धर्मसंघ और संघपति के प्रति उनमें अद्भुत श्रद्धा समर्पण का भाव था। मरणोपरान्त परमपूज्य गुरुदेव श्री तुलसी ने उनको दृढधर्मिणी का अलंकार प्रदान कर अलंकृत किया।

3. शुभ संस्कार दिया बड़ियाजी.....3

सेठ श्री पूरणचन्द जी आंचलिया के प्रथम पुत्र का नाम बालचन्द जी था। उनकी धर्म पत्नी का नाम श्रीमती हुलासी देवी था। उनके कोई संतान नहीं थी। वे अपने देवर धनराजजी के बच्चों को अपने बच्चों की तरह मानती थी। पिता श्री धनराजजी व माता मोहरां

देवी तो मानमल का लाड-प्यार से लालन पालन करते ही थे। बड़ी मां भी नगराज और मानमल को प्रेम पुरस्सर पोख देती थी। केवल खाने-पीने और खेलकूद की सामग्री प्रदान कर वे अपना कर्तव्य पूरा नहीं करती थी साथ साथ में धार्मिक संस्कार प्रदान कर मानमल के शुभ भविष्य का निर्माण भी कर रही थी। वे जब अपने न्यातीले साध्वी श्री की उपासना में जाती तब मानमल को भी साथ ले जाती। वहां बालक मानमल ने तत्त्वज्ञान की प्रारंभिक चीजें सीखी। गणपतराय जी बाबासा का भी मानमल पर बहुत दिल था। उनका जीवन त्याग और संयम की सौरभ से सुवासित था। चातुर्मास के समय भाइयों में उपवास की बारी चलती। व्याख्यान सम्पन्न होने पर वे कन्फर्म करते, अगर किसी भाई के बारी का उपवास करने की अनुकूलता नहीं होती तो उसकी जगह गणपतराय जी स्वयं उपवास का प्रत्याख्यान कर लेते चूंकि वे प्रतिदिन प्रहर करते थे। ऐसे संस्कारी परिवार में बालक मानूं का शैशव बीत रहा था।

4 दीक्षा में अवरोध.....5

वि.सं. 1994 की साल बालक मानमल अपनी बड़ी मां हुलासी देवी के साथ ददरेवा में साध्वी श्री हीरांजी की उपासना करने गया। उस समय 13 वर्ष की उम्र में धर्म के प्रति लगाव हो गया। आत्मा संयम के रंग में रंगने लगी। वापस सरदारशहर आया। साध्वी श्री विरधांजी के चतुर्मास में उनकी सहवर्तिनी साध्वी श्री मानांजी जो चाड़वास वासिनी साध्वी श्री रायकंवर जी की संसार पक्षीया मां थी उन्होंने बालक मानमल के वैराग्य भाव को जगाया। तत्पश्चात् मुनि श्री कुन्दनमल जी 'जावद' ने वैराग्य पुष्टि में निमित्त बनकर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वैरागी बालक ने पांच वर्षों तक अनेक चीजों का संयम किया, ज्ञान सीखा, रात्रिशयन संतो के स्थल पर किया। जब पिताजी से दीक्षा की अनुमति मांगी तो उन्होंने सर्वथा इन्कार कर दिया। छोटे भाई बच्छराज की शादी के वक्त मानमल का भी विवाह करना चाहा किन्तु मानमल ने मना कर दिया। आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत भी धारण कर लिया किन्तु बाद में पेशाब की ऐसी तकलीफ हुई— बूंद-बूंद बार बार। सायंकाल प्रायः सामायिक भी नहीं कर पाते। प्रतिक्रमण कभी कभी करते तब भी बीच में

उठना पड़ता। इस बात का लगभग एक वर्ष तक परिवार के किसी सदस्य को पता तक नहीं लगा।

5 च्यारुं बैना रो सहयोग.....8

मानमलजी के चार सहोदरी बहिनें थी। झमकू बाई, निजरी बाई, केसर बाई और छोटी बहिन केवली। 'भाई हो तो ऐसा' इस उक्ति को चरितार्थ करने वाले थे मानमलजी।

छोटे मोटे सहयोग तो सब बहिनों के करते ही रहते थे। एक समय ऐसा आया जब बड़ी बहिन झमकू बाई को बहुत कम दिखाई देने लगा तब मानमल जी प्रतिदिन सुबह का प्रवचन सुनकर उनके घर जाते और बड़ी बहिन तथा बहनोई जी के लिए हाथ से खाना बनाकर आते और फिर अपने घर आकर स्वयं खाना खाते वे स्वयं सदा प्रहर करते। ऐसा क्रम लम्बे समय तक चला। बड़ी बहिन की दोहितियों, दोहितों के शादी विवाह प्रसंगों में उनका श्रम, समय नियोजन व अनुभवशीलता अविस्मरणीय रही।

दो नंबर बहिन निजरी बाई के कोई पुत्र नहीं था। चारों पुत्रियों की शादी हो गई। वृद्धावस्था में प्रायः हर वर्ष उन्हें पीहर में बुलाकर रखते। आंवला देते। उनकी सेवा परिचर्या मानमल जी करते।

केसर बाई के अनेक कार्यों में सहयोगी बने। उनके पुत्र गोगराज को लम्बे समय तक ननिहाल में रखा। स्वयं खड़े रहकर उनका मकान बनवाया।

छोटी बहिन केवली का शुरु से अंत तक पुत्री की तरह ध्यान रखा। एक बार जब उनको टीवी की बीमारी हो गयी तब उनके शिशु दिलीप के पालन पोषण में मामांजी मानमलजी ने मां की भूमिका अदा की। उसको मां के साथ सुलाने की डॉक्टर की मनाही थी। रात्रि में बार बार उठकर दूध गर्म करना उसको पिलाना आदि कार्य करते। भानजे भानजियों की दीक्षा व शादी के प्रसंगों में पूरा दायित्व निभाया।

6 धर्मशाल चिणवाई.....10

सरदारशहर का एक निकटवर्ती क्षेत्र दूलरासर जहां

साधु-साधवियों को विहार के समय प्रवास करने के लिए स्थान बहुत मुश्किल से मिलता था। मानमल जी आंचलिया ने अपने पैसों से दूलरासर में विश्रामालय के लिए जमीन खरीदी और उसे अपने मित्र म्हालचन्द जी दूगड़ की स्मृति में समाज को प्रदान की। समाज के सहयोग से उसका निर्माण कार्य करवाया।

इस कार्य के लिए लगभग प्रतिदिन सरदारशहर से दूलरासर जाना, मकान निर्माण के लिए अपेक्षित सामान लाना, ले जाना, स्वयं खड़े रहकर निर्माण करवाना इस कार्य में उनका अथक श्रम लगा। गांव दूलरासर का अनेक बातों में असहयोग होने के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी। मराठी भाषा की इस कहावत को उन्होंने सार्थक कर दिखाया।

“जिंकणारा कधी थांमत नाही आणि थंमनारा कधी जिंकत नाही।”

इसका अर्थ है— जीतने वाला कभी रुकता नहीं और रुकने वाला कभी जीतता नहीं।

जब तक रेलमार्ग से साधु-साधवियों का विहार होता रहा इस विश्रामालय की अत्यधिक उपयोगिता सिद्ध हुई। मानमलजी स्वयं इस भवन की सार संभाल करते रहे। आवश्यक सामग्री वहां ले जाकर रखते रहे। ज्ञातव्य है कि जब मानमलजी ने दीक्षा ग्रहण की उस समय विश्रामालय की चाभी श्रीमान् ज्ञानीरामजी आंचलिया जो उसके ट्रस्टी थे उनको संभला दी। तत्पश्चात् साधु-साधवियों का उधर से आगमन प्रायः कम रहा। भवन की उपयोगिता भी कम हो गई। सन् 2010 में जब आचार्यश्री महाश्रमणजी का चातुर्मास सरदारशहर में हुआ तब इस भवन के मुख्य ट्रस्टी श्रीमान् जब्बरमलजी दूगड़ ने सुरेन्द्र जी दूगड़ व अजय जी आंचलिया से परामर्श कर इस विश्रामालय को नव निर्मित तेरापंथ भवन महाप्रज्ञ अध्यात्म एवं एजूकेशनल फाउंडेशन (सरदारशहर) के बड़े कक्ष के रूप में परिवर्तित करा दिया। अर्थात् भवन के एक कक्ष पर “जैन विश्रामालय दूलरासर” का नामकरण करा दिया एवं जैन विश्रामालय तेरापंथ भवन के ट्रस्ट को सुपुर्द कर दिया।

7 अणुव्रती बण.....11

तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया। पहली प्रेरणा में जो-जो व्यक्ति अणुव्रती बने उनका नाम परमपूज्य गुरुदेव ने सरदारशहर में अपने हस्त कमल से अंकित किया। अणुव्रती बनने के प्रसंग में मानमलजी अत्यधिक उत्साही थे। वे अपना नाम प्रथम लिखना चाहते थे, किन्तु पारिवारिक जनों के न जचने पर वैसा नहीं हो सका आखिर 70 के आसपास उनका नाम अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी ने अपने कर कमल से लिखा।

अणुव्रती बनने पर आचार्यवर ने अपने श्रीमुख से फरमाया कि एक एक माह समय देना होगा। गुरुदेव की दृष्टि पाकर मास्टर रामचन्द्र जी व मानमलजी ने अपने स्वयं के खर्चे से हिसार से दिल्ली तक यात्रा की। प्रत्येक क्षेत्र में मानमल जी भजन सुनाते और मास्टर साहब भाषण बोलते। पूरी भूमिका बना दी। आचार्य प्रवर के चरणों में पहुंचकर निवेदन किया— कहां कितनी क्या तैयारी है। विश्वस्त जानकारी के अनुसार तब आचार्यश्री ने संवत् 2007 का चातुर्मास हांसी में करवाया। साध्वीश्री राजीमती जी की वहां पर दीक्षा हुई।

8 बां संतां स्यूं कदे न जाय भूलाई.....21

साधु-साधवियां गांव में पधारे या पुनः विहार करे तब श्रावकों का कर्तव्य बनता है कि वे साधु-साधवियों की अगवानी में पहुंचे, दर्शन सेवा का लाभ ले। ऐसा प्रतीत होता है— मानमलजी प्रारंभ से ही दायित्वशील श्रावक रहे हैं। ऐसा कोई सिंघाड़ा या वर्ग साधु-सतियों का नहीं होगा जो सरदारशहर पधारे हों और आते जाते दोनों वक्त मानमलजी ने उत्साह पूर्वक पथ उपासना न की हो।

घटना संवत् 2011 की है— जब तेरापंथ की राजधानी सरदारशहर में मंत्री मुनि श्री मगनलालजी स्थिरवासी थे। अतः वहां अनेक संतों का पदार्पण होता रहता था। उस दौरान मुनि श्री जंवरीमल जी के सहवर्ती संत बच्छराजजी के मसे की तकलीफ हो गई। उस समय मानमल जी आंचलिया के नोहरे में एक मुसलमान भाई रहता था।

उसका नाम डा. खुशी मोहम्मद था। वह मुसलमान भाई मस्से का इलाज संघ के साधुओं का करता था।

मानमलजी ने उससे मुनिश्री का इलाज करवाया। स्वस्थता के बाद उन्होंने चुरु के लिए विहार किया। बच्छराजजी स्वामी के नातीले भीखमचन्द जी आंचलिया ने पुलासर में सेवा की और वापस घर जाते समय कहा— हम कल सेवा में आ रहे हैं। मानमल जी ने कहा— अच्छी बात है आपके न्यातीले संत हैं, आपको पथ उपासना का लाभ लेना ही चाहिए।

श्रीमान् मालमलजी आंचलिया केवल दो दिन पथ सेवा के लिए चले थे। किन्तु चुरु, सरदारशहर और टमकोर कहीं से कोई नहीं पहुंचा। जेठ का महीना, चिलचिलाती धूप, तेज लूएं।

इस स्थिति में संतों को अकेले कैसे छोड़ा जाए? मानमलजी साथ-साथ चलते रहे। चलते चलते एक दिन 'खारिया' गांव में पहुंच गए। वहां पानी की बड़ी समस्या थी। मीठा जल सहज उपलब्ध नहीं हुआ। जल कुंडों में पानी अल्प और लटें अधिक थी। पानी के लिए बहुत घूमना पड़ा। आखिर घूमते-घूमते एक महिला ने मुश्किल से एक घड़ा मीठे पानी का दिया। उसको प्रासुक बनाने के बाद संतों को भावना भायी और प्रबल भावनापूर्वक बहराया। स्वयं ने अति उनोदरी की। संतों के भी जल की काफी कमी रही। उस दिन त्रयोदशी थी। मानमलजी को चतुर्दशी का उपवास करना था अतः उसके अनुरूप भोजन बनाने की सोची। एक रूपये में एक पाव घी खरीदा। दालबाटी बनाई। मुदित मन से संतों को बहराई और दूसरे दिन सानन्द संतों को चुरु पहुंचा दिया। रात में नींद कम आई पर भयंकर लू से बचाव हो गया। इस प्रसंग का उल्लेख करते हुए मुनि बच्छराज जी अनेक बार फरमाते— "भाई मानजी! बीं दिन तो थे हा जद जीवित रहग्या।" ऐसी पथ उपासना करके न जाने उन्होंने धर्मसंघ के कितने साधु संतो को साता समाधि प्रदान कर अहोभाव का अनुभव किया।

9 बण्यो असंभव भी संभव.....23

संवत् दो हजार बारह का मर्यादा महोत्सव भीलवाड़ा में सम्पन्न कर आचार्यश्री तुलसी विहरण करते हुए गुलाबपुरा पधारे। अकस्मात्

दौलतगढ़ का एक भाई वहां आया। गुरुदेव के दर्शन कर उसने तत्रस्थित साध्वी सोहनांजी (सरदारशहर) के पागलपान के बारे में निवेदन किया। इन दिनों मानमल जी आचार्यप्रवर की सेवा में थे। तत्क्षण गुरुदेव ने कहा— मानजी कहां हैं! उस समय मुनिश्री सुमेरमलजी लाडनूं को बुखार था। मानमलजी उनकी नाड़ी देख रहे थे। उन्हें सूचित किया गया— गुरुदेव आपको याद फरमा रहे हैं। वे उठे और गुरुचरणों में उपस्थित हो गए। गुरुदेव ने कहा— साध्वी पिस्तांजी के साझ में साध्वी सोहनांजी के पागलपन से गंभीर स्थिति बनी हुई है। चिन्ताजनक बात को सुनकर मानमलजी ने निवेदन किया गुरुदेव! इंगित प्रदान करें और सविनय बद्धाञ्जली दृष्टि का आशय समझने के लिए वे समुद्यत हो गए। गुरुदेव ने कहा— 'वहां साध्वियां सोहनांजी को तुम्हें भूला देगी।' तुरन्त मानमलजी ने मंगलपाठ सुना और तन—मन—धन से सेवा करने का पवित्र लक्ष्य बना लिया।

दौलतगढ़ पहुंचने के लिए किस वाहन की व्यवस्था की जाए? क्योंकि ट्रेन वहां तक जाती नहीं और बस की सवारी स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं। आखिर मानमलजी पैदल चले। नौ घंटे तक अनजाने पथ पर चलकर उन्होंने 17 मील का रास्ता तय किया। चार बजे 'लांबिया' स्टेशन से वाष्पयान की सवारी कर दौलतगढ़ पहुंचे। साध्वियों के दर्शन किए। वहां साध्वी श्री कुनणाजी, दीर्घतपस्विनी साध्वी श्री पन्नाजी साध्वीश्री केसरजी आदि 30 सतियां विराजमान थी। यह तेरापंथ धर्मसंघ की सेवा का विशिष्ट उदाहरण था। साध्वियों ने श्री मानमलजी से पूछा— गुरुदेव ने क्या संदेश प्रदान किया है? मानमलजी ने प्रतिप्रश्न किया— साध्वीश्री! महरबानी कर पहले आप मुझे साध्वी श्री सोहनांजी की स्थिति से अवगत कराएं। साध्वियों ने कहा— साध्वी सोहनांजी रात रातभर नींद नहीं लेती, न खाती हैं न खाने देती हैं तीन दिनों से एक घूंट जल भी इन्होंने नहीं पीया। दिनभर अंट संट बोलती रहती हैं। कोई साध्वी इनके पास नहीं जा सकती। देखो! कितनों के घुटने फोड़ गिराए हैं। कपड़ों को फाड़ती रहती हैं। लगता है कोई विचित्र उपद्रव हो रहा है। अब आप ही बताओ हम इन्हें कैसे संभालें?

मानमलजी ने अत्यन्त विनम्रता के साथ कहा— मैं अच्छी तरह से जानता हूँ कि आपको कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अब मेरी इच्छा यह है कि तीन दिनों से इन्होंने खाया पीया नहीं तो कुछ दिन और नहीं खाएंगे तो शरीर शिथिल हो जाएगा या फिर दिमाग कुछ ठीक हो जाएगा इसलिए हमें 4-5 दिन अवश्य इन्तजार करना चाहिए। उनको खंभे से बांध रखा था। जब मानमलजी उनके पास गये वो बोलने लगी, मानियां काला पापी, मानमलजी घबराए नहीं, प्रत्युत गुरुकृपा से गुरुवाणी का रहस्य खोजने लगे— ‘यदि जीवित भुलाने की बात होती तो गुरुदेव फरमाते साध्वियां आहार पानी तोड़ देंगी पर आचार्यश्री ने कहा साध्वियां तुम्हें भुला देगी। हमारे यहां भुलाने की परम्परा मृत्यु के पश्चात है। अतः आचार्यप्रवर का कथन शत-प्रतिशत सही होगा।’ उन्होंने साध्वीवर्ग से पूछा— सतीवर! इनकी संयम निष्ठा कैसी है? तब साध्वीश्री पिस्तांजी ने कहा— ये संयमचर्या में गहरा रस लेने वाली साध्वी है। मानमल जी बोले— साध्वीश्री! आप गंभीरता से सोचें और इनकी संयमश्री की सुरक्षा में निमित्त बनें गुरुदेव ने जो फरमाया है उसका अर्थ क्या है? इस पर विचार करें। इन्होंने तीन दिनों से कुछ नहीं खाया है तो अब धैर्य धारण करें तपस्या से रोग उपद्रव सब शान्त हो जाते हैं। मैं आपके चरणों का दास हूँ। मेरी और निहारो। गुरुवचनों पर दृढ़ श्रद्धा रखकर आप निर्भय बन जाओ।

साध्वीश्री बोले— “गुरुदेव ने जो फरमाया है उन शब्दों का उच्चारण कर आप हमारे और इनके दिल में प्राणशक्ति का संचार करो।” मानमलजी ने कहा— गुरुदेव ने फरमाया है— “साध्वियां तनै भुला देसी।” साध्वीश्री! आप जीवित साधु-साध्वि को हमें कब भुलाती हैं? मैं पुरजोर प्रार्थना करता हूँ कि आप गुरुवचनों का रहस्य समझें आपके निमित्त से नया सवेरा आएगा। तब साध्वीश्री केशर जी मानमलजी की बात से सहमत हुई। अन्य साध्वियां भी अपने चिन्तन में बदलाव लाने लगी। उत्साह पूर्वक कार्य में संभागी बनी। साध्वी सोहनांजी कभी थोड़ी शान्त और कभी उग्र रूप धारण करने लगी। दस दिन बीत गए, खाना पीना सब बन्द था। सतियां हिम्मत हारने लगी। इसी बीच दो तीन सिंघाड़ों ने वहां से विहार कर दिया। साध्वियों के मन

में असमंजस था। पर मानमलजी गुरुदेव के वचनों पर इतने अडिग थे कि उन्हें कोई डिगा नहीं सका। प्रत्युत साध्वियों के मन में आशा के भाव जगा दिए। दस दिन बाद उनकी जंजीरे खोली और अन्दर सुला दिया। मानमलजी ने मन ही मन संकल्प किया— 'इनका काम संवार कर ही जाऊंगा।' इधर श्रावक लोग नाराजगी व्यक्त करते हुए कहने लगे— जब गुरुदेव ने भुलाने का निर्देश दिया है तब आप ढील क्यों कर रहे हैं। इस प्रकार पागलपन की स्थिति में क्या साधुपन पलेगा? काली धार डूबेगी। मानमलजी ने उन सबको समझाया भाइयों! छट्ठे गुणस्थान की लम्बी चौड़ी सीमा है। संयम के पर्याय असंख्य हैं। कर्मों की दस अवस्था के बारे में उन्हें बताया। कर्मों की सूक्ष्म विवेचना सुनकर सब लोग शान्त हो गए। धीरे-धीरे साध्वीजी का पागलपन कम हुआ। जब पागलपन का शमन हुआ वे साध्वियों के चरणों में शीश झुकाकर विनम्रता करने लगी। समय बीतता जा रहा था। मानमलजी के पास खाने-पीने एवं पहनने की सामग्री स्वल्प थी किन्तु संघीय दायित्व के सामने बीच में जाने का विकल्प ही उनके दिमाग में नहीं आया। एक दिन वे आसीन्द में संतों के दर्शन करने को गए। शाम को जब वापस आ रहे थे, उन्हें एक ग्रामीण महिला मिली वह बोली— उस साध्वी ने संथारा पचख लिया है। अब अंट संट बोलने से छुटकारा मिल जाएगा। हर्षित मन मानमलजी सतियों के ठिकाने पहुंचे। साध्वीश्री के दर्शन कर दिन में कैसा रहा पूछा। साध्वीश्री ने बताया आज इनमें काफी परिवर्तन देखा गया। सतियों के पांव पकड़कर इन्होंने माफी मांगी। इनको जब संथारा पचखाया ये पुलकित हो गईं। उसके बाद वे मूर्च्छित हो गईं। तीन दिन बाद उनकी मूर्छा टूटी। उन्हें खाने के लिए पूछा गया तो गर्दन हिला दी। जब उन्हें याद दिलाया गया आप ने संथारा पचखा है? उन्होंने अपने हाथ से लिखकर स्वीकृति प्रदान की। आत्मा और शरीर के भिन्नत्व की अनुभूति करते हुए अपनी नैया पार लगादी। वर्धमान परिणामों में संथारा चला। साध्वियों और मानमलजी ने दिनरात सेवा कर शासन प्रभावना का अद्भुत कार्य किया। तीन दिन बाद आत्मलीन रहते हुए संथारा सम्पन्न हुआ। बड़े ठाट बाट से उनकी अंतिम यात्रा निकली। पच्चीस क्षेत्रों के लोग दाह संस्कार में सम्मिलित हुए। "तनै

सत्यां भूला देसी।” इस गुरुवचन का रहस्य सबकी समझ में आ गया। कार्यसिद्ध कर मानमलजी ने ‘वडु’ ग्राम में आचार्यवर के दर्शन किए। पूज्यप्रवर ने हंसती आंखों मानमल जी को आशीर्वाद प्रदान किया। घटना प्रसंग को सुनकर सब लोगों ने उनको दाद दिया।

इस घटना प्रसंग से इंगित आराधक श्रावक मानमलजी ने यह सिद्ध कर दिखा दिया “जहां तुम्हारी दृष्टि टिके अनहोना होना बन जाए”।

10 कइयां री करडी सेवा.....46

सरदारशहर तेरापंथ धर्मसंघ की दृष्टि से बड़ा क्षेत्र है। साधु सतियों का प्रवास लगभग वहां होता रहता है। धार्मिक प्रवृत्तियां चलती रहती है। संधारे भी समय-समय पर अनेक हुए हैं। वर्तमान में भी होते हैं। श्रीमान् मानमलजी आंचलिया बाल ब्रह्मचारी बने। वृद्धावस्था में श्रामण्य स्वीकार किया और अपनी जवानी को भी अनेक लोकोत्तर कार्यों में सहयोगी और संभागी बनकर सार्थक बनाया। अनशन पचखाना और अनशनरत आत्मा को समाधि प्रदान करना ये दोनों विशिष्ट कार्य हैं। मानमलजी ने अपने गृहस्थपन में पांच व्यक्तियों को स्वयं संधारा पचखाया। करीब 50 अनशनस्थ आत्माओं को स्वाध्याय आदि सुनाकर परिणामों की श्रेणी को ऊंची रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया।

घटना प्रसंग संवत् 2015 का है— कार्तिक मास चल रहा था। सरदार शहर के पन्नालाल जी चौरड़िया सौदा किया करते थे उनका स्वभाव चिड़चिड़ा था। वे कैंसर की बीमारी से ग्रस्त हो गए। मानमलजी ने उनको दवा लेने की सलाह दी। उन्होंने मना कर दी। तब आंवला लेने का सुझाव दिया। उन्होंने इन्कार कर दिया। त्याग प्रत्याख्यान करने की प्रेरणा दीं यह बात उन्हें अच्छी लगी। घोर तपस्वी मुनि श्री सुखलाल जी ने उनकी भावना को देखकर संधारा पचखा दिया। घर परिवार के लोग उनकी सेवा करने को बिलकुल तैयार नहीं थे। ऐसी हालत में मानमलजी ने उनको संभाला। सात आठ बार पूरी-पूरी रात उनके पास रहे। उनको पेशाब करवाना, अग्लान भाव से परिष्ठापन

करना आदि कार्य किए। उनका संथारा एक माह तक चला तब तक उनकी सेवा कर उन्हें पूर्ण समाधि प्रदान की।

इसी प्रकार श्री जयचन्दलाल जी भंसाली, जिन्होंने यह संकल्प ले रखा था— उम्र के 60 वर्ष बीत जाने के बाद जीवन पर्यन्त कुछ नहीं खाऊंगा। संवत् 2021 चैत्रमास में उन्होंने मुनिश्री नथमलजी (बागोर) से अनशन पचखा। उनका संथारा 75 दिन तक चला। मानमलजी ने उनकी भी सम्पूर्ण सेवा कर धन्यता महसूस की।

11 धुन का पक्का दिखलाई दृढ़ताई.....49

अनुभव सम्पदा बढ़ाने का एक महत्त्वपूर्ण घटक है— पदयात्रा। जन सम्पर्क का अमोघ साधन है— पदयात्रा। निर्जरा का श्रेष्ठ उपाय है भाव क्रिया पूर्वक गमन योग। श्री मानमलजी आंचलिया के रुचि का विषय था पैदल विहार। आचार्यश्री तुलसी ने कलकत्ता यात्रा के लिए प्रस्थान किया। उस समय सरदारशहर में पन्नालालजी चौरड़िया का संथारा चल रहा था। एक माह तक जब तक उनका संथारा चला, मानमलजी ने तन मन से उनकी सेवा सुश्रुषा की। अनशन सम्पन्नता के तुरन्त बाद वे कानपुर पहुंच गए। कानपुर से कलकत्ता तक निरन्तर पैदल यात्री बनकर साथ साथ चले। कभी भी किसी भी सवारी का उपयोग नहीं किया। कलकत्ता से आते वक्त कुछ पारिवारिक कठिनाई के कारण बीच में आना पड़ा। अन्यथा सरदारशहर तक पैदल सेवा करने का विचार था।

इसी प्रकार रायपुर से बीदासर तक आचार्यश्री तुलसी के साथ संस्था में ड्यूटी सहित पथ उपासना की। इससे पूर्व संवत् 2009 में सरदारशहर से दिल्ली तक अपना सामान कंधे पर लेकर दस दिन में गुरुदेव के साथ दिल्ली पहुंचे।

12 सौ—सौ बायां ज्योत जलाई.....50

तेरापंथ संघ में लम्बी यात्राओं का दौर तुलसी युग में चला। आचार्य श्री तुलसी ने न केवल अपने शिष्य शिष्या समुदाय को प्रलम्ब यात्री बनाया। वे स्वयं अनथक यायावर बने। आगम की भाषा में वे

जीवन पर्यन्त अविश्राम गति से चलते रहे। मद्रास, बँगलोर, कन्याकुमारी आदि सुदूर क्षेत्रों में पधारकर चतुर्मास मर्यादा महोत्सव परिसम्पन्न किए। अनेक श्रावक—श्राविकाओं की गुरु उपासना हेतु जाने की इच्छा होती है किन्तु अनेक प्रकार की अनुकूलताओं के अभाव में वैसा हो नहीं सकता।

मानमलजी आंचलिया ऐसे परोपकार परायण और विश्वस्त व्यक्ति थे, वे सैकड़ों—सैकड़ों बहिनों को अपने साथ अहमदाबाद, बम्बई, दिल्ली तथा सुदूर दक्षिण के अंचल में ले गए और उन्हें मनोनुकूल गुरु उपासना का लाभ दिलाया। आज भी सरदारशहर की कुछ बहिनें उस संघ बद्ध सेवा को याद कर मानमलजी के गुणगान करते—करते भाव विभोर हो जाती हैं।

मैंने अपनी आंखों से देखा सरदारशहर से संघ खाना होने से कुछ दिन पूर्व हमारे संसारपक्षीय ननिहाल में शादी की पूर्व तैयारियां जैसा वातावरण बन जाता। संघ की सम्पूर्ण पूर्व तैयारी में अग्रसर मानमलजी के साथ—साथ हमारे संसारपक्षीय नानीसा, मामीसा आदि सब जुट जाते।

13 नान्हा—नान्हा.....संघ वरदायी 51

जैन धर्म में तीन करण तीन योग की व्याख्या उपलब्ध है। अच्छा कार्य करना कराना और उसका अनुमोदन करना तीनों श्रेष्ठ है। बाल ब्रह्मचारी मानमलजी स्वयं बाल्यावस्था में दीक्षा नहीं ले सके किन्तु अनेक छोटे—छोटे बालकों की दीक्षा में सहयोगी बनकर धन्यता का अनुभव किया। विनोद मुनि, मृत्युंजय मुनि, उदितमुनि, मुदितमुनि, मधु कुमार मुनि आदि इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं। वैरागिन सुमन बोथरा की दीक्षा के लिए तो पिता बनकर आचार्यप्रवर को निवेदन किया और साध्वी सम्यक् प्रभाजी की दीक्षा में संपूर्ण सहयोगी बने। उनके द्वारा सहयोग प्राप्त वैरागी बालकों में से एक 'पुण्य पुञ्ज मोहन' जो आज तेरापंथ धर्म संघ के एकादशम अधिशास्ता पद पर सुशोभित होकर धर्मसंघ को हिमालयी ऊंचाईयां प्रदान कर रहे हैं। उनकी पवित्र साधना जन—जन के लिए प्रेरक है। उनकी मंगलमय अनुशासना में तुलसी

महाप्रज्ञ का समन्वित रूप एवं आचार्य भिक्षु जैसी सत्यनिष्ठा के दर्शन होते हैं। समूचा धर्म संघ उनकी छत्र छाया में प्रमुदित है। आनन्दित है। अपने सौभाग्य की सराहना करता है।

14 मगन भाणजी.....52

दुनियां में मां का बड़ा महत्त्व है। मां जन्म देती है और जीवन भी देती है। संस्कार सम्पन्न बनाती है। (मगन) मेरी मां ने भी मुझे अच्छे संस्कार दिए। जब मुमुक्षु बनी संस्था में प्रविष्ट होने का समय आया तब मामाजी—नगराजजी मुझे पा.शि.संस्था में प्रवेश दिलाने गये। मैंने हमेशा ऐसा अनुभव किया हमारे सभी मामाजी (पांचों) वात्सल्य प्रदान करने वाले हैं। जब मेरी दीक्षा का प्रसंग आया, दीक्षा की अर्ज करना, दीक्षा की तैयारियां करना आदि सारे कार्यों में ननिहाल की विशेष भूमिका रही। मैंने ऐसा महसूस किया मेरे मामा मां से भी बढ़कर हैं। परमपूज्य गुरुदेव श्री तुलसी की मामोसा मानमलजी पर विशेष कृपा थी। मेरी दीक्षा के अवसर पर एक दिन आचार्यवर शिष्य समुदाय सहित ननिहाल में पधारे। काफी देर तक विराजे और उपासना का लाभ दिलाया। दीक्षा का बरनोला बड़े रूप में निकाला गया। मामोसा श्री शुभकरणजी के पौत्र का बड़ा नाम का कार्यक्रम उसी दिन संयुक्त रूप में रखा गया। पा.शि. संस्था को आमंत्रित कर खाना खिलाया गया। सुपात्र दान लगने से परिवार में सर्वत्र आनन्द की लहर छा गई।

15 लोचकला सुघड़ाई.....54

साधु जीवन में केशलोच करना आवश्यक होता है। अनेक साधु—साधवियां लूंचन कला में निष्णात होते हैं। मानमलजी गृहस्थ होते हुए भी लोच करना जानते थे। सरदारशहर के श्रीमान हरखचन्द जी सुराणा ने कई वर्षों पूर्व हजामत करवाने का जीवन पर्यन्त त्याग कर दिया। मानमलजी ने हर बार उनके दाढ़ी और सिर का केश लोच कर उनके संकल्प पालन में सहयोग किया। दूसरा उदाहरण है मुनिश्री गुलाबचन्द जी ने दीक्षा से पूर्व मुंडन के स्थान पर लोच करवाया। उनका वह लोच भी मानमल जी आंचलिया ने किया। इसके अलावा

मिश्रीमल जी सुराणा ने भी आंचलिया जी से कई बार केशलोच करवाया। ये सभी प्रमाण मानमलजी की लोचकला दक्षता को प्रमाणित करने वाले हैं। आश्चर्य होता है गृहस्थ अवस्था में उन्होंने साध्वोचित अनेक कलाओं को कैसे हस्तगत कर लिया।

16 अभय साधना.....55

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी अनेक बार फरमाते थे— जो अभय नहीं वह अहिंसक नहीं हो सकता। साधक सिद्धि तक पहुंचने के लिए अनेक प्रयोग करता है। संभवतः मानमलजी ने योग साधिका साध्वि श्री राजीमती जी के सम्मुख इस विषय में जिज्ञासा की, तब उन्होंने शमसान में जाकर अभय साधना का सुझाव दिया। मानमलजी ने अपने आपको परिपक्व बनाने के लिए दो रात्रियां अकेले शमसान में पौषध कर बिताई। (जहां मंत्री मुनिश्री मगनलालजी स्वामी व घोरतपस्वी सुखलालजी स्वामी के चौकिए बने हुए हैं।)

17 पांच वर्ष तक58

संवत् 2041 जेठ बदी 2 मां मोहरादेवी के दिवंगत होने के बाद 61 वर्ष की उम्र में मानमलजी आचार्यश्री तुलसी की दृष्टि प्राप्त कर उपासक बन गये। उपासक दीक्षा में दीक्षित होने के बाद उन्होंने अनेक उल्लेखनीय कार्य किए।

पारमार्थिक शिक्षण संस्था के अध्यक्ष राणमलजी जीरावला का पत्र प्राप्त हुआ— हमने सुना है— मानमलजी आंचलिया को औरत के स्पर्श का त्याग है। वे साधना करेंगे। पा.शि. संस्था में इस समय संरक्षक की अपेक्षा है। उनका खर्चा संस्था वहन करेगी। मानमलजी ने खर्चा स्वयं वहन किया और आचार्यश्री तुलसी की दृष्टि प्राप्त कर पांच वर्ष संस्था में रहे। निष्काम भाव से सेवा दी। संस्था जीवन में उनकी अनेक कसौटियां हुईं उनमें वें कुन्दन की भांति खरे उतरे।

एक बार आचार्य प्रवर के दर्शनार्थ संस्था श्रीडूंगरगढ़ जा रही थी। मानमलजी ने भी जाने की इच्छा व्यक्त की। राणमलजी ने कहा— गाड़ी में जगह नहीं है। मानमलजी की महानता से परिचित झाइवर बोला— “मैं गाड़ी खड़े-खड़े चला लूंगा किन्तु इनको जरूर ले जाऊंगा।”

18 बीस मुमुक्षु.....59

उपासक अवस्था के अनेक कार्यों में एक महत्त्वपूर्ण कार्य था— वैरागी बालकों का संरक्षण। आपने उस समय करीब बीस मुमुक्षुओं को संरक्षण प्रदान किया। जैन विश्व भारती स्थित गौतम ज्ञानशाला के बहिर्भाग में निर्मित एक कुटिया आपके लिए प्रवास स्थल बनी। कभी आप वहां भोजन करते। कभी सरदारशहर निवासिनी कस्तुरी बाई के साथ तथा कभी तुलसी अध्यात्म नीडम में भोजन करते। नीडम में साधना करने वाले अनेकों भाइयों की भी आप निस्वार्थ भाव से सेवा करते। किसी के तैल मालिश कर देते किसी के फटे हुए कपड़ों की सुन्दर सिलाई कर देते। प्रतीत होता है कि उन्हें साध्वोचित अनेक कार्यों में दक्षता प्राप्त थी। लोच करना, सिलाई, रंगाई आदि। उपासक अवस्था में उन्होंने समणों के कम से कम बीस चोलपट्टे सिले। अनेक पात्रियां रंगी। संस्कार प्रदान करने की कला में भी आपको वैशिष्ट्य प्राप्त था। संध बहिर्भूत साध्वी मंजुलाजी हनुमानगढ़ में थी, उस समय गुरुदेव श्री तुलसी ने व्याख्यान आदि के द्वारा संस्कारों की पुष्टि के लिए आपको दृष्टि प्रदान की। आप वहां गए और इंगित अनुसार कार्य किया।

19 जापानी जनुमुरा60

नीडम में उपासक मानव मित्रजी के सहवास में जो सुखद क्षण बीते, उनको प्रकट करने वाला जापानी मित्र का पत्र यहां उल्लिखित किया जा रहा है।

Mr. Man Mal

I had a very good time in Ladnun. I often remember the pleasant time I had with you. It was the actual experience of my lite.

I shall never forget your kindness as long as I live.

Thank you from the bottom of my heart very sincerely

Yashihide Janumura

श्री मानव मित्र

मेरे प्रिय मित्र

मेरा लाडलू में बहुत अच्छा समय बीता। आपके साथ बिताये हुए आनंद के क्षणों को मैं प्रायः याद करता रहता हूँ। वह मेरे जीवन का वास्तविक अनुभव था। मैं जब तक जीवित रहूँगा तब तक आपकी कृपा दृष्टि को नहीं भूल सकूँगा।

अन्तःकरण से आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

आपका

योशिहाइड़ जनुमुरा

जापान

20 आप धराई.....61

उपासक मानव मित्रजी प्राचीन राग-रागिनियों के अच्छे ज्ञाता थे। पुराने व्याख्यानों की रागें उन्होंने जहां साधियों, समणीवर्ग, और मुमुक्षु बहिनों को धराई वहां इस विषय में उनकी निपुणता के अन्य प्रमाण भी उपलब्ध है। अन्य सम्प्रदाय के संत भी उनसे रागें धारने के लिए समुद्यत रहते थे। इसका साक्षी है निम्नांकित पत्र-

जय महावीर

श्री भास्कर मुनि

सुरेन्द्र नगर

ता. 22.10.90

पुण्य पुञ्ज-

आदरणीय

पूज्य आचार्यप्रवर श्री तुलसी जी म.सा. की सेवा में हार्दिक यथोचितम्। पाली-

आपश्री के जन्म दिवस महोत्सव के उपलक्ष में शत्-शत् मंगलकामनाएं।

आपके द्वारा निर्मित या आपके पूर्ववर्ती आचार्य प्रवरों द्वारा निर्मित रचित पद्य साहित्य के कतिपय काव्य के राग-रागिणी बैठाने के

लिए सुश्रावक श्री मालचन्द जी दुगड़ से अनुरोध किया। उन्होंने साधक श्री मानवमित्र जी का नाम बतलाया। यथावसर हमें उपयुक्त सहूलियत हो तभी श्री मानवमित्रजी कुछ दिनों के लिए जरूर समुपस्थित हों— यह अपेक्षा है।

आशा है आपका स्वास्थ्य संयम साधना के अनुरूप होगा.....

शेष कुशल मंगल
भास्कर मुनि

21 प्रशंसा करता लोग लुगाई.....63

आचार्य श्री तुलसी के महत्त्वपूर्ण अवदानों में एक अवदान है उपासक श्रेणी! सम्प्रति तेरापंथ धर्मसंघ में सैकड़ों—सैकड़ों उपासक और उपासिकाएं 'पयुर्षण आराधना' आदि अवसरों पर अनेक क्षेत्रों में पहुंचकर लोगों को धर्माराधना करवाते हैं। उपासक मानवमित्रजी उस समय गुरुदेव के निर्देशानुसार क्षेत्रों में जाकर लोगों को अच्छे तरीके से तत्त्व की जानकारी देते। सरस शैली में व्याख्यान सुनाते। उनकी प्रभावक शैली जन—जन को धर्म के प्रति आकृष्ट करती। एक बार वे आचार्यश्री तुलसी की दृष्टि प्राप्त कर 'जावद' पयुर्षण आराधना करवाने गये। वहां के श्रावक समाज ने प्रमोद भावना के प्रकटीकरण में 'अभिनन्दन पत्र' प्रस्तुत किया। उसे अविकल रूप में यहां उद्धृत किया जा रहा है।

श्री महावीराय नमः

जय भिक्षु

।।अ.सि.आ.उ.सा.नमः।।

जय तुलसी

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा

जावद जिला मन्दसौर (म.प्र.)

अभिनन्दन पत्र

दिनांक—20.09.1985

परम आदरणीय,

साधक श्री मानवमित्र (श्री मानमलजी आंचलिया सरदारशहर)
का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए हमें सात्विक हर्ष और गौरव का

अनुभव हो रहा है। आप तत्त्वज्ञ, मधुरभाषी, सरलस्वभावी, तपस्वी, संघ एवं संघपति के प्रति 'समर्पित दृढ़ श्रद्धानिष्ठ साधक हैं। आचार्यश्री तुलसी के निर्देशानुसार आप पर्वाधिराज पर्युषण परवाराधन में अध्यात्मिक सहयोग मार्ग दर्शन देने हेतु स्वर्गीय मुनि श्री चौथमलजी एवं मुनि श्री कुन्दनमल जी की जन्मभूमि जावद पधारे।

आपने इन दिनों हमें सतत जागरूक रहने की प्रेरणा दी। आपने भगवान महावीर के जीवन दर्शन, प्रभूता री पराजय (भरत बाहुबली) अग्नि परीक्षा, शील धर्म पर 'जसमासती' का प्रवचन सरल सुबोध शैली में दिया। हमें प्रतिदिन तत्त्व चर्चा करके तत्त्वों की जानकारी एवं अणुव्रत संकल्प ग्रहण करने की प्रेरणा दी।

क्षमायाचना के पुनीत अवसर पर हम आपके दीर्घ यशस्वी, तपस्वी जीवन एवं साधना के पंथ पर प्रगति करने की मंगल कामना करते हैं।

हम हैं जावद के विनम्र श्रावक एवं श्राविकाएं

कन्हैयालाल
अध्यक्ष

बंशीलाल जैन
मंत्री

22. मैं पूछ्यो इक दिन.....65

उपासक अवस्था में मानमलजी का अधिक समय गुरुदेव की उपासना में सार्थक होता। जब मुझे (साध्वी मधुस्मिता) आचार्यप्रवर ने बहिर्विहारी बना दिया तब चातुर्मासिक क्षेत्र प्रवेश से कुछ दिन पूर्व पूज्यवर की दृष्टि प्राप्त कर वे पथ उपासना के लिए पहुंच जाते। पावस प्रवेश करवाकर पुनः गुरु सन्धि प्राप्त कर लेते। आषाढ़ का महीना होता। गरमी की मौसम में भी उनका निरन्तर चौविहार एकान्तर तप चलता। पैदल चलना और पानी भी नहीं पीना—गजब सहिष्णुता थी उनकी। विहार करते समय वे खाली हाथ नहीं चलते। एक थैले में आसन, पूंजणी, लोटा, कुछ अन्य चीजें डालकर उसे साथ लेकर चलते। एक दिन मैंने पूछा— आपके चौविहार उपवास है फिर थैले में वजन डालकर क्यों चलते हो? मानमलजी ने कहा— “भार उठाने का अभ्यास रखता हूं।” उस समय बात समझ में नहीं आई। इसका रहस्योद्घाटन तब हुआ जब मैंने देखा वृद्धावस्था में दीक्षित होने के बाद मुनिश्री

धर्मरुचिजी के साथ उन्होंने छापर चाकरी की और अकेले 20-20 पात्र पानी प्रसन्नता के साथ ले आते ।

23 प्रबल भाव स्यू.....66

जैन तत्त्व प्रवेश के श्रावक गुणद्वार में श्रावक के 21 गुणों का उल्लेख है । उनमें एक है अतिथी संविभागी । अपने संविभाग की वस्तु साधु-साधियों को बहराकर लाभान्वित होना । मानमलजी को गृहस्थ अवस्था में सुपात्रदान देने का खूब अवसर मिला । उपासक अवस्था में जब वे पथ सेवा करने आते पारने के दिन अच्छी मात्रा में दलिया बनाते । कई बार मना करने पर भी हठ मनुहार पूर्वक प्रायः सारा दलिया हमको बहरा देते । स्वयं तपेली पर लगे दलिए में थोड़ा सा दूध डालकर पारणा कर लेते । आप इतना दलिया क्यों बनाते हैं हमारी जिज्ञासा पर उन्होंने स्पष्ट किया- “साध्वीश्री! मेरी इतनी खुराक है । अगर आपको चावना नहीं हो तो मैं सारा खा सकता हूं ।” इससे ज्ञात होता है कि वे तपस्या के साथ-साथ पारणे में कितनी ऊनोदरी करते थे । अनेक प्रकार की फल सब्जियों का उन्हें प्रत्याख्यान था । आम आदि कुछेक फल वे खाते थे । सुधारने के बाद उनकी भावना भाते । हम कम लेने का प्रयास करते किन्तु बहुधा अधिक बहरा कर ही वे खुश होते । इस प्रकार संयमी आत्माओं का पोषण कर अत्यधिक उनोदरी पूर्वक तपस्या करके उन्होंने कल्याणकारी भविष्य का निर्माण किया ऐसा मेरा अनुमान है । साधु को कहां, क्या, कैसे कल्पता है, इसकी समुचित जानकारी उन्हें प्राप्त थी । वे निर्दोष आहारादि का दान देते । साधु-साधियों के किसी प्रकार का दोष नहीं लगाते ।

24 हाथ लगाऊं.....68

साधु कंचन कामिनी का त्यागी होता है । याचना परीषह का विजेता बनता है । गृहस्थ को कदम-कदम पर पैसे की आवश्यकता पड़ती है । उपासक अवस्था में मानमलजी ने एक वर्ष तक पैसे के स्पर्श करने का त्याग कर दिया । इस साधना में उनकी कसौटी हुई पर काफी आनन्द आया । एक बार पा.शि. संस्था से गंगापुर जाना था । निकटवर्ती क्षेत्र तक गाड़ी जाती थी । किसी भाई के साथ वे वहां तक चले गए ।

उस गांव में एक स्थानक वासी परिवार रहता था। मानमलजी उस घर में गए। उनको टिकट के लिए कहा। वे बोले 'भाई' तुम्हारे जैसे बहुत लोग आते हैं। ऐसे किस किस को दें? तब वे वहां से अपना बिस्तर बीटा तथा थेला स्वयं कंधे पर लेकर चले। चलते-चलते लगभग 10 कि.मी. पर एक तेरापंथी संचेती परिवार का घर आया। उस परिवार के लोगों को इस बात की अवगति मिलने पर वे बहुत खुश हुए और उन्होंने गंगापुर की टिकट बनवादी।

25 घटी एक घटना.....73

उपासक अवस्था में एक बार मानमलजी ने 'मांगीलालजी जैन उज्जैन' के साथ रेलयात्रा की। उस दिन गाड़ी में अत्यधिक भीड़ थी। जिस डिब्बे में मानमल जी प्रविष्ट हुए। उसमें ओड़ जाति के बहुत लोग थे। मानमलजी अपनी सीट प्राप्त कर बैठ गए। ओड़ों के साथ कुछ महिलाएं भी थीं। न जाने क्यों एक छोटी उम्र की महिला ने मानमलजी के साथ दुर्व्यवहार किया। वह कभी उनके शरीर का स्पर्श करने का दुष्प्रयत्न करती तो कभी उनके सिर के बाल खींचती। आखिर में उसने अपने बच्चे को मानमलजी के मस्तक पर बिठा दिया। ओड़ जाति के लोगों में से एक आदमी उन्हें कहने लगा उठो उठो! वरना गाड़ी चलने पर तुम्हें फैंक देंगे। मानमलजी ने शान्ति से कहा भाई! हम हमारी जगह पर बैठे हैं। तुम ऐसे क्यों बोल रहे हो? ऐसा कह कर उन्होंने स्थान का संकोच भी कर लिया। किन्तु आश्चर्य अचानक वही भाई चलती गाड़ी से नीचे गिर पड़ा। वे सारे ओड़ भी नीचे उतर गए। मानमलजी का सामान भी उठाकर ले भागे। उन क्षणों में मानमलजी ने बिलकुल भी आवेश नहीं किया। ध्यान की मुद्रा में बैठकर अ.भी.रा.शि.को.नमः का स्मरण करते रहे। जब केन्द्र में पहुंचे तब संतों के सामने इस घटना का उन्होंने जिक्र किया। संतों ने आचार्यवर के चरणों में निवेदन किया। अवगति पाकर पूज्यवर को बहुत आश्चर्य हुआ। आमेट में जब अणुवत यात्रा सम्पन्न हुई तब मंगलमंत्र सुनाते वक्त आचार्यश्री तुलसी ने उनको नया संबोधन प्रदान किया— 'मानव मित्र'।

26 स्वास्थ्य समस्या.....81

यह तथ्य सर्व विदित है— पहलो सुख निरोगी काया। एक कब्जी सैंकड़ों रोगों को आमंत्रण देती है। उस समय हनुमानमलजी स्वामी के साथ मुनिश्री शुभकरण जी (तारानगर) 'आतमा' में विराज रहे थे। उनके आठ दिनों से मल निष्कासन नहीं हो रहा था। डॉक्टरी राय के अनुसार चीरा देकर मल निकालने की बात सामने आयी। मुनिश्री को काफी कष्ट का अनुभव हो रहा था। जब यह संवाद पूज्यप्रवर के पास पहुंचा तब गुरुदेव ने मानवमित्र जी को याद किया और आतमा जाने की दृष्टि प्रदान की। मानमलजी ने पूछा— वहां जाकर मुझे क्या करना है? गुरुदेव— “थानै ठीक लागै जियां करीज्यो।” जो उपयुक्त लगे वैसे किया जा सकता है। मानमलजी ने आज्ञा शिरोधार्य की। वे 'आतमा' गये। वहां जाकर उन्होंने डॉक्टर को उचित सलाह दी। उनके परामर्श में अनुभव पूर्ण समाधान झलक रहा था। उनके बताए अनुसार करने पर मल निष्कासन हुआ। मुनिश्री गणेशमल जी (लाछुड़ा) ने परिष्ठापन कार्य किया। उनके वस्त्रों का प्रक्षालन किया। मानमलजी ने वस्त्र धुलवाए। स्वस्थता के बाद साधन चालक बनकर मानमलजी ने उनको राजनगर पहुंचाया।

27 समण श्रेणी में84

उपासक अवस्था में उपासक मानवमित्रजी जैन विश्व भारती स्थित एक कुटिया में निवास करते थे। एक दिन प्रातःकाल गमन योग करते हुए गुरुदेव तुलसी सेवाभावी मुनिश्री चम्पालालजी के चौकिए पर पधारकर पुनः भिक्षु विहार पधार रहे थे। उस समय गुरुदेव ने मानवमित्र जी को संबोधित कर दर्शन करने के लिए फरमाया। उस समय मानवमित्र जी पारणा कर रहे थे। पारणा करते ही शीघ्र वे गुरु चरणों में हाजिर हो गए। पूज्यवर ने अमृत वर्षा करते हुए फरमाया— “समण दीक्षा लेवो तो थारै कांई अटकै।” मानवमित्रजी ने निवेदन किया गुरुदेव! मैंने जो त्याग प्रत्याख्यान ले रखे हैं उनको विलीन करना नहीं चाहता। इसके अलावा कोई कठिनाई नहीं है। गुरुदेव ने फरमाया इस विषय में तुम तुम्हारी इच्छानुरूप आचरण कर सकते हो। तब मानवमित्र जी समण दीक्षा लेने के लिए समुद्यत हो गए।

28 सुणी बात.....नहीं स्वीकारी.....86

जैनधर्म तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षार्थी के तैयार होने पर भी अभिभावकों की अनुमति के बिना दीक्षा नहीं हो सकती। गुरुदेव की दृष्टि के अनुसार मानवमित्रजी लाडनूं से सरदार शहर पहुंचे। बड़े भाई नगराजजी व अनुज बच्छराजजी आंचलिया से दीक्षा की आज्ञा मांगी। उस समय नगराजजी ने मना कर दी। तब परमपूज्य गुरुदेव ने दोनों भाइयों के नाम जो संदेश भिजवाया उसे यहां अविकल रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है—

अर्हम्

मानवमित्र— भाई मानमलजी आंचलिया को अब हम गृहस्थ पर्याय से ऊपर उठाकर समण बनाना चाहते हैं। इसमें व्यक्तिगत लाभ तो है ही संघ का लाभ भी है। भाई नगराज बच्छराज का कर्तव्य है कि वे केन्द्र के इंगित को समझे और सहर्ष बिना किसी विलंब के भाई को सानंद सकुशल घर से विदा कर दें।

पुनश्च संघहित वंचक विनीत श्रावक परिवार को अधिक कहने की क्या अपेक्षा होगी?

21.10.92

आचार्य

तुलसी

इस संदेश को पढ़कर मुझे लगा गुरुदेव तुलसी को मानवमित्रजी की अर्हता पर कितना भरोसा था। आचार्यश्री भिक्षु ने जैसे हेमराजजी को समझाकर शादी का त्याग करा दिया और पूर्ण रूप से दीक्षा के लिए वे तैयार हो गए। आचार्यश्री तुलसी ने संघहित की दृष्टि से परिवार को समझाकर मानवमित्रजी की समण दीक्षा के लिए सुन्दर माहौल बना दिया। धन्य होते हैं वे शिष्य जिनके लिए स्वयं सुगुरु इतना प्रयत्न करते हैं।

29 मोच्छव रै दिन.....88

बीदासर मर्यादा महोत्सव के अवसर पर माघशुक्ला सप्तमी के दिन परमपूज्य गुरुदेव श्री तुलसी ने मेरा (साध्वी मधुस्मिता) चतुर्मास 'इन्दौर' के लिए घोषित किया। दूसरे दिन दोपहर में पूज्यवर ने हम

साध्वियों को अपनी कल्याणकारिणी सन्निधि प्रदान की। कृपापूर्ण दृष्टि से मुझे आगे बुलाया और फरमाया— “कल हमने तुम्हारा चतुर्मास ‘इन्दौर’ कहा था किन्तु अब उधर नहीं जाना है। साध्वी कस्तूरांजी राजनांद गांव से आ रही है, वो संभाल लेगी। तुम अभी हमारे साथ रह जाओ। सरदार शहर चलो।” इस अयाचित महर नजर को पाकर मेरा रोम-रोम पुलकित हो गया। मघवा शताब्दी का सुनहरा मौका एवं मातुलमुनिश्री मानवमित्रजी की ऐतिहासिक समण दीक्षा दिखाने के बाद आचार्यवर ने हमको जयपुर चातुर्मास करने के लिए विहार करवा दिया।

30 आठू सुत बधुआं.....89

मानवमित्रजी ने संवत् 2005 में परमपूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के श्री मुख से आजीवन शादी करने का परित्याग कर लिया था। वे बाल ब्रह्मचारी रहे। वे पांच भाई थे। उनके शेष चारों भाई विवाहित थे। सोहनलालजी, शुभकरणजी, नगराजजी एवं बच्छराजजी के क्रमशः एक, दो-दो और तीन पुत्र थे। उन सबकी शादियां हो चुकी थीं। चारों भाइयों के आठ पुत्र और आठ पुत्रवधुएं थीं। दीक्षा से पूर्व मानवमित्रजी वैरागी बनकर जब अपने घर पहुंचे तब उन्होंने अपने संविभाग के धन को आठ भागों में विभक्त कर आठों बधुओं को अपने पास बुलाया और अपने हाथों से सबको वितरित कर स्वयं परिग्रह के भार से मुक्त हो गए।

31 दो हजार.....चाह पुराइ 91

आचार्य भिक्षु के अभिनिष्क्रमण दिवस का ऐतिहासिक अवसर, गधैया जी का श्री समवसरण, मन भावन मंगलक्षण आचार्यप्रवर ने कृपामृत बरसाते हुए दीक्षार्थी मानवमित्रजी के लिए फरमाया— “ये तो बने बनाए साधु हैं इनको क्या दीक्षा देनी है? न जाने कितने साधुओं को इन्होंने पछेवड़ी पहनाई है।”

मुनिप्रवर महाश्रमण जी ने कहा— मेरी दीक्षा में इनका बड़ा योगदान है। सबसे पहले दिल्ली ले जाकर गुरुदेव के दर्शन इन्होंने करवाए। घरवालों से दीक्षा की आज्ञा लेनी एवं दीक्षा के सारे अन्य कार्य इन्होंने किए। गुरुदेव तुलसी ने फरमाया— “थे भी ध्यान रखाया।”

आज वर्षों का संजोया सपना साकार होने जा रहा था।
दीक्षार्थी मानवमित्रजी खड़े हुए और उन्होंने अपनी भावना जीवन नैया
के कर्णधार गुरुचरणों में समर्पित की—

सितारों का मेला लगता है किसी दिन,
जन्नत में सोया जगता है किसी दिन।
कभी तो आती है जीवन में अनमोल घड़ियां,
ढलती है सिपी में जब मुक्ता की लड़ियां।।

सचमुच आज मेरे जीवन में अनमोल घड़ियां उदित हुई हैं। 12
वर्ष की उम्र में सपना संजोया था वह आज 56 वर्ष के लम्बे अन्तराल के
बाद साकार होने जा रहा है। यह परमपूज्य गुरुदेव की असीम अनुकंपा
का प्रतिफल है कि 68 बसंत पार करने के बाद भी मुझे दीक्षित होने का
सुअवसर मिल रहा है। वरना बन्धुओं! आज के युग में पुत्र भी सेवा से
मुंह मोड़ लेते हैं। इस उम्र में मुझे संयममय जीवन जीने का संघ में
सुअवसर प्रदान किया है। यह गुरु कृपा का ही प्रतिफल है। भला जिस
व्यक्ति पर गुरु की इतनी बड़ी कृपा हो जाए उसके सौभाग्य का क्या
कहना? गुरु कृपा से व्यक्ति कहां से कहां पहुंच जाता है। स्वयं गुरुदेव
ने गुरु कृपा का प्रभाव बताते हुए गाया है—

ओ म्हारा गुरुदेव! भव सागर पार पुगावो जी.....

रज कण नै करो सुमेरु जल कण ने जल निधि हेरु

पंगु ने पहाड़ चढ़ावो जी! ओ म्हारा.....

वास्तव में यह बड़े आश्चर्य की बात नहीं है। गुरुकृपा से
असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं, ऐसे मेरे भी कई अनुभव हैं।

हर कठिन समस्या का हल गुरु की आस्था,

दिग्भ्रान्त मनुज को मिल जाता है रास्ता।

गुरुदेव द्वीप है, शरण, प्रतिष्ठा, गति है,

गुरुदृष्टि जगत् में सबसे बड़ी प्रगति है।।

इस दृष्टि से मैं अपने आपको परम सौभाग्यशाली मानता हूँ कि
इस कलियुग में ऐसे चारित्र चूड़ामणी गुरु मिले हैं जो इस क्षणभंगुर
संसार से मुझे उपरत कर रहे हैं। गुरुदेव! इस क्षणभंगुर संसार की
लीला मैंने अपनी ही आंखें से देखी। मेरे दो बड़े भाइयों का

देखते—देखते स्वर्गवास हो गया। प्रकृति का अटल नियम है जो आता है उन्हें जाना ही पड़ता है। मैंने भी न चाहते हुए अपने दो सगे भाइयों की अर्थी को कंधा दिया किन्तु मुझे आज इस बात की प्रसन्नता है कि उन्हीं दो भाइयों के प्रतिनिधि भतीजों ने अपना हाथ का सहारा देकर श्री समवसरण के द्वार तक पहुंचाया है। और राम भरत रूपी दोनों भाई अंगुली पकड़ कर सदेह स्वर्ग पहुंचा रहे हैं। मैं स्वर्गीय सुखों का आनंद लूटने के लिए श्री चरणों में समर्पित हो रहा हूं। स्वर्ग क्या होता है यह मैं नहीं जानता पता नहीं स्वप्न देख रहा हूं या साक्षात है।

अब मैं मैत्री के इस धरातल पर खड़ा होकर पारिवारिक जनों से जन्मभूमि वासियों से और पूरी मानव जाति से करबद्ध होकर शुद्ध अन्तःकरण से क्षमायाचना करता हूं। प्रभो! मेरी दो भाणजियां इस धर्मसंघ में अपना आत्मविकास करती हुई संघ की प्रभावना कर ही हैं। मुझे भी ऐसा वरदान दें कि गुरु चरणों में बैठकर अपनी आत्मा की खोज करूं और संघ सेवा में योगदान दूं।

जब मानवमित्रजी की दीक्षा घोषित हुई धर्मसंघ के वरिष्ठ संतों को बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने दूरस्थ होकर अपनी मंगलभावना प्रेषित की।

32 कण—कण सौरभ छाई.....92

गुरु की दृष्टि में दौलत होती है। कहा जाता है—

जहां तुम्हारे चरण टिके माटी चन्दन बन जाए।

जहां तुम्हारी दृष्टि टिके अनहोना होना बन जाए।।

जिस श्रेणी में व्यक्ति दीक्षित हो रहा है, उसमें दीक्षित होते ही उसका प्रमुख उसे बना देना यह आश्चर्यकारी घटना है। किन्तु आचार्यश्री तुलसी ने अपने शासनकाल में अनेक ऐसे निर्णय लिए, घोषणाएं की जिनसे उनको साहस का महाहिमालय कहा गया। अपने विश्वस्त, श्रद्धालु, सेवाभावी, आत्मार्थी उपासक श्री मानमलजी आंचलिया को समण दीक्षा प्रदान करने के तुरंत बाद आचार्यप्रवर ने उनके लिए 'समण नियोजक' की घोषणा की यह बात सर्वत्र खुशबू की तरह फैल गई। मुनि श्री सुमेरमलजी (लाडनू) वर्तमान मंत्रीमुनि उस समय कलकत्ता महासभा भवन विराज रहे थे। उन्हें जब इस बात की

जानकारी मिली उन्हें बहुत खुशी हुई। अपनी मंगलभावना दायित्व बोध के साथ समण मानव प्रज्ञाजी के पास प्रेषित की।

33 मुनि दीक्षा.....टकरायी 94

बाल ब्रह्मचारी बनकर वृद्धावस्था तक घर में रह जाना और गुरुदेव की असीम अनुकम्पा से 70 वर्ष के आस पास मुनि बन जाना बड़े सौभाग्य की बात है। ऐसा अवसर किसी किस्मत वाले व्यक्ति के लिए ही सुलभ हो सकता है। वह अवसर श्रीमान् मानमलजी आंचलिया को उपलब्ध हो रहा था, इस बात की जानकारी धर्मसंघ के दूरस्थ रत्नाधिक संतों को जब मिली तो उन्होंने अपनी मंगलकामनाएं प्रेषित कीं।

मुनिश्री जूंगरमलजी ने साधिक 18 साल की अवस्था में अपनी पत्नी लाधुजी के साथ उभरते यौवन में प्राप्त भोगों को टुकराकर परमपूज्य कालूगणी के कर कमलों से दीक्षा स्वीकार की। जब मानवमित्र जी मुनि बने तब मुनिश्री ने अत्यधिक प्रसन्नता प्रकट करते हुए शुभाशंसा की।

34 गुरुवर करी बड़ाई.....97

मुनि श्री मानवमित्र जी एक सेवाभावी संत थे। उन्होंने मुनि दीक्षा लेते वक्त पूज्य गुरुदेव से दो वरदान मांगे। उसमें दूसरा वरदान था— मुझे सेवा में नियुक्त करवाने की कृपा करो। तब परमपूज्य गुरुदेव श्री तुलसी ने अपने श्रीमुख से कहा— “सेवाथे कद कोनी करी? आधी रात में तयार रह्या हो।” दीक्षित होने के बाद पूज्य गुरुदेव ने उनकी सेवाभावना को ध्यान में रखते हुए सर्वप्रथम मुनिश्री जंवरीमलजी के साथ चाड़वास भेजा। वहां पर मुनिश्री ने गोचरी, पानी, व्याख्यान सहित सभी कार्य किए। जंवरीमलजी स्वामी के सहवर्ती संत मुनिश्री जोधराज जी अस्वस्थ हो गए। मानवमित्र जी ने उनकी खूब सेवा की। 28 नवम्बर 1994 को चाड़वास में उनका स्वर्गवास हो गया। उनके देवलोक गमन पर पूज्य गुरुदेव ने कृपापूर्ण शब्दों में एक सोरठा फरमाया—

“जंवरी मुनि रो जोग जोधो बाजी जीतग्यो।

सेवा रो संयोग मिलग्यो मानवमित्र नै।।

ये थे गुरुदेव के श्लाघनीय शब्द मुनिश्री मानवमित्रजी के प्रति।

35 मोत्यां री फसल उगाई.....99

मुनिश्री मानवमित्रजी ने मुनिश्री धर्मरूचि जी के साथ छापर में चाकरी की। वहां वे ठिकाने के सारे कार्य प्रसन्नता पूर्वक करते। प्रतिदिन 20 पात्र पानी अकेले ले आते। खुद एकान्तर तप करते थे, इसके बावजूद सबको खिलाने पिलाने के बाद स्वयं पारणा करते। वृद्ध संतों के वस्त्र प्रक्षालन का जिम्मा उनका नहीं था, फिर भी वे यह कार्य करते। तुम वस्त्र प्रक्षालन क्यों करते हो? अग्रणी संत के पूछने पर वे कहते— मैं व्यवस्था की दृष्टि से नहीं निर्जरा के लिए कर रहा हूं। एक काम व्यवस्था की दृष्टि से किया जाता है और एक निर्जरा की दृष्टि से सेवा भावना से किया जाता है। इसमें दिन रात का अन्तर होता है। मुनिश्री ने केवल सकाम निर्जरा का मूल्य पहचाना ही नहीं था। शुद्ध भाव से सकाम निर्जरा करके उन्होंने मोतियों की फसल उगाई। अर्थात् कल्याणकारी पुण्यों का अर्जन किया।

36 सेवाभावीलुलताई.....102

मुनि योगेन्द्रजी ध्यान साधना में संलग्न रहे। काफी वर्षों तक विशेष साधना का जीवन जीया। कुछ वर्ष गण मुक्त रहकर भी साधना की। आखिर संवत् 2054 फाल्गुन शुक्ला 13 को आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के निर्देशानुसार मुनिश्री सागरमलजी ने उनको पुनः संघ में सम्मिलित कर लिया। उनका सिंघाड़ा योगेन्द्र मुनि के सहयोग के लिए नियुक्त किया गया। कुछ समय तक मुनिश्री सुमेरमल जी का सिंघाड़ा उनकी सेवा में रहा। बाद में मुनि सुव्रत जी और मुनि मानवमित्रजी को उनकी सेवा में भेजा गया। मुनि मानवमित्र जी ने स्वयं वृद्ध होते हुए भी योगेन्द्र मुनि की अग्लान भाव से खूब शारीरिक सेवा की। दिन में 10-10 बार पंचमी परिष्ठापन करना, उठाना, बैठाना आदि कार्य पूरे मनोयोग से करते। उनकी इस निष्ठापूर्वक सेवा वृत्ति को देखकर मुनिश्री चम्पालाल जी ने पूज्य गुरुदेव को इस संदर्भ में लिखकर निवेदन करवाया— “मुनि मानवमित्र जी ने इतनी सेवा की है, इनको पारितोषिक मिलना चाहिए।”

मेरा ऐसा मानना है कि वे जिस किसी की सेवा करते अपना शरीर मानकर सेवा करते। ऐसी सेवा महान निर्जरा का हेतु है।

37 सादर करी सिलाई.....103

हमारे धर्मसंघ में साधवियों की कला साधना प्रसिद्ध है। साधवियां आचार्यों के उपकरणों की सिलाई रंगाई आदि कार्य सम्पादित कर अपने सौभाग्य की श्री वृद्धि करती हैं। अपने वस्त्रों की सिलाई और पात्रों की रंगाई के साथ-साथ मुनिवृन्द के इन कार्यों में सहभागिता कर वे निर्जरार्थिता की वृत्ति का परिचय देती आई है। साधु समुदाय में मुनिश्री मानवमित्र जी के सिवाय दूसरा नाम मैंने आज तक नहीं सुना जिन्होंने सैकड़ों चोलपट्टे सैकड़ों मोजे और अनगिन पछेवड़िया संतो की सिलाई की हो। किसी का काम करना और उसे सम्मान पूर्वक करना यह उनकी विरल विशेषता थी। उन्हें जब देखो सिलाई करते हुए ही मिलते थे। उनको निरन्तर सिलाई कार्य में संलग्न देखकर एक बार आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने कृपा बरसाते हुए कहा— “मुनि मानवमित्र जी दरजी है।”

38 सार निकाल्यो.....106

मुनिश्री मानवमित्रजी ने साधु का एक विशेषण ‘तपोधन’ को सार्थक कर दिखाया ऐसा मेरा मानना है। गृहस्थ अवस्था में ही उन्होंने संवत् 2000 में चतुर्दशी का उपवास करना शुरू किया जो लगातार 40 वर्षों तक निरन्तर चला। इस प्रकार शुक्ला छट्ठ का उपवास भी 28 वर्षों तक वे नियमित करते रहे। प्राप्त जानकारी के अनुसार सं. 2041 के भाद्रव महीने में उन्होंने एकान्तर तपस्या प्रारंभ की जो 9 वर्ष तक अनवरत चली। उसके बाद करीब एक वर्ष जितना समय कारण अवस्था में (कई बार मिलाकर) एकान्तर स्थगित रहा। शेष जीवन पर्यन्त एकान्तर चला।

39 काठमाण्डू कलकत्तै.....113

सुजानगढ़ मर्यादा महोत्सव पर समणी स्वस्थप्रज्ञा को श्रेणी आरोहण करवाया गया और उन्हें मेरी सहवर्तिनी साध्वी भी बना दिया गया। उस वर्ष का हमारा चातुर्मास काठमांडू घोषित हुआ उसके बाद लगातार तीन चातुर्मास कलकत्ता करवाए गए। हमारी दूर देश की और

विदेश की यात्रा हुई इसकी उनके मन में अत्यधिक प्रसन्नता थी किन्तु अब वे स्वयं मुनि बन चुके थे इसलिए मार्ग सेवा का अवसर अनुपलब्ध हो गया। चूंकि उन्हें पैदल यात्रा का बड़ा शौक था। काठमाण्डू और कलकत्ता दोनों जगह हमारे संसार पक्षीय ननिहाल हैं। हम मामा के घर चलकर पहुंचे और वे पथ सेवा नहीं कर सके इस बात की उनके मन में रह गई। जब हम कलकत्ता पहुंच गई, तब उन्होंने एक गीत बनाकर श्रावकों के साथ भेजा वह गीत इस प्रकार है—

म्हारी भाणेज्या भिक्षुगण में है— 2 गण में है संयम रण में है
गया वीर भूम भ्रमण में है (म्हारी) मधुस्मिता स्वरथ प्रभा
भी दोनूं ही बड़ी विलक्षण है, म्हारी.....

- 1 पहलो वर्षावास विदेश में एक मामे परिकर में है।
चोथो पावस हबड़े में नानेरो सोहन घर में है।।
- 2 साधु मामे ने भूल गया वह शहर बड़े बन्दर में है।
मैं मोज मनाऊं गंगा में न्हाऊं गुरु मूरत म्हारै अन्दर में है।।
- 3 याद कर्यो जब काठमांडू की यात्रा दृश्य दिखावण में है।।
योग मिल्यो म्हारै कच्छ के रण को बो ही भाग्य लिखावण में है।।
- 4 समाचार मौखिक पत्रां में संघ री महिमा बढ़ावण में है।
श्रम तो भले ही अधिक होवै (पास) प्राणा रो अर्क चढ़ावण में है।।
- 5 गौरव नात्या ने सात्विक साचो निज निजरां निरखावण में है।
मैं तो काना सुणकर राजी आ शक्ति गुरु सिखावण में है।।
- 6 सांसार्या ने सुख नहीं क्यां रो माने मोह बंधन में है।
राज दिरा केकैई भरत ने पण सीता ने सुख वन में है।।
- 7 मिली हुसी एक कापी आपने घटना पथ रचावण में है।
समय दुर्लभ है जाणू फिर भी ताण पड़े के कहवण में है।।
- 8 प्रसन्नता मन की अपणे बस नियति कर्म उरावण में है।
निश्चल भाव स्यूं करो साधना गुरु पुण्य प्रसाद खावण में है।।
- 9 'मानवमित्र' मिलणे री धुन में ढाल गावण री मन में है।
पाकी वय में नदी किनारे रूख लागे तिरण में है।।

40 धर्मसंघ रा गौरवशाली.....115

मुनिश्री मानवमित्र जी राग रागिनियों के विशिष्ट ज्ञाता थे, यह तो सर्व विदित तथ्य है किन्तु प्राचीन रागों में रचना करने में भी कुशल थे। तेरापंथ इतिहास का उनको इतना गहरा ज्ञान था जिसको उन्होंने 35 पद्यों के गीत में गुंफित किया। मुनि थिरपाल जी से लेकर अनेक तपस्वियों के तप का वर्णन करते-करते नवमासी तप करने वाली साध्वी मुखांजी और छःमासी 6-7 बार करने वाली साध्वी झूमांजी तक का सरसता के साथ वर्णन किया है।

41 आत्मालोचन.....ढालां दो रचवाई.....124

मुनिश्री मानवमित्रजी आत्मार्थी संत थे। वे अपने जन्मदिन आदि पर प्रायः अपना आत्मावलोकन करते, कुछ संकल्प स्वीकार करते और आगामी समय को अधिक सार्थक करने की दृष्टि से चिन्तन करते। ऐसा उनकी डायरियों का निरीक्षण करने पर अनुभव हुआ। कुछ प्रमाण उन्हीं की भाषा में प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

नम्बर- 1

जय भिक्षु

संवत् 2062 महाबदी 14 आज मेरा जन्मदिन है। 81 वर्ष सम्पन्न कर 82वें वर्ष में प्रवेश करता हूँ। अगले जीवन में साधना में विकास करना है। लम्बी तपस्या व अधिक ज्ञान ध्यान तो नहीं कर सकता। कषाय, अशुभ योग, प्रमाद आदि बुरे परिणामों से बचने की कोशिश करूंगा। मैं क्रोध को असफल करने का अभ्यास करूंगा। मैं अहम् किस बात का करूंगा? मेरे में कोई विशेषता नहीं है। सामान्य साधू हूँ। मैं माया, कपट छल से बचता रहूंगा। निष्पत्ति चाहे कैसी भी आए इसकी परवाह नहीं करूंगा। उपकरण आदि वस्तुओं का संग्रह कम करने का ध्यान रखूंगा। मैं ऊनोदरी करने में असमर्थ हूँ, परन्तु अधिक लोलुप नहीं बनूंगा। आहार के समय खादिम स्वादिम दो आहार मांग कर नहीं लूंगा। उपयोग सहित छोटे बड़े संत बिना गलती उपालंभ देने पर भी तहत् शब्द कहने का अभ्यास करूंगा। किसी संत या गृहस्थ ने कुछ कह दिया तो सहन करूंगा इज्जत का प्रश्न नहीं बनाऊंगा।

किसी के साथ आग्रह नहीं करूंगा। बात को आई गई करने का भाव रखूंगा। दूसरों की निंदा में रस नहीं लूंगा। दोष अपना ही देखूंगा। सत्य में सम्पूर्ण विश्वास रखूंगा। प्रतिक्रमण के बाद सरसरी दृष्टि से इन सूत्रों का अवलोकन करूंगा। याद रखकर बदी 14 को इन नियमों को अच्छी तरह पढ़ूंगा। विचारों को हर समय शुद्ध रखूंगा।

मुनि मानवमित्र

2062 महाबदी 14

नम्बर— 2

आज धनतेरस है। शायद पिताजी का जन्मदिन है। संसारपक्षीया माताजी कहा करती थी तुम्हारे पिताजी आज के दिन जनमे इसलिए इनका नाम धनराज रखा। माताजी का नाम मोहर देवी था। मोहर एक सोने का सिक्का होता है। मैं धन मोहर का पुत्र हूँ। मेरे को इतना बड़ा धन प्राप्त हुआ है। स्वामी भीखणजी के शासन में मुनि दीक्षा का योग इस परिवार में जन्म लेने से ही यह धर्म धन मिला है। इसकी मुझे बड़ी प्रसन्नता है। मेरे भाई भतीजे भी संसार में अच्छे धनवान हैं। पर मेरे जैसा धन उनके पास में नहीं है। गुरुदेव ने मेरा नाम मानवमित्र रखा और मुझे प्राणी मित्र बना दिया। अभी तक मैंने किसी का यह नाम सुना नहीं। इस नाम को सार्थक बनाऊंगा। ऐसी मेरी पूर्ण भावना है।

मानवमित्र

विश्वभारती

साल 2063

काती बदी— 13

इस प्रकार अपने आप को देखना, परिष्कार करना, संवारना यह क्रम तो जारी था ही, जब आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने बीदासर में मर्यादा महोत्सव करवाया तब हमें भी गुरुदेव की पावन सन्निधि उपलब्ध हुई। हम (मधुस्मिता, स्वस्थप्रभा) यदा कदा मुनिश्री की उपासना का लाभ लेती रहती थी। एक दिन मुनिप्रवर ने कहा— मुझे पुरानी राग में एक आत्मचिन्तन के लिए गीत बना दो। उसके लिए कुछ

भाव भी उन्होंने बताए। रागिनी भी धराई। मैंने गीत बनाकर निवेदन कर दिया तब कहा— एक इच्छा और है। मैंने कहा— फरमाओ। मुनिश्री बोले— इसी राग में सीमन्धरजी स्वामी जी का एक स्तवन बना दो। सीमन्धर भगवान के दर्शन की उत्कट अभिलाषा है। अगर आपको यहां समय कम मिल रहा है तो रास्ते में बनाकर फिर भिजवा देना। मैंने स्वीकृति दी। बालोतरा पहुंचने पर मैंने वह गीत धराकर मुनिश्री के पास पहुंचा दिया। वे दोनों गीत क्रमशः यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

लय — मैं तो थारा डेरा.....

आत्मालोचन रै दर्पण में देखूं मैं उठ, ढलती रात नित होतां ही प्रभात
आत्मालोचन..... ॥

क्रोध नाग स्युं दूरी पूरी रख स्युं मैं, म्हारो हो जासी कल्याण।
मनै मिल ज्यासी निर्वाण ॥1॥

अहंकार रै गज पर नहीं चढूंला मैं, पैदल चलणै रो अभ्यास।
पाऊं मृदुता रो मिठास ॥2॥

भोलै बालक री निश्छलता अपणाऊं, सारा मिट ज्यासी संक्लेश।
शुभ भावां में रहूं हमेश ॥3॥

धन, परिजन री ममता तज घर छोड्यो मैं चाखूं संयम रस स्वाद।
कोई द्रव्य नै आवै याद ॥4॥

कल री चिन्ता करै न मुनिवर आ वाणी भारवी तीर्थकर भगवान।
पल—पल इण रो पूरो ध्यान ॥5॥

एगोहं परिकर री चिन्ता व्यर्थ करूं, जग में कुण है किण रो त्राण।
समझूं ओ साचो विज्ञान ॥6॥

मैत्री मुदिता, करुणा सुमनां रो पहरूं, मैं सुन्दर हार।
ओ है साचो सिणगार ॥7॥

समणोऽहं समणोऽहं स्मृति सरसाऊं मैं, उपशम सरवर में कर स्नान।
सार्थक करल्युं निज अभिधान ॥8॥

सुख रो सागर भीतर में लहरावै है, देखुं आंख मूंदकर रोज।
हटसी राग द्वैष रा खोज ॥9॥

पंचोलै पंचोलै दृढ़ परिणामां हो, मुनि गणपत राम
 पारण आयंबिल अभिराम ।।10 ।।
 तयांलिस वर्षा एकान्तर तप तपियो, मुनि गुलहजारी लाल ।
 सीमा द्रव्यां री कमाल ।।11 ।।
 अै आदर्श सामनै राखूं निशदिन में होसी हिवडै में उजास ।
 मन में पुरो है विश्वास ।।12 ।।
 जैन धर्म तेरापंथ शासन नन्दनवन, पाया महाप्रज्ञ महाभाग ।
 जाग्यो है म्हारो सौभाग ।।13 ।।
 मघवा प्रतिकृति महाश्रमण युवराज मिल्या, बांचै सरस व्याख्यान ।
 आवै सप्तम गुणठाण ।।14 ।।
 गुरु तुलसी री देन बड़ी महाश्रमणी जी, गण में माता रै समान ।
 पोखै और करै निर्माण ।।15 ।।
 ज्ञाता द्रष्टा भाव बढ़ाऊं सुख पाऊं, जुड़सी चेतना स्यूं तार ।
 होसी बेड़ो म्हारो पार ।।16 ।।

2

लय— मैं तो थारा डेरा

सीमंधर प्रभु थारै चरणां चित्त लाग्यो जुडग्यो चेतना स्यूं तार ।
 करणो चाहूं साक्षात्कार दर्शन किण विध पाऊं शीश नमाऊं मोरा
 स्वाम ।।
 आप प्रभु महिमा मण्डित गुण सागर हो, कर फैलाऊं बाल समान ।
 मैं नहीं बुद्धिमान विद्वान ।।1 ।।
 भक्ति भाव स्यूं लयमय स्तवना गाऊं मैं, फल फूलां रो नहीं उपहार ।
 केवल श्रद्धा री झणकार ।।2 ।।
 राग द्वेष री सेना दूर भगाई थे, जीत्यो क्षमाशूर बण जंग ।
 आत्म विजेता अभय असंग ।।3 ।।
 अन्तर्यामी अखिल विश्व नै जाणो जी, थांरो ज्ञान है अनन्त ।
 थांरी शक्ति है अनन्त, परमानन्द है अनन्त ।।4 ।।
 चौतिस अति शोभता प्रभु थांरा वाणी रा गुण है पैंतीस ।
 चौसठ इन्द्रां रा थे ईश ।।5 ।।

काया ऊंची धनुष पांच सौ प्रभु थारी, आगम ग्रन्थां रै अनुसार ।
 हर्षित होस्युं नयण निहार ।।6 ।।
 स्फटिक सिंहासन आप विराज्या अति दीपो, सुन्दर कंचन वरणी काय ।
 सुर नर लागै झुक-झुक पाय ।।7 ।।
 धर्म देशना रै अवसर पा चरण शरण, तरु भी बण ज्यावै अशोक ।
 पास्युं परमानन्द विलोक ।।8 ।।
 अमर दुलावे श्वेत चंवर प्रेरक बणकर, झुकणो जीवन रो विज्ञान ।
 कोमल बण ज्याऊं तजमान ।।9 ।।
 जन्मजात वैरी भी सन्निधि पा थारी, भूलै वैर भाव तत्काल ।
 वाणी सुणकर हुवै निहाल ।।10 ।।
 ध्यानलीन थारी मुखमुद्रा मन भावन, देवै समता रो उपदेश ।
 त्रिभुवन तारक हो तीर्थेश ।।11 ।।
 मोर पपैया ज्युं म्हारो मन तरसै है, प्रभुवर! कांई करुं उपाय ।
 पर्वत नदियां आड़ी आय ।
 इसड़ी शक्ति नहीं मुझ माय ।।12 ।।
 देव मित्र रो मनै नहीं संयोग मिल्यो, जो ले ज्यावै थारै पास ।
 मेटूं जनम-जनम री प्यास ।।13 ।।
 एकर भी क्षण भर भी साहिब! मिल ज्यावै चरण कमल रो पुण्य पराग ।
 तो जग ज्यावै म्हारो भाग ।।14 ।।
 मन दरियै में जिज्ञासा रो ज्वार उठै, उत्तर पावण रो उत्साह ।
 प्रभुवर पुरी करद्यो चाह ।।15 ।।
 सूत्र वचन नै शिरोधार्य कर मैं चालूं, पतली पाडूं च्यार कषाय ।
 बरतै निर्मल अध्यवसाय ।।16 ।।
 सुकृत कर्यो कित्तो अब आगै के करणो, नित उठ सोचूं ढलती रात ।
 लक्ष्य बणाऊं मैं अवदात ।।17 ।।
 पर गुण लखकर मोद मनाऊं गुण गाऊं, खिलसी चेतना रो फूल ।
 वातावरण बणै अनुकूल ।।18 ।।
 चंचल मनडै नै वश करके मैं विचरुं, होसी सपना सै साकार ।
 पास्युं मंजिल पर अधिकार ।।19 ।।

ज्ञान कटारी कसकर बांधूं मैं प्रभुजी, म्हारै कर में तप तलवार ।
कर स्यूं मोट कर्म संहार ।।20 ।।
शरणागत प्रतिपालक! करुणा केतन हो, “मानवमित्र” करूं नित जाप ।
मिटसी सारा भव संताप ।।21

42 सात पद्य लघु 127

मुनिश्री मानवमित्रजी पहले गाते भी उच्चस्वर से थे । अनेक साधियों, समणियों और मुमुक्षु बहिनों को खूब रागें सिखाई भी थी । अब उस रूप में गाने और सिखाने का सामर्थ तो नहीं रहा, फिर भी अपने लिए अन्तिम गीत बनवाने की इच्छा थी । मेरे निवेदन पर उसके लिए धीमे स्वर से “प्यारी लागै कुल बहु” रागिनी धराई । जब मैंने छोटा सा गीत बनाकर दिखाया तो कहा— इसे मैं गाता रहूंगा । आपने अच्छा बनाया है यों कहकर अपनी डायरी में लिखवा लिया । वह गीत इस प्रकार है—

लय – प्यारी लागै कुलबहु
जीवन जल रो बिन्दवो जी आतमराम,
चेतन म्हारा खिण भर में होसी विलीन,
दिवलो जोड़ ज्ञानरो जी आतमराम ।।
रत्नत्रयी मिली भाग्य स्यूं जी आतम राम,
चेतन म्हारा शक्ति रो करूं उपयोग,
संयम पलसी सांतरो जी आतमराम ।।1 ।।
क्रोध, मान, माया, लोभ ए च्यार कषाय,
चेतन म्हारा पतली करण रो उपाय
न्हाऊं उपशम सरवरिये जी आतम ।।2 ।।
गुणीजन रा गुण गायनै हूं दिनरात,
चेतन म्हारा हर्षित होऊं अणमाप,
रसना सार्थक हो रही जी आतम ।।3 ।।
निर्मल ध्यान सज्जाय स्यूं जी,
चेतन म्हारा धोल्यां पाप तमाम,
मुक्ति रो मिटसी आंतरो जी आतमराम ।।4 ।।

पल—पल सफल बणायल्युं जी आतमराम,
 चेतन म्हारा करणी करुं निष्काम,
 बन्धन सारा टूटसीजी..... ।।5।।
 अनशन री भावुं भावना जी आतमराम,
 चेतन म्हारा दृढ़ता स्युं होसी सिद्ध काम,
 विजय डंको बाजसी ।।6।।
 नन्दनवन भिक्षुगण मिल्यो जी आतमराम,
 चेतन म्हारा महातपसी गण सम्राट,
 दीपै नभ में चान्द ज्युं जी ।।7।।
 गुरु किरपा रो बरस्यो मेवलो जी आतमराम,
 चेतन म्हारा तन मन पुलकित आज
 मानवमितर संत है जी आतमराम ।।8।।

43 नया पूज्य श्री.....128—34

इतिहास पढ़ने पर ज्ञात होता है— जब आचार्य किसी पर अनुग्रह करवाते हैं तो बोझ, भार, चाकरी, विगय वर्जन आदि की बगशीश प्रदान करते हैं। किन्तु किसी स्थिरवासी वृद्ध संत को निकटस्थ संतों को भेजकर चतुर्मास की सुन्दर रचना दिखाना। महोत्सव में भी साथ रखवा लेना अपने दीक्षा प्रदाता को 'मंत्री मुनि' के पद पर प्रतिष्ठित करने का अद्भुत कार्यक्रम दिखाना, वी.सी. समणी की दीक्षा आदि आश्चर्यकारी कार्यक्रमों का साक्षी बना देना यह विरल घटना है। महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने मुनिश्री मानवमित्र जी पर यह विशेष कृपा की। महापुरुष कभी कृत उपकार का विस्मरण नहीं करते। परमपूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने पूज्य गुरुदेव के वचनों को स्मृति में रखते हुए यह विशिष्ट अनुग्रह किया हो, ऐसी मेरी सोच है।

44 सुन्दर युक्ति.....135

आचार्य श्री महाश्रमण जब एकादशमाधिशस्ता बने, उनका पदाभिषेक हुआ तब वैशाख महीना चल रहा थ। अधिक साधु—साध्वियां

उस समय बहर्विहारी थे। महिमामय पट्टोत्सव का कार्यक्रम देखने का सौभाग्य प्रायः सबको मिले, इस दृष्टि से मर्यादा महोत्सव के समय पर पदाभिषेक का कार्यक्रम देखने का सौभाग्य प्रायः सबको मिले, इस दृष्टि से मर्यादा महोत्सवके समय पर पदाभिषेक का कार्यक्रम पुनः रखा गया। साध्वी समुदाय की तरफ से यह कार्यक्रम पंचाचार पोषक हो ऐसा चिन्तन चला। शासन गौरव साध्वी श्री राजीमतीजी ने एक सुन्दर युक्ति सुझाई। जिसमें 11 संकल्प तय किए गए। प्रत्येक संकल्प को 11-11 साध्वियों ने ग्रहण किया। जैसे— एक वर्ष तक

- 11 साध्वियां वर्षीतप करेंगी।
- 11 साध्वियां एकासन वर्षीतप करेंगी।
- 11 दसवे आलियं और आवश्यक सूत्र सार्थ करेंगी।
- 11 आयारो कंठस्थ करेंगी।
- 11 उत्तराध्ययन कंठस्थ करेंगी।
- 11 प्रतिदिन 1000 गाथाओं की स्वाध्याय।
- 11 11 आगम का वर्षभर में वाचन।
- 11 सेवाकार्य के लिए तत्पर रहेंगी। इत्यादि।

साधना और संकल्पों का यह मंगलहार सबको मनोज्ञ लगा। आचार्य प्रवर के अनुग्रह से मुनिश्री मानवमित्र जी को ये सुरम्य रचनाएं देखने को मिली। वे बहुत आनन्दित थे।

45 जगराओ पावस.....139

राजलदेसर मर्यादा महोत्सव पर हमारा (साध्वी मधुस्मिता) अगला चतुर्मास जगराओ घोषित हुआ। हरियाणा और पंजाब क्षेत्र में जाने वाले प्रायः सभी साधु साध्वियों के लिए तीन वर्ष उसी एरिया में विहार करना लगभग निर्णीत था। चतुर्मास के अन्तिम दिनों में हमको आगामी चाकरी के लिए गुरुदेव ने पुछवाया। हम सभी सतियों ने स्वीकृति दे दी। चतुर्मास की सम्पन्नता पर सुजानगढ़ की ओर निर्देशानुसार विहार हो गया। मेरे घुटनों में भयंकर दर्द था अतः गुरुदेव के चरणों में निवेदन करवाया—सीढ़िया चढ़ने की अनुकूलता नहीं है। संभवतः गुरुदेव की दृष्टि लाडलू चाकरी करवाने की थी। दर्द की बात पर गौर करवाकर गुरुदेव ने चाकरी नहीं करवाई। मर्यादा महोत्सव से

कुछ दिन पूर्व हम लोग लाडनू पहुंच गई। मातुल मुनि की उपासना का सुन्दर अवसर उपलब्ध हुआ। उस समय साधियों के सेवाकेन्द्र में साध्वी श्री कमलश्रीजी, जिनरेखाजी और संतों के सेवाकेन्द्र में बहुश्रुत परिषद् के सदस्य मुनिश्री महेन्द्र कुमारजी आदि सेवादायी थे। अगले क्रम में साधियों में साध्वी श्री प्रमोदश्री जी एवं संतों में शासन गौरव मुनिश्री धनंजय कुमारजी आदि संत थे। चारों वर्गों का हम लोगों के साथ संघ प्रभावक मधुर व्यवहार रहा, कृपा रही। मुनिश्री मानवमित्रजी ने मुझे कहा— अगर आपकी यहां चाकरी होती तो मैं परस्पर आहार आदि लेन देन की गुरुदेव से आज्ञा मंगवाता किन्तु थोड़े दिनों के लिए मुनिश्री से आज्ञा प्राप्तकर ऐसा करने का भाव है। मुनिश्री के संकेतानुसार वैसा किया गया। उपकरण आदि का भी आदान प्रदान किया गया।

मुनिश्री का हम दोनों भानेजी साधियों पर बहुत वात्सल्य भाव था। इस प्रवास से पूर्व आचार्य प्रवर की सन्निधि में जब कभी मिलना हुआ हमारे लिए उपयोगी उपकरण अथवा औषध हमें प्रदान करते। स्थान पर आकर जब हम श्रद्धेया महाश्रमणी जी को निवेदन करती तो साध्वी प्रमुखाश्री जी फरमाती— “मामाजी म्हाराज बहुत लाड राखै है।” साध्वी सहज यशाजी द्वारा चोलपट्टे आदि की सुन्दर सिलाई करवाकर मैं मुनिश्री को निवेदन करती, जिसे वे बहुत पसन्द करते थे। उसकी सराहना करते थे। इस बार चोलपट्टे की सिलाई कर मुनिश्री को सविनय आग्रह पूर्वक प्रदान किया गया। लगभग सवा महीने तक इच्छानुसार उपासना, परस्पर लेनदेन तथा दोनों तरफ के सेवाभावी संत साधियों के मधुर व्यवहारों से मुनिश्री को खूब संतुष्टि मिली। समाधि मिली। उन्होंने कहा— “इस बार मैं तृप्त हो गया।” “म्हारा गुरुदेव साक्षात् कल्पवृक्ष है।”

46 वैरागी वैरागण.....140

कर्मठता का विलक्षण निदर्शन था मुनिश्री का जीवन। गृहस्थ अवस्था, श्रमणोपासक अवस्था, समणश्रेणी और मुनि जीवन में उन्होंने निरन्तर श्रम सरिता प्रवाहित की थी। संघ संपदा को बढ़ाने हेतु उनका पुरुषार्थ दीप सतत प्रज्वलित रहता था। जब हमें लाडनू से सरदारशहर की ओर विहार करना था तब विशेष रूप से यह शिक्षा प्रदान की।

साध्वीश्री! जन्मभूमि में चातुर्मास करने के लिए जा रहे हो, ज्यादा से ज्यादा मुमुक्षु भाई बहिनों को तैयार करना। खासकर श्रीमान सुजानमल जी दूगड़ को प्रेरणा देना। मुनिश्री मानवमित्रजी के मन में यह प्रबल भावना थी— परमपूज्य गुरुदेव के ज्येष्ठ भ्राता दीक्षित हो। वे भाईजी महाराज बने। इस हेतु प्रयास करने के लिए उन्होंने सरदारशहर पावस में 15 दोहों में अपनी भावना लिखकर प्रेषित की। हमने प्रयास भी किया किन्तु उनकी विद्यमानता में तो उनका वह स्वप्न साकार नहीं हो सका। इससे पूर्व तेरापंथ के पूर्ववर्ती अन्य आचार्यों की मातुश्री की तरह महामहिम आचार्यश्री महाश्रमण जी की मां को भी वे 'माजी महाराज' के रूप में देखने को लालायित थे। यह भी नियति को मंजूर नहीं हुआ। कितना अच्छा होता, उनकी ये दोनों भावनाएं सफलता के शिखर का स्पर्श कर पाती। इस नयानाभिराम दृश्य को देखकर हम धन्यता का अनुभव करते। नई पीढ़ी को इतिहास की बातें देखने को मिलती।

47 लम्बी यात्रा.....141

विगत 27 वर्षों से मुनिश्री के एकान्तर तप चल रहा था। उपवास या बेले की रात्रियों में लगभग अर्धरात्रि के समय ढाई तीन घंटे स्वाध्याय का क्रम चलता। उनको इन वर्षों में नींद कम आती। पारने वाली रात्रि में प्रायः वमन होती, तदन्तर नींद आती। उन्होंने बताया—“एक रात रात्रिकालीन स्वाध्याय के वक्त पूज्य गुरुदेव तुलसी की यात्रा का आनन्द याद आ गया। लगभग 53 वर्ष पूर्व संवत् 2015 की कानपुर से कलकत्ता यात्रा में मुझे साथ यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। संवत् 2015 का चातुर्मास कानपुर में था। चतुर्मास सम्पन्न होने के बाद गुरुदेव वहां से कलकत्ता पधारे। मैं पूरे रास्ते पदयात्रा में था। गुरुदेव के साथ रहा इसका बहुत आनन्द मिला।

संवत् 2027 का गुरुदेव का चतुर्मास रायपुर था। रायपुर से गुरुदेव ने सीधे बीदासर के लिए विहार किया। मैं गुरुदेव की इस यात्रा में भी साथ था। मैंने दोनों यात्राओं में किसी भी वाहन का उपयोग नहीं किया। मुझे उसी क्रम में आचार्यश्री महाश्रमण की होने वाली यात्रा का स्मरण आ रहा है। सन 2014 के दिल्ली चतुर्मास के पश्चात् आचार्यवर की प्रलम्ब यात्रा प्रारम्भ होने वाली है। मेरा शरीर अब सेवा करने योग्य नहीं रहा। “आचार्य श्री महाश्रमण जी की यात्रा में सेवा कैसे होगी, यह

मेरे मन में जाप करते समय बार—बार आता है मैं रोकने की कोशिश करता हूँ, पर रोक नहीं पाता। “आचार्यप्रवर की पुण्यवानी जबरदस्त है। उनकी यह विजय अहिंसा यात्रा देखने लायक होगी। इस प्रकार बार—बार अपनी हार्दिक भावना हमारे सामने प्रकटकर सहयात्री वर्ग को तैयार करने के लिए हमें प्रेरित किया।

48 काम किंपाक.....143

अंतिम उपासना के समय मुनिश्री ने श्रीमद्जयाचार्य द्वारा रचित एक गीत मुझे दिखाया और पूछा यह ढाल आपकी जानकारी में हैं? मैंने कहा— मैंने नहीं देखी। तब कहा— इसे आप अपनी डायरी में लिख लो। बचपन से लेकर अब तक उन्होंने हमको बहुत कुछ दिया किन्तु यह दुर्लभ गीत जो समाधि के इच्छुक साधक के लिए बहुत मूल्यवान है मुझे प्रदान कर चिर स्थायी संबल से मुझे लाभान्वित कर दिया ऐसा मैंने महसूस किया।

गीत के बोल इस प्रकार हैं —

काम किंपाक समा जिन भाख्या दुःख अनन्त ना दाता रे ।
परिचय काम वंछा परहरिए जो चाहिए सुखसाता रे ॥

1

सुख खिणमात्र कट्या जिनस्वामी दाख्या दुःख बहुकालो रे ।
अनरथ खाण मुक्ति ना बेरी काम भोग मोहजालो रे ॥

2

घोर नरक नै विषै पड़े जे, पाप कर्म करतारी रे ।
आरज उत्तम धर्म आचरी सुर शिव गति सुख भारी रे ॥

3

अद्य उपलेप लगै भोगी रे, अभोगी तो न लिपायो रे ।
भोगी संसार में भ्रमण करै छै भोग तज्यां थी मुकायो रे ॥

4

न करै कंठ छेदन अरि जेहवूं अनरथ तेहवूं विशेषो रे ।
करै पोता नी दुष्ट आतमा ने मृत्यु समय जाणै सो रे ॥

5

अष्टम बारम खंड खंडाधिप वासुदेव विचारो रे ।
विषय थकी दुःख तीव्र नरक ना अति दोहिलो छुटकारो रे ॥

6

रे जीव मित्र तू हीज तिहारो तूं ही शत्रु दुर्जन्नो रे ।
आतम वेतरणी कूड सामली कामधेनु नन्दन वन्नो रे ॥

7

निर्मल ध्यान सज्जाय रमै मुनि अपापकारी भावे रे ।
पूरब कृत मल दूर करै जिय कंचन अगन तपावे रे ॥

8

स्त्री संसर्ग विभूषा तन नी सरस भोजन बलि जेमो रे ।
आत्म गवेषी पुरुष अछे तसु तालपुट विष जेमो रे ॥

9

स्त्री पशु पंडक रहित सेज्जादान दात उणोदरी जोगो रे ।
तसु चित्त राग शत्रु न विदारै औषध कर जिम रोगो रे ॥

10

निद्राभणी बहुमान न देवै हास्य विषय नहीं माता रे ।
रमै नहीं माहों माही कथा कर मुनि सज्जाय में राता रे ।

11

श्रमण धर्म विषे योग बर्तावे अति ही ओछाव सहितो रे ।
यति धर्म में युक्त छतो मुनि पामे धर्म पुनीतो रे ॥

12

वाहन शकटादि बहतां उल्लंघे अटवी विषम कांतारो रे ।
प्रवर योग विषे बहिता मुनीश्वर शीघ्र उल्लंघे संसारो रे ॥

13

उगणीसे खटवीसे पोह सुद पूनम निशि सुविचारो रे ।
पश्चिमयामे जोड़ करीए जयजश हरस अपारो रे ॥

49 शासन गौरव.....अवगति भिजवाई 158

पिछले कुछ वर्षों से जैन विश्व भारती में संतों का सेवाकेन्द्र चल रहा है। इस वर्ष शासन गौरव मुनिश्री धनंजय कुमारजी सेवाकेन्द्र व्यवस्थापक थे। उन्होंने स्वयं व उनके पूरे सिघाड़े ने मुनिश्री मानवमित्रजी की खूब मनोयोग से सेवा की। उन्हें समाधि प्रदान की। जिस समय हम लाडनूं में मुनिश्री की उपासना के लिए उपस्थित थी, हमने स्वयं अपनी आंखों से देखा मुनिश्री धनंजय कुमार जी एक मृदुस्वभावी, व्यवहार कुशल और आत्मीय भावना से ओतप्रोत संत हैं। मुनिश्री मानवमित्र जी के दिवंगत होने पर शासन गौरव मुनिश्री ने आचार्यवर को निवेदन करने के लिए जो जानकारी भिजवाई और अपनी भावना रखी वह निम्नलिखित है।

- . मुनि मानवमित्रजी अनेक वर्षों से लाडनूं सेवाकेन्द्र में स्थिरवासी थे।
- . वे निर्जरार्थी, पापभीरू, तत्त्वज्ञ एवं स्वाध्याय रसिक संत थे। उनकी सेवाभावना प्रशस्य थी।
- . उन्होंने लगभग 28 वर्षों तक चौविहार एकान्तर तप किया। कभी-कभी बेले तप भी किया। अस्वास्थ्य की स्थिति में कुछ समय एकान्तर तप का क्रम अनेक बार विछिन्न भी हुआ।
- . उन्होंने प्रायः स्वावलम्बन का जीवन जीया, स्वास्थ्य भी अच्छा रहा। चार मास से उनके स्वास्थ्य में क्रमशः गिरावट आने लगी। घूमना-फिरना प्रायः बन्द हो गया। प्रवास कक्ष से बाथरूम तक जाने में भी कठिनाई होने लगी। सहारा लेना अपेक्षित हो गया।
- . पारणे के दिन प्रायः वमन होती थी। पहले वे स्वयं बाहर जाकर वमन करते थे। इन चार महीनों में परिष्ठापन पात्र में वमन करना विवशता बन गई। मुनि आकाशकुमार जी और सुधांशु कुमार जी ने परिष्ठापन आदि का कार्य अग्लान भाव से किया।
- . चार मास की अवधि में असह्य दर्द के कारण दो बार भिन्न समाचारी में रहे।
- . इस अवधि में लगभग 21 रात्रियां जागरण की रात्रियां बन गईं।
- . जीवन के अंतिम सप्ताह में हार्ट की समस्या गंभीर हुई। काफी वेदना भी रही। एकांतर तप भी नहीं हो सका। 7 अक्टूबर 2012 को रात्रि में

लगभग साढ़े दस बजे सीविरय हार्ट अटैक आया। रात्रि में साढ़े ग्यारह बजे डॉ. घोड़ावत आए। सात इंजेक्शन लगाए तब कुछ आराम मिला। मुनि अक्षय प्रकाश जी रात्रिकालीन सेवा में विशेष सजग रहे। अनेक बार पूरी रात जागृत रहे। मुनि आकाश कुमार जी और मुनि सुधांशु कुमार का भी यथोचित योग रहा।

. 8 अक्टूबर 2012 को उनके स्वास्थ्य में सुधार परिलक्षित हुआ। प्रातः लगभग 8 बजे उन्होंने सब संतों से खमत खामणा किया। रात्रि में लगे दोषों की आलोचना की। परम श्रद्धेय आचार्यवर का भावविभोर होकर गुणानुवाद किया। संतो के सेवाभाव के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित की। आज से जीवनभर के लिए पांच विगय के त्याग किए।

लगभग दस बजे डॉ. घोड़ावत ने दर्शन किए। स्वास्थ्य का परीक्षण किया। डॉ. साहब ने कहा— स्वास्थ्य में बहुत अच्छा सुधार हुआ है। प्रेशर सूगर आदि सभी सामान्य है। डॉक्टर के परामर्श पर मुनि मानवमित्रजी ने लगभग साढ़े दस बजे चार चम्मच दूध के साथ अर्जुनछाल का चूर्ण लिया। यह उनके जीवन का अंतिम आहार था। उन्होंने इंजेक्शन आदि लेने की अनिच्छा प्रकट की। केवल हार्ट की स्वस्थता के लिए निर्दिष्ट एक गोली ली। लगभग बारह बजे उन्होंने चार चम्मच पानी पीया। पानी पीने में कुछ असह्यता भी महसूस हुई। संतों ने स्थिति देखते हुए अनशन की प्रेरणा भी दी किन्तु उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा— मेरी स्थिति नहीं है। इतना मनोबल भी नहीं है।

. मध्याह्न में लगभग दो बजे उन्होंने पुनः पानी पीने की इच्छा व्यक्त की। मुनि आकाश कुमार जी और मुनि सुधांशु कुमारजी उनके परिपार्श्व में ही बैठे थे। संतों ने दो चम्मच पानी पिलाया। पानी पीते ही असह्य पीड़ा का अनुभव हुआ। वे पूर्ण सचेतन अवस्था में थे। संतों की आवाज सुनते ही हम उसी क्षण पहुंच गए। छाती और कमर पर मालिश की।.....
...सुलाया। देखते—देखते दो चार क्षण में उनकी चेतना का उर्ध्वारोहण हो गया। उस समय घड़ी दो बजकर तीन मिनट की सूचना दे रही थी। तत्काल डॉक्टर को याद किया। शासन सेवी कन्हैयालालजी छाजेड़, भागचन्द जी बरड़िया, राजेशकुमार खटेड़ आदि तथा जै.वि.भा. के कर्मचारी भी पहुंच गए। 2.15 पर डॉक्टर और वैद्यजी ने जांच की, और 2.20 पर मुनि मानवमित्र जीके देहावसान की घोषणा कर दी। हमने

संघीय विधि के अनुसार पार्थिव देह का विसर्जन किया। परिवार के लोग भी उस समय पहुंच गए। साध्वी प्रमोद श्रीजी, समणी नियोजिका जी आदि भी इस क्षण के साक्षी बन गए। श्रावक समाज ने तत्परता से अपने दायित्व का निर्वाह किया। सायं सवा पांच बजे उनकी अंतिम यात्रा प्रारम्भ हुई।

मुनि मानवमित्रजी के स्वर्गवास से तपस्या में लीन रहने वाले एक निर्जरार्थी संत का स्थान रिक्त हो गया। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने ऐसे मुनि की यत्किञ्चित् सेवा का अवसर हमें प्रदान किया, यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है।

09.10.2012

मुनि धनञ्जय कुमार
जैन विश्व भारती

50 च्यार पीढ़ियां हाजर.....160

मुनिश्री मानवमित्रजी के स्वर्गगमन की सूचना ज्यों ही सरदारशहर में पहुंची त्यों ही पारिवारिक जन एवं सभाध्यक्ष श्री सम्पतमल जी सुराणा आदि शीघ्र ही रवाना हो कर समय पर लाडनूं पहुंच गए। मुनिश्री के संसार पक्षीय ज्येष्ठ भ्राता श्री नगराजजी, उनके सुपुत्र उमेशजी, उनका पुत्र कमलेश और कमलेश का बेटा देवेश क्रमशः चारों पीढ़िया बैकुण्ठी अर्थात् अन्तिम यात्रा के समय सम्मिलित थी। श्री उमेश जी आंचलिया ने मुखाग्नि दी।

51 दूजै दिन श्री161

मुनिश्री के देवलोक गमन के दूसरे दिन सरदारशहर में स्मृतिसभा आयोजित हुई। मुनिश्री की विरल विशेषताओं का वर्णन वक्ता, गायक एवं कविता पाठकों ने किया। परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी के ज्येष्ठ भ्राता वरिष्ठ श्रावक श्री सुजानमलजी दूगड़ ने कहा वे तो गृहस्थ अवस्था में भी आधे साधु थे। आचार्यवर की दीक्षा के संदर्भ में किए गए महनीय योगदान का स्मरण करते हुए दिवंगत आत्मा को श्रद्धाञ्जली अर्पित की।

तेरापंथ सभाध्यक्ष श्री सम्पतमलजी सुराणा ने बताया कि वे घर घर जाकर उपवास की बारी आदि तपस्याएं लिखते थे। जैन विद्या की

परीक्षा के लिए प्रेरणा देने में उनकी प्रशस्त भूमिका रहती थी। साध्वी सहजयशाजी, महिलामण्डल की अध्यक्ष शीलादेवी संचेती आदि ने विचार व्यक्त किए। मैंने मुनिश्री के जीवन को सेवा, तपस्या और प्रमोद भावना की पवित्र त्रिवेणी के रूप में निरूपित किया, और मेरे जीवन में इन गुणों का संचार हो ऐसी भावना व्यक्त की। परिवारजनों को शीघ्र गुरुदर्शन हेतु प्रेरित किया।

52 संत धनंजय री.....162

पूज्यप्रवर आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन सन्निधि में मुनिश्री मानवमित्र जी की स्मृतिसभा का आयोजन किया गया। मुनिश्री मानवमित्र जी के संसार पक्षीय परिवार की ओर से गीत का संगान किया गया। श्री उमेशजी आंचलिया ने अपने उद्गार व्यक्त किए। शासन गौरव मुनि श्री धनंजय कुमार जी द्वारा की गई सेवा का पूज्यचरण में निवेदन किया। संतों के सेवाभाव का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने फरमाया— शासन गौरव मुनि धनंजय कुमार जी की देखरेख में उनके सहवर्ती संतों को सेवा का जिम्मा दे रखा था। मुनि मानव मित्र जी के न्यातीले बता रहे थे कि संतों को अच्छा मौका मिला। वैधानिक रूप में मुनि धनंजय जी का नाम सेवा देने में नहीं है, पर मौके की सेवा में वे पीछे कैसे रह सकते थे?

वे आचार्य महाप्रज्ञ जी के साथ रहे हुए हैं। व्यवहार कुशल, समझदार और हंसमुख स्वभाव वाले संत हैं।

53 मानव मित्र.....मंत्री मुनिवर गाई 163

मंत्री मुनि के मन में मुनिश्री मानवमित्रजी के प्रति अत्यन्त प्रमोद भावना थी। स्मृति सभा में मंत्रीमुनि ने कहा— मुनि मानवमित्र जी प्रौढ़ावस्था में दीक्षित हुए। संघसेवा में तो वे बचपन से ही संलग्न हो गए थे। सरदारशहर चातुर्मास करने वालों के लिए तो वे एक ठाणे का काम करने वाले थे। साधु—साधियों के अंतरंग कार्य करने हेतु गुरुदेव ने अनेक बार उनकी सेवाएं लीं। उनका जीवन धर्म व धर्मसंघ के लिए समर्पित रहा। शासन गौरव मुनि धनंजय कुमारजी को उनकी सेवा का अवसर मिला।

54 शासन गौरव.....बणायो.....164

मुनि श्री मानवमित्रजी के प्रति शासन गौरव मुनिश्री धनंजय कुमार जी ने संस्कृत भाषा में एक सुन्दर अष्टक की रचना की। इन आठ श्लोकों की शासन श्री राजेन्द्र मुनिजी ने स्मृति सभा में प्रस्तुति दी। वह अष्टक यहां अविकल रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है—

1

आराध्य दृष्टिं सततं गुरुणां, गृहस्थवासेऽपि गणस्य येन ।
सेवा विशिष्टा प्रकृता प्रभूता, दिवंगतः मानवमित्र साधुः ॥

2

अणुव्रती प्राक् सदुपासकश्च, स्वीकृत्य दीक्षां समणः सुजातः ।
नियोजकोऽपि प्रथमे दिनं यः, दिवंगतः मानवमित्र साधुः ॥

3

गुरोः कृपायाः फलमस्ति साक्षात् आरोहण स्यावसरोऽपि येन ।
प्राप्तोऽजसा यः श्रमणो बभूव, दिवंगतः मानवमित्र साधुः ॥

4

सौभाग्य मेतद् तुलसी गुरुणां, सुशिष्टि काले खलु दीक्षितेषु ।
व्रती कनिष्ठः श्रमणेषु यश्च दिवंगतः मानवमित्र साधुः ॥

5

वृद्धत्वमासीत् वयसो विभावात्, तारुण्यमासीत् तपसोऽनुभावात् ।
आरोग्य मासीत् प्रकृतेः प्रभावात् दिवंगतः मानवमित्र साधुः ॥

6

ब्रह्मव्रती गीतलयस्य वेत्ता, स्वाध्यायशीलो वर निर्जरार्थी ।
आत्मावलम्बी परमार्थकांक्षी, दिवंगतः मानवमित्र साधुः ॥

7

एकांतरं येन जलं विहाय, सुदीर्घ कालं विहितं तपो यद् ।
निदर्शनं तस्य मनोबलस्य, दिवंगतः मानवमित्र साधुः ॥

8

शिष्टिं त्रयाणां सुखदां गुरुणां, दृष्ट्वा प्रमादश्चिदि येन लब्धः ।
आलोचनां स्वस्थ विधाय भूयः, दिवंगतः मानवमित्र साधुः ॥

55 महाश्रमणजीसरसाई 166

स्मृति सभा में श्रद्धेया महाश्रमणी जी ने मुनिश्री के बारे में कहा— मुनि मानवमित्रजी रागों के जानकार थे पूज्य गुरुदेव की सन्निधि में भगवती जोड़ के संपादन का वृहत् काम चला। जोड़ की पांच सौ ढालों में अनेक राग रागिनियां हैं। गुरुदेव उनके ज्ञाता थे। किसी-किसी राग में थोड़े संशय की स्थिति में उन्होंने मुनिमानवमित्र जी से पूछा। उन्हें पुरानी रागों का अच्छा ज्ञान था।

56 ही विशिष्ट संघीय दृष्टि.....167

स्मृति सभा में परमपूज्य आचार्यवर ने दिवंगत मुनिश्री के बारे में कहा— “मुनि मानवमित्र जी सरदार शहर के आंचलिया परिवार से संबंध थे। उनका जन्म संवत् 1981 में हुआ। बारह वर्ष की उम्र में उनकी वैराग्य भावना जागृत हुई। शारीरिक अस्वास्थ्य एवं पारिवारिक परिस्थितियों के कारण उन्होंने साधुत्व की भावना को स्थगित रखा, किन्तु शादी नहीं की। घर पर रहकर ही धार्मिक चर्या में निरत रहे। सं. 2041 में मातृवियोग के पश्चात् घर से निवृत्त होकर गुरु सेवा में रहना शुरू कर दिया। वि.सं. 2050 में वे समण मानवप्रज्ञ बने, और उसी वर्ष गुरुदेव तुलसी के कर कमलों से मुनिदीक्षा स्वीकार की। लगभग 28 वर्ष तक चौविहार एकांतर तप किया। कभी-कभी बेले-बेले तप भी किया करते थे। अस्वस्थ होने पर उन्हें भिन्न समाचारी में रखा गया। बाद में समाचारी में आ गये। ज्ञात हुआ उन्होंने आलोचना भी की।”

आचार्यवर ने आगे कहा— “मंत्री मुनिश्री ने मानवमित्रजी के बारे में ध्यान रखने को कहा था। मानमलजी आंचलिया के रूप में उन्होंने सेवाएं दी। समण दीक्षा के बाद उन्हें समण नियोजक बनाया। दीक्षा लेने के बाद वे मेरे आसपास ऋषभ मुनि की देखरेख में रहे। राग-रागिनियों के अच्छे जानकार थे। उनमें संयम निष्ठा थी। वे सेवाभावी थे। संतों की सिलाई आदि का कार्य करते थे। संघीय दृष्टिकोण से भी चिन्तन करते।

इस संदर्भ में कभी-कभी मेरे से बात करते। मेरा अनुमान है कि उनकी संघीय दृष्टि सामान्य नहीं, विशिष्ट थी। इनकी दो संसारपक्षीया भाणजी साध्वी मधुस्मिताजी व साध्वी स्वस्थ प्रभाजी जो अभी

सरदारशहर में हैं उन्हें चतुर्मास से पूर्व लाडनूं में उनकी सेवा का मौका मिल गया। साध्वी मधुस्मिता जी अच्छा गाने वाली व अच्छा व्याख्यान देने वाली साध्वी है। दोनों साध्वियां अच्छा विकास करें।”

57 गुरुवर तुलसी छाप.....170

शासन गौरव मुनिश्री मधुकरजी से प्राप्त शब्दावलि इस पंक्ति को प्रमाणित करने वाली है— 25 जनवरी प्रतिलेखन के समय छाप में गुरुदेव ने मानवमित्र जी (मानमलजी आंचलिया) के लिए फरमाया— “मानजी साधु रो काम करै है। सामने कई मौका आग्या। बड़े ढंग स्यूं काम करै है। अठै री दृष्टि रो शब्दां रो पूरो ध्यान राखै है। जठै गया बठै पूरी सफलता प्राप्त करी है।”

दूसरी रात्रि 26 जनवरी को साधुओं की सभा में भी इनके लिए काफी कृपापूर्ण शब्द फरमाये। सोहनांजी सरदारशहर वाली की घटना सुनी और फरमाया— “मेरे एक शब्द को पकड़कर इसने गजब कर दिया। उसका काम सिद्ध कर दिया।”

मुनि मधुकर से प्राप्त

58 दृष्टि अठै री आराधै.....171

एक बार मेवाड़ में साध्वियों से सम्बन्धित कार्य सम्पादित करने पर आचार्यवर ने कहा— “थांरी कुंडली में शासण री सेवा करणै रो योग है।”

15.5.90

एक अन्य प्रसंग है जिसमें गुरुदेव के श्रीमुख से मानवमित्रजी की सराहना की गई। वह इस प्रकार है—

अभी मेवाड़ में संतों ने संघनिष्ठा का अच्छा उदाहरण पेश किया। मुनि हंसराज के साथ मुनि प्रसन्न तथा मुनि मिश्रीमलजी लाछुड़ा गए। वहां से साधन के द्वारा लुहारिया पहुंचाया। मुनि हंसराज इतने दिन आमेट रहा। इतनी दूर जाना पहुंचाकर वापस आना और वह भी इस गर्मी के मौसम में। संघ निष्ठा और गुरु दृष्टि की आराधना से ही संभव बनता है। साधु ही नहीं, श्रावक भी ऐसे ही संघनिष्ठ है।

“मानवमित्रजी संघ निष्ठ श्रावक है। जब भी अवसर आता है ये गुरुदृष्टि के अनुसार कार्य संपादित कर देते हैं। अभी छापर में एक प्रसंग आया— इन्होंने (मानवमित्र) इस कार्य को ठीक गुरुदृष्टि के अनुसार व्यवस्थित कर दिया।”

05.06.90

प्रातः अर्हत वन्दना से पूर्व तीसरा प्रसंग— वर्ष 13 विज्ञप्ति अंक 11

24— 30 जून 2007 के अनुसार—गुरुदेव तुलसी ने फरमाया—
“मानवमित्रजी (मानजी आंचलिया सरदारशहर) राजनगर से आ गए। मेवाड़ में कुछ साधु अस्वस्थ हो गए। चिकित्सा की दृष्टि से उन्हें राजनगर पहुंचाना था। मानवमित्र ने अच्छा काम किया। अच्छा दायित्व निभाया। वे उपासक हैं। अच्छे विवेकशील, कर्तव्यनिष्ठ और शासन भक्त व्यक्ति हैं। उनका पूरा विश्वास किया जा सकता है।

आचार्य तुलसी

59 संति एगेहिं भिक्खूहिं.....173

परमपूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के विराट् व्यक्तित्व और अनुपमेय कर्तृत्व की यशोगाथा तथा आपके शासनकाल की उपलब्धियों को व्याख्यायित करना आकाश अवगाहन के समान है। वे निर्माता पुरुष थे। उन्होंने व्यक्ति निर्माण, साहित्य निर्माण और परम्पराओं का निर्माण किया। उनके जीवन में प्रमोद भावना का प्रकर्ष था। 21 फरवरी 1988 प्रातः 6 बजे जीन्द (पटियाला चौक) का प्रसंग है—

आचार्यप्रवर की सन्निधि में सभी संत उपस्थित थे। आज प्रसंगवश मानवमित्रजी (पूर्व नाम श्री मानमलजी आंचलियां सरदारशहर) का जिक्र चला। आचार्यवर ने उनके बारे में फरमाया “मानवमित्र एक श्रद्धाशील एवं आत्मार्थी श्रावक हैं। इनका विवेक बहुत प्रशस्त है। ये तीन वर्षों से निरंतर वर्षी तप कर रहे हैं तपस्या में भी हमारे साथ पदयात्रा करते हैं। सर्दी की मौसम में स्थान की अनुकूलता न मिलने पर कभी—कभी कठिनाई भी होती है। नींद नहीं आने से रात में जागना भी पड़ता है। पर ये सभी कष्टों को समभाव से सहन करते हैं। तपस्या के पारणे में सदा नवकारसी करते हैं। पारने में जो कुछ मिल

जाता है, उसी में संतोषकर लेते हैं। यह बहुत कठिन काम है। हर व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता। पर ये ऐसा कर रहे हैं। इनमें श्रावकोचित गुण है। ऐसे व्यक्ति को जब मैं देखता हूँ तो आगम की यह गाथा याद आ जाती है— “संति एगेहिं भिक्खूहिं गारत्था संजमोत्तरा।” कुछ गृहस्थ ऐसे होते हैं जो संयम में साधुओं से भी उत्कृष्ट होते हैं। मानवमित्र जी इसके उदाहरण हैं। गुणी के गुणों का वर्णन करना भी निर्जरा का हेतु है। साधुओं को भी इनके जीवन से प्रेरणा लेने की अनेक बातें मिल सकती हैं।”

मानवमित्र जी पूज्य गुरुदेव के ये हृदयोद्गार सुनकर गद्गद हो गए। उन्होंने अपनी आस्था समर्पित करते हुए कहा— “गुरुदेव! मेरे में वह शक्ति कहां है, यह तो मात्र आपकी कृपा व प्रसाद का ही फल है।”

आदर्श साहित्य संघ शिविर कार्यालय जीन्द (हरियाणा) से प्राप्त धन्य होते हैं कृतपुण्य होते हैं ऐसे शिष्य या श्रावक जिन्होंने गुरु के पावन मन मन्दिर में अपना उत्तम स्थान बनाया। मुझे अत्यधिक गौरवानुभूति होती है ऐसे मातुल मुनि पर।

60 मानवमित्र बहुत174, 175

मुनिश्री मानवमित्र जी ने आचार्य श्री तुलसी आचार्य श्री महाप्रज्ञ और आचार्यश्री महाश्रमण तीनों आचार्यों की दृष्टि आराधने में कुशलता अर्जित की। तीनों ही आचार्यों का कृपाभाव उन पर सतत बना रहा। जब मुनि मानवमित्रजी को मुनि श्री मगनलाल की सेवा में भेजा जा रहा था तब उदासर स्थित मुनिद्वय के नाम आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने संदेश प्रेषित किया। उसमें मानवमित्र जी की विशेषताओं का उल्लेख मननीय है—

अर्हम्

मुनि मगनलालजी व फतेहचन्दजी से सुखपृच्छा। खूब चित्त समाधि में रहे। शारीरिक अस्वस्थता के कारण मुनि मगनलालजी को चलने फिरने में काफी कठिनाई रहती है, फिर भी मनोबल अच्छा है।

तुम्हारे साथ मुनि मानवमित्रजी को भेज रहे हैं। वे बहुत ही सेवाभावी, व्यवहार कुशल और कार्यकुशल मुनि हैं। गृहस्थ जीवन में उन्होंने साधु-साधियों की काफी सेवा की है। तीनों संत पूर्व सामञ्जस्य और सौहार्द के साथ कार्य करेंगे। उदासर अच्छा क्षेत्र है। श्रद्धालु श्रावक समाज है। क्षेत्र की सारसंभाल सम्यक् प्रकार से होती रहे। खूब चित्त समाधि में रहें।

आ. महाप्रज्ञ

जै.वि.भा., लाडनूं-20.02.96

एक संदेश सिरियारी चतुर्मास में मुनिश्री के नाम आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने लिखवाया। वह इस प्रकार है-

06.07.2004

मुनि मानवमित्र जी!

तुम्हारी शुद्ध नीति और वैराग्य भाव मन को आकृष्ट करने वाला है। समय-समय पर शरीरिक कठिनाइयां भी पैदा हो जाती है। इनको समभाव पूर्वक सहन कर रहे हो और करना है। स्वाध्याय और ध्यान चलता रहे। विशेषतः आत्मा के प्रति निरंतर जागरूकता रहे। इससे चित्त समाधि और बढ़ेगी। आवेश उपशान्त रहेगा। परम शान्ति और समाधि बढ़ती रहेगी।

सिरियारी

आ. महाप्रज्ञ

इससे लगभग 1 वर्ष पूर्व आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी द्वारा लिखित एक संदेश मुनिश्री को और प्राप्त हुआ। वह इस प्रकार है-

मुनि मानवमित्रजी!

तुम सेवाभावी हो स्वावलम्बी हो और व्यवस्था करने वालों के सहयोगी भी हो। यह निर्जरार्थिता का एक उदाहरण है। वस्त्र रखने के बारे में पहले मर्यादा को समझ लेना है। और अग्रणी की स्वीकृति पूर्वक काम करना है।

17.07.2003

आचार्य महाप्रज्ञ

एक कृपापूर्ण संदेश और है। वह निम्नांकित है –

अर्हम्

मुनि मानवमित्रजी!

तुम्हारी साधना निरंतर बढ़ती रहे। तुमने पहले भी खूब सेवा की है। अब भी कर रहे हो। अब आत्मा का विशेष ध्यान रहे।

बीदासर

आचार्य महाप्रज्ञ

61 युवाचार्य श्री महाश्रमण.....176

मुनि मानवमित्र जी!

आपने शासन की सेवाएं की हैं। तपस्या भी की है। स्वास्थ्य कुछ प्रतिकूल है। परन्तु मनोबल रहे। जप आदि का प्रयोग चले।

27.11.2001

युवाचार्य महाश्रमण

मुनि मानवमित्र जी पहले एक अच्छे श्रावक और वर्तमान में एक अच्छे मुनि हैं। अब वे वृद्धावस्था में हैं। खूब अच्छी आध्यात्मिक साधना चलती रहे। मन में कोई भार न रखें।

मंगलकामना

06.07.2004

युवाचार्य महाश्रमण

सिरियारी

अर्हम्

मुनिश्री मगनलाल जी स्वामी, फतेहचन्दजी स्वामी सविनय वन्दना, सुखपृच्छा। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखाएं। उपकार करावें। आचार्यवर ने कृपाकर मुनि मानवमित्र जी को आपके पास भिजाया है। उन्होंने छापरा सेवा केन्द्र में सेवाकार्य में अच्छा श्रम किया। फिर आंख का आपरेशन लाडनूं में कराया। आंख की थोड़ी समस्या अभी भी उनके है। उन्हें सामंजस्य पूर्ण तरीके से रखा जाए। “जहां तक मैंने उनको समझा है, वे अनुभवी श्रावक तो रहे ही हैं सेवा भावना वाले साधु भी हैं। राग रागिनियों के अच्छे जानकार हैं।” आपने भी शासन की बहुत सेवा की है। खूब काम किया है।

मंगलकामना

जै.वि.भा.लाडनूं

महाश्रमण मुदित

श्रद्धेया महाश्रमणी जी की सुघड़ लेखनी की रसधारा साधक को तृप्ति प्रदान करने वाली है। आपश्री ने आज तक साध्वियों के नाम हजारों संदेश लिखे हैं।

मुनिश्री मानवमित्र जी को प्रदत्त संदेश की भाषा अविकल रूप से यहां प्रस्तुत की जा रही है—

अर्हम्

मुनिश्री मानवमित्रजी!

जीवन के सान्ध्यकाल में साधुजीवन का स्वीकार असीम आत्मबल का सूचक है। साधना, तपस्या और सेवा की त्रिपदी का आलम्बन लेकर चित्त समाधि का अनुभव करो। 'समयं गोयम! मा पमायए'— इस महावीर वाणी को स्मृति में रखकर क्षण-क्षण का उपयोग करते रहो।

बीदासर—28.11.2001

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

62 औ दो मुनिवर180

मुनिश्री मानवमित्रजी की विरल विशेषताओं में एक उल्लेखनीय विशेषता थी— उनकी प्रमोद भावना। गुण ग्राहकता महान बनने की सर्वोच्च प्रक्रिया है। मुनिश्री का स्मरण उन महापुरुषों की गणना में हो सकता है— जिन्होंने दूसरों के परमाणु जितने गुण को पर्वत जितना बड़ा बताया। जब—जब उपासना का अवसर मिलता मुनिश्री अनेक संतों की विशेषताओं से हमें परिचित करवाते। सेवा करने वाले संतों का गुणोत्कीर्तन करते ही रहते थे। वास्तव में 'सेवा अमृत का प्याला पीता कोई किस्मत वाला' यह सत्य है पर यह भी उतना ही सत्य है— सेवाधर्मः परम गहनों.....। मुनिश्री अजित कुमार जी एवं मुनिश्री ऋषभ कुमारजी दोनों हमारे धर्म संघ के विशिष्ट सेवाभावी संत हैं। वे दोनों दूसरे के शरीर को अपना शरीर मानकर आलस्य और घृणा का परिहार कर सेवा करते हैं। उनका दिल कोमल है। वे सेवार्थी के मनोनुकूल सेवा करते हैं। ऐसे मुनिद्वय की सेवा भावना प्रशंस्य है, प्रणम्य है जिनके लिए मुनिश्री मानवमित्र जी के मुख से कई बार ये शब्द निकले— "ऋषभ मुनि तो म्हांरी मां है" "अजित मुनि तो म्हांरी मां है"।

अजितमुनि की सजगता और उदार भावना से की जाने वाली मनोनुकूल सेवा को तो लाडलू जै.वि.भा. में उपासना करते वक्त हमने अपनी आंखों से निहारा है। धन्य है ऐसे मुनि युगल को जिन्होंने एक स्थविर तपस्वी मुनि को साता समाधि प्रदान कर अपने कल्याण भविष्य का निर्माण किया है।

63 दूर घरों की उदक गोचरी.....181

साधु का एक नाम है श्रमण। जो श्रम करता है वह श्रमण कहलाता है। मुनिश्री मानवमित्र जी का जीवन श्रमनिष्ठा का विलक्षण उदाहरण था। उन्होंने वृद्धावस्था में दीक्षा ली थी, फिर भी वे किसी को दर्शन देना होता तो प्रसन्नमना दूर से दूर घर में चले जाते। इसी प्रकार काफी दूर घरों से पानी ले आते थे। जब हमने श्री गंगानगर में चातुर्मास किया था तब वहां के दूर घरों की बहिनें कहती – साध्वीश्री! आपके मामाजी महाराज मुनिश्री मानवमित्र जी हमारे घरों से पानी लेने पधारते थे। उन्होंने जल का व्रत निपजाकर हमारी अंतराय तुड़ाई।

64 मोहरां मां की.....182

सुपुत्र वह होता है जो अपनी मां से प्राप्त संस्कारों को शतशाखी बनाता है। मैंने देखा हमारे संसार पक्षीया नानीसा गृहस्थ होते हुए भी बिलकुल स्नान नहीं करते थे। वस्त्र भी लगभग 15 दिनों से धुलवाते थे। पानी का बहुत संयम करते थे। मुनिश्री मानवमित्र जी इस युग में दीक्षित होकर एक माह में एक बार वस्त्र प्रक्षालन करते। यह आश्चर्यकारी बात है। संसार पक्षीया नानीसा बड़े उदार दिल थे। समागत अतिथि आ आतिथ्य इतने अच्छे ढंग से करते कि आगन्तुक के लिए अविस्मरणीय बन जाता। एक विचारक ने लिखा है— “जैसे बादल की धन्यता बरसने में है। पुष्प की धन्यता सुगंध बिखरने में है, सूर्य की धन्यता प्रकाश फैलाने में है, उसी प्रकार मनुष्य की धन्यता जो उसके पास है उसे बांटने में है। जो भगवान है वह बांटता है और बांटने से ही मनुष्य भाग्यवान बनता है।” मानती हूँ मुनिश्री भाग्यवान संत थे— उनके पास कोई वस्तु, उपकरण होता उसे कोई भी मुनि मांगले तो उसे मना करने का त्याग था। सहजता से उसे प्रदान कर देते।

65 शुभ भविष्य हित.....188

जब मुमुक्षु मानमल जी आंचलिया को परमपूज्य आचार्यवर श्री तुलसी ने समण दीक्षा का आदेश प्रदान किया तब मुनि श्री सुमेरमल जी ने उपासक श्रावक श्री मानमलजी को मंगल भावना के साथ आशीर्वचन संदेश प्रेषित किया। उस समय मुमुक्षु मानवमित्रजी ने मुनिश्री सुमेरमल जी के चरणों में जो लिखकर निवेदित किया, उसमें उनकी भविष्यवाणी किस प्रकार सत्य साबित हुई यह हम सबकी आंखों के सामने है। आचार्यश्री महाश्रमणजी पुण्यपुञ्ज हैं। तुलसी जन्म शताब्दी के पुनीत अवसर पर 100 मुनि दीक्षाओं का उनका संकल्प और उसकी सफलता सुफलता किसे प्रभावित नहीं करती। बीदासर महाचरण में एक साथ 43 दीक्षाओं का इतिहास तेरापंथ धर्मसंघ की परम्परा में अपूर्व घटना है। देश की राजधानी दिल्ली का सफलतम चातुर्मास कितना उपलब्धियों भरा रहा। नेपाल की राजधानी काठमांडू में पदार्पण व विदेश में चातुर्मास करने वाले आप श्री प्रथम आचार्य हैं। ज्यों ज्यों ये कोमल चरण आगे बढ़ेंगे नवीनतम इतिहास का सृजन करते रहेंगे और हम देखने वाले धन्यता महसूस करेंगे।

मुमुक्षु मानवमित्र जी ने जो भाव अपनी शब्दावली में अंकित किए, उन्हें यहां अविकल रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है—

10.02.92 सरदारशहर

जिनाय नमः

जय भिक्षु

जय तुलसी

शासन स्तम्भ सम मुनिश्री सुमेरमलजी आदि सभी चारित्रात्माओं से मुमुक्षु मानवमित्र की वन्दना सुखसाता मालूम हो।

आपका शुभकामना आशीर्वच सन्देश बीदासर में मिला। पढ़कर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ। आपका मेरे पर सदा से ही अनुग्रह रहा है। मुझे इस बात का सदा से ही गौरव था कि आप जैसे मुनियों का मैं कृपापात्र हूँ और मेरी यह मान्यता बन गई कि क्षयोपशम तो स्व का ही होता है पर का नहीं परन्तु कृपा शुभदृष्टि गुरुदेव आदि सभी संत सतियों की जो मेरे पर रही है वह सारी ऊर्जा रूप परमाणु मेरे आत्मगत हो गए उनका ही यह परिणाम है कि मुझे इस उम्र में गुरुदेव समणदीक्षा प्रदान करेंगे।

“मुनिश्री आपका नाम याद आते ही मुनिश्री हीरालाल जी की स्मृति व आकार सामने आ जाता है। देखे हुए नहीं हैं पर कल्पना उसी

प्रकार की होती है। आपका वरदहस्त वह जो महान साधक महाश्रमण जैसे मुनि के सिर पर टिका है। धन्य होंगे वे प्राणी जो आने वाला समय उनका देखेंगे।”

चातुर्मास आपका हमारे फ्लैट में ही होगा सेवा करने का विचार था पर अब तो गुरुदेव दृष्टि देंगे वहीं पर से आपका दर्शन करता रहूँ और भी कल्पना तो कई प्रकार की करता हूँ। नियति होगी जैसी फलेगी।

आपका चरणरज

मानवमित्र

नोट— मुनिश्री के करकमलों में समर्पित इस पत्र में मुनिश्री हीरालाल जी का नामोल्लेख डालगणी के दीक्षा प्रदाता मुनिश्री.....के रूप में हुआ है ऐसी मेरी सोच है।

66 राजी हुया भुजाई.....190

मुनिश्री मानवमित्र जी भरे—पूरे बड़े परिवार से दीक्षित संत थे। उनके संसार पक्षीय चार सगे भाई व चार बहिनें थीं उनके काकाजी का भी बड़ा परिवार है। समय—समय पर भाई, भतीजे, भतीजियां, भानजे, भानजियां आदि सम्बन्धित लोग सेवा दर्शन कर लाभ लेते। उनका संसार पक्षीय भानजा विनोद कुमार तातेड़ जितनी बार देश आता लगभग 2 या 3 बार अवश्य दर्शन करता। उनके संसार पक्षीय मित्र मानकचन्द जी भंसाली अनेक बार दर्शन उपासना का लाभ लेते। उनके ज्येष्ठ भ्राता नगराजजी एवं उनके छोटे पुत्र उमेशजी आंचलिया प्रायः सरदारशहर रहते हैं। उमेशजी मुनिश्री के स्वास्थ्य की जानकारी बहुधा लेते रहते थे। महीने में दो तीन बार दर्शन भी कर लेते थे। स्वर्गवास से कुछ दिन पूर्व जब उनके स्वास्थ्य में गिरावट हुई, उनके भतीजे उमेश जी एवं उनकी धर्मपत्नी सम्पत देवी आंचलिया ने अन्तिम समय उपासना का लाभ लिया।

स्वर्गवास के पहले दिन 93 वर्षीय अग्रज श्री नगराजजी उनकी भौजाई लक्ष्मीबाई, नगराजजी के बेटे उमेशजी, उनकी पुत्रवधु सम्पत बाई, पोता कमलेश, पौत्रवधु ज्योति उनके बच्चे देवेश और जयेश तथा मानक चन्द जी भंसाली आदि ने उपासना का लाभ लिया। उमेश जी की मां जो मुनिश्री की भौजाई हैं जिनकी हवेली से नीचे उतरकर सरदारशहर के श्री समवसरण में जाने की भी शारीरिक अनुकूलता नहीं,

वे लाडलूनू दर्शन करने गए और सेवा उपासना कर बहुत खुश हुए। उन्होंने बताया— “म्हाराज! अन्तिम दिन तो मनै मानवमित्र जी स्वामी बोहत बढिया सेवा कराई।” मैंने अनुभव किया उनका मन बड़ा प्रसन्न था।

67 परिष्कार री आंख खुलाई.....193

मुनिश्री मानवमित्रजी जिस दिन दिवंगत हुए मैंने एक लक्ष्य बनाया, उसके अनुसार मैंने पद्य रचना प्रारम्भ की। समय की अनुकूलता के साथ कुछ कार्य सम्पादित हुआ। तुलसी जन्म शताब्दी के पावन अवसर पर परमपूज्य परम प्रशान्त परमाराध्य गुरुदेव की पवित्र सन्निधि में रहने का दुर्लभ सौभाग्य हमें उपलब्ध हुआ। संवत् 2070 आश्विन कृष्णा अष्टमी के दिन मुनिश्री को दिवंगत हुए पूरा एक वर्ष हो गया। उस दिन तक मैंने लगभग 175 पद्य बनाकर एक प्रकार से इसकी सम्पन्नता की, और मातृहृदया श्रद्धेया महाश्रमणी जी के कर कमलों में इस कृति को समर्पित किया। साध्वी प्रमुखा श्री जी ने अत्यन्त व्यस्तता के बावजूद आद्योपान्त इसका अवलोकन कर मुझे महनीय मार्गदर्शन प्रदान किया। परिष्कार की दृष्टि पाकर मैंने इसे परिष्कृत करने का प्रयास किया। कुछ पद्य और भी बन गए। श्रद्धेया महाश्रमणी जी ने मेरी छोटी सी अर्ज पर इतना गौर करवाया, मैं धन्यता महसूस कर रही हूँ। कृतज्ञता ज्ञापन के लिए मेरा शब्द कोष अपर्याप्त है। मेरी यही चाह है मैं लेखन के क्षेत्र में गतिशील बनूँ और श्रद्धेया महाश्रमणी जी की महर नजर सतत मेरा पथ आलोकित करती रहे।

संवत् 2050 कार्तिक शुक्ला 11 को आचार्य श्री तुलसी के कर कमलों से वे दीक्षित हुए। उसके बाद वे कहां रहे और कितनी तपस्या की उसका विवरण निम्नांकित है—

संवत्	स्थान	किसके साथ	तपस्या
2051	चाड़वास	मुनिश्री जौहरीमलजी	3 तेले, 12 बेले
2052	छापर चाकरी	मुनिश्री धर्मरुचिजी	2 तेले, 8 बेले एकान्तर पूर्ववत्
2053—54	उदासर	मुनिश्री मगनलालजी	6 तेले, 17 बेले
2055	सरदारशहर	गुरुदेव के सान्निध्य में	3 तेले, 9 बेले
2056	चाड़वास	मुनिश्री जौहरीमलजी	2 तेले, 23 बेले
2057	हनुमानगढ़	मुनिश्री मोहनलालजी (शार्दूल)	1चोला, 2तेले, 12बेले
2058	बीदासर	गुरुदेव के सान्निध्य में	9 तेले 23 बेले

2059	सेवाकेन्द्र छापर	कमलमुनि जी	16 तेले 81 बेले
2060	सेवाकेन्द्र छापर	मुनिश्री रविन्द्र कुमारजी	1चोला, 36तेले,47बेले
2061	सेवाकेन्द्र छापर	मुनिश्री सुव्रत कुमारजी मुनिश्री धर्मेश कुमारजी	3 तेले, 42 बेले
2062	सेवाकेन्द्र लाडनूं	मुनिश्री सुमेरमलजी सुदर्शन मुनिश्री धर्मेशकुमारजी	9तेले, 78बेले
2063	सेवाकेन्द्र लाडनूं	प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी	6विगय वर्जन 62 दिन 5विगय व 5 माह
बैशाख बदी 8 से एकान्तर शुरू			
2064	सेवाकेन्द्र लाडनूं	शासन गौरव मुनिश्री ताराचन्द जी, मुनि श्री सुमति कुमार जी	6तेले, 30 बेले नीबी- 2
2065	सेवाकेन्द्र लाडनूं	प्रो. मुनिश्री महेन्द्र कुमार जी	एकान्तर जारी चैत्र बदी 1 से आषाढ़ सुदी 11 तक 5 बेले आषाढ़ सुदी 11 से बैशाख सुदी 3 तक - 71 बेले, 16 तेले
2066		बैसाख सुदी 3 से सावन बदी अमावस तक एकान्तर आयंबिल आयंबिल में दो चावल 4नीवी 2 बेले उसके बाद की तपस्या अनुपलब्ध है।	

उनको निरंतर तपस्या में संलग्न और सिलाई आदि कार्यो द्वारा संतों का सतत सहयोग करते देख बीदासर मर्यादा महोत्सव प्रवास के दिनों में एक दिन युवाचार्य श्री महाश्रमण जी ने प्रवचन में परिषद के बीच अपने श्रीमुख से फरमाया— “हमारे मुनि मानवमित्रजी लाहा ले रहे है लाहा।”

2051 से 2066 तक की प्राप्त तपस्या के क्रम में 113 तेले हुए। एकान्तर शुरू करने से पूर्व किए गए तेलों की संख्या चालिस थी। 389 बेले इस क्रम से हुए एवं पूर्व में किए गए तेलों की संख्या 125 थी। इस प्रकार उनकी मुख्य तपस्या का आंकड़ा निम्नांकित है—

5	4	3	2
एक तिविहार	चार चौविहार	153	514
चार चौविहार		चौविहार	

उपवास अनगिन।

इस प्रकार मुनिश्री मानवमित्र जी ने त्याग—तपस्या के साथ संयममय जीवन जीते हुए पूर्ण समाधिस्थ अवस्था में मृत्यु का वरण कर अपने जीवन को धन्य बनाया।